● वर्ष-4
● अंक-104
रायपुर, मंगलवार
10 दिसंबर 2024
● पृष्ठ-8
● मूल्य-3 रु.

।। संगच्छध्वम् संवदध्वम् ।।

समाचार पचीसा

राजनीति का जनपक्षकार

पेज-6» गीता में कहा गया है कि शुक्ल पक्ष...

एक देश-एक चुनाव विधेयक पेश कर सकती है सरकार

नई दिल्ली। केंद्र की मोदी सरकार एक देश एक चुनाव को लेकर तैयारियों में जुटी है और मीडिया रिपोर्ट्स में दावा किया जा रहा है कि इसी संसद सत्र में एक देश-एक चुनाव विधेयक पेश किया जा सकता है। विधेयक पर विस्तृत चर्चा के लिए इसे संयुक्त संसदीय समिति के पास भेजने की बात भी कही जा रही है। गौरतलब है कि एक देश, एक चुनाव पर पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद की अध्यक्षता वाली समिति की रिपोर्ट को कैबिनेट से पहले ही मंजूरी मिल चुकी है। एक देश एक चुनाव प्रस्ताव का उद्देश्य देश में एक साथ चुनाव कराना है, जिससे संसाधन, समय और लागत की बचत होगी। अभी राज्यों में अलग-अलग और लोकसभा चुनाव अलग होते हैं। यह एक बड़ी पहल है, जिसे लेकर केंद्र सरकार ने अपनी तैयारियां तेज कर दी हैं। हालांकि केंद्र की इस पहल को विपक्ष के विरोध का सामना करना पड़ रहा है, जिससे साफ है कि केंद्र सरकार को इस विधेयक पर आम सहमति बनाने में काफी चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है।

मीडिया रिपोर्ट्स में कहा जा रहा है कि राजनीतिक पार्टियों में सहमति बनाने के लिए केंद्र सरकार इस विधेयक को संसद में पेश करने के बाद संयुक्त संसदीय समिति के पास भेज सकती है।

संविधान में संशोधन भी करना होगा

एक देश एक चुनाव को हकीकत में बदलने के लिए सरकार को संविधान में भी संशोधन करना होगा, जिसके लिए छह विधेयक दोनों सदनों के दो तिहाई बहुमत से पास होने जरूरी हैं। भाजपा नीत एनडीए का लोकसभा और राज्यसभा में बहुमत है, लेकिन संविधान संशोधन आसान नहीं होगा। विपक्ष एक देश एक चुनाव को व्यवहारिक नहीं मान रहा, साथ ही इसे अलोकतांत्रिक और असंवैधानिक भी बता रहा है। विपक्ष का तर्क है कि पूरे देश में एक साथ चुनाव कराने में रसद और संचालन संबंधी काफी चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा और इससे प्रशासन प्रभावित हो सकता है और संघीय सिद्धांत भी कमजोर हो सकते हैं।

कब तक चीजें मुफ्त बांटी जाएंगी?-सुको

कोर्ट ने पूछा- रोजगार के अवसर क्यों नहीं दिए जा रहे

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने सरकार द्वारा मुफ्त में बांटी जा रहीं चीजों पर चिंता जाहिर की है और सवाल किया है कि आखिर कब तक चीजें ऐसे मुफ्त दी जाती रहेंगी। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि सरकार को रोजगार के अवसर देने पर फोकस करना चाहिए। जस्टिस सूर्यकांत और जस्टिस मनमोहन की पीठ ने यह बात कही। दरअसल पीठ उस समय हैरान रह गई जब केंद्र ने अदालत को बताया कि राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम 2013 के तहत 81 करोड़ लोगों को मुफ्त या रियायती राशन दिया जा रहा है।

क्षमता निर्माण पर फोकस करे सरकार

पीठ ने केंद्र की ओर से पेश सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता और अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल ऐश्वर्या भाटी से कहा, %इसका मतलब है कि केवल करदाता ही इससे वंचित हैं।% दरअसल कोरोना महामारी के दौरान प्रवासी मजदूरों की समस्याओं पर स्वत: संज्ञान लेकर सुप्रीम कोर्ट ने सुनवाई की। एक एनजीओ की तरफ से पेश हुए वरिष्ठ

वकील प्रशांत भूषण ने मांग की कि ई-श्रम पोर्टल पर पंजीकृत सभी प्रवासी श्रमिकों को मुफ्त राशन देने के निर्देश दिए जाने चाहिए। भूषण ने कहा कि अदालत द्वारा समय-समय पर सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को प्रवासी श्रमिकों को राशन कार्ड जारी करने के निर्देश जारी किए गए हैं ताकि वे केंद्र द्वारा प्रदान किए जाने वाले मुफ्त राशन का लाभ उठा सकें।

इस पर पीठ ने कहा, %कब तक मुफ्त में दिया जा सकता है? हम इन प्रवासी श्रमिकों के लिए रोजगार के अवसर, रोजगार और क्षमता निर्माण के लिए काम क्यों नहीं करते? प्रशांत भूषण ने कहा कि यदि जनगणना 2021 में की गई होती, तो प्रवासी श्रमिकों की संख्या में वृद्धि होती, लेकिन केंद्र वर्तमान में 2011 की जनगणना के आंकड़ों पर निर्भर है। इस पर पीठ ने कहा, %हमें केंद्र और राज्यों के बीच विभाजन पैदा नहीं करना चाहिए, वरना यह बहुत मुश्किल होगा।

भिड़े तुषार मेहता और प्रशांत भूषण

सुनवाई के दौरान मेहता और भूषण के बीच कुछ तीखी नोकझोंक भी हुई क्योंकि सॉलिसिटर जनरल ने कहा कि अदालत को %एक आरामकुर्सी एनजीओ द्वारा दिए गए डेटा और आंकड़ों पर भरोसा नहीं करना चाहिए, जो लोगों को राहत प्रदान करने के बजाय शीर्ष अदालत में याचिका का मसौदा तैयार करने और दायर करने में व्यस्त था%। इस पर भूषण ने कहा कि मेहता उनसे नाराज़ थे क्योंकि उन्होंने उनसे संबंधित कुछ ईमेल जारी किए थे, जिसका गलत प्रभाव पड़ा।

मेहता ने पलटवार करते हुए कहा, %मैंने कभी नहीं सोचा था कि वह (भूषण) इतना नीचे गिर जाएंगे।

डीजीपी की नियुक्ति में नियमों के उल्लंघन का मामला, सुप्रीम कोर्ट ने छह राज्यों से मांगा जवाब

सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को एक याचिका पर छह राज्यों से जवाब मांगा। इन राज्यों में आंध्र प्रदेश, तेलंगाना और उत्तर प्रदेश शामिल हैं। याचिका में आरोप लगाया गया है कि इन राज्यों ने पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) की नियुक्ति के संबंध में शीर्ष के निर्देशों का पालन नहीं किया गया। याचिका में कहा गया था कि सात राज्यों आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, उत्तर प्रदेश, पंजाब, उत्तराखंड, पश्चिम बंगाल और झारखंड ने प्रकाश सिंह मामले में सुप्रीम कोर्ट के 2006 के फैसले और बाद में जारी दिशा-निर्देशों का पालन नहीं किया। इस फैसले में पुलिस प्रमुखों की नियुक्ति को पारदर्शी और निष्पक्ष बनाए रखने के उपाय बताए गए थे। झारखंड सरकार पहले ही सुप्रीम कोर्ट में अपना जवाब दाखिल कर चुकी है। यह मामला सुनवाई के लिए चीफ जस्टिस संजीव खन्ना और जस्टिस संजय कुमार की बेंच के सामने आया।

दूरस्थ अंचलों तक गुणवत्तायुक्त स्वास्थ्य सुविधाओं की पहुंच हमारी सबसे महत्वपूर्ण प्राथमिकता- मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री ने सर्व सुविधायुक्त 100 बेड जिला चिकित्सालय का किया उद्घाटन

रायपुर। छत्तीसगढ़ में स्वास्थ्य सेवाओं के सुदृढ़ीकरण और विस्तार के लिए मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व में राज्य सरकार द्वारा निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं। इस दिशा में एक और महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने आज मनेन्द्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर के बड़ा बाजार चिरमिरी में 100 बेड वाले सर्व सुविधायुक्त जिला चिकित्सालय का शुभारंभ किया। मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र जनकपुर में 100 बिस्तरों वाले अस्पताल के सेटअप स्वीकृत करने, भरतपुर में अनुविभागीय अधिकारी पुलिस (एसडीओपी) के पद की स्वीकृति तथा चिरमिरी, खोंगापानी, झगराखंड में ग्रिड से विद्युत सप्लाई की घोषणा की। जिला अस्पताल चिरमिरी

को अत्याधुनिक उपकरणों और सुविधाओं से लैस किया गया है। इस अस्पताल में 08 चिकित्सा विशेषज्ञ नियुक्त हैं तथा 80 प्रकार के लैब टेस्ट की सुविधा उपलब्ध है। अस्पताल में 07 ओपीडी सहित 04 ऑपरेशन थिएटर बनाए गए है। जिनमें 01 ऑपरेशन थिएटर चालू है। इसे मॉड्यूल ऑपरेशन थिएटर के रूप में परिवर्तित करने का प्रस्ताव राज्य शासन को भेजा गया है। इसके साथ ही अस्पताल में 08 बिस्तर वाले आईसीयू की सुविधा भी है। इस अस्पताल के बनने से जरूरतमंद लोगों को उच्च गुणवत्ता की स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध होंगी। मुख्यमंत्री साय ने इस अवसर पर कहा कि स्वास्थ्य के क्षेत्र में बुनियादी ढांचा मजबूत हो इस पर राज्य सरकार का विशेष फोकस है। राज्य में स्वास्थ्य सुविधाओं का विस्तार करना शासन की प्राथमिकता में है ताकि लोगों को आसानी से अच्छी इलाज की सुविधा मिल सके। मुख्यमंत्री ने जिला अस्पताल के विभिन्न वार्डों, कक्षों तथा मरीजों को मिलने वाली सुविधाओं का जायजा लिया, उपस्थित मरीजों से उनके स्वास्थ्य के संबंध में जानकारी ली और उन्हें फल भेंट कर उनके शीघ्र स्वस्थ होने की कामना की। उन्होंने स्वास्थ्य विभाग की टीम को सेवा भाव के साथ कार्य करने की सलाह दी। मुख्यमंत्री के हाथों चिरमिरी में जिला अस्पताल के लोकार्पण पर स्वास्थ्य मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल ने खुशी जाहिर करते हुए कहा कि आज जिले को 100 बिस्तरीय जिला अस्पताल के रूप में एक बड़ी सौगात मिली है।

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय अम्बिकापुर प्रवास के दौरान माता राजमोहिनी देवी ऑडिटोरियम अम्बिकापुर में छत्तीसगढ़ कोलता समाज के संभागस्तरीय सम्मेलन में शामिल हुए। समाज के पदाधिकारियों द्वारा मुख्यमंत्री श्री साय को महामाला एवं संबलपुरी गमछा पहनाकर आत्मीय स्वागत किया गया।

प्रमुख समाचार

आप कब्जा करेंगे और हम बैठकर लॉलीपॉप खाएंगे-ममता

कोलकाता। नई दिल्ली और ढाका के बीच बढ़ते तनाव के बीच, पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने आज मीडिया और राजनीतिक नेताओं से शांत रहने और यह सुनिश्चित करने को कहा कि उत्तेजक टिप्पणियों से सीमावर्ती राज्य में शांति प्रभावित न हो। विधानसभा को संबोधित करते हुए, तृणमूल कांग्रेस प्रमुख ने कहा कि हर कोई पड़ोसी देश में हिंदू अल्पसंख्यकों के खिलाफ अत्याचार को लेकर चिंतित है। उन्होंने कहा कि हिंदू, मुस्लिम, सिख या ईसाई दंगे नहीं भड़काते। असामाजिक तत्व दंगे भड़काते हैं। हमें ऐसी कोई टिप्पणी नहीं करनी चाहिए जिससे बंगाल में खराब स्थिति पैदा हो। ममता बनर्जी ने कहा कि मुझे खुशी है कि यहां हिंदू और मुस्लिम अल्पसंख्यक दोनों बांग्लादेश में अत्याचारों का विरोध कर रहे हैं। यह हमारे धर्मनिरपेक्ष स्वभाव को दर्शाता है। उन्होंने कहा कि अल्पसंख्यक नेता रैली निकालना चाहते हैं। बनर्जी ने कहा कि मैंने उनसे ऐसा नहीं करने के लिए कहा। कई लोग इसे एक अवसर के रूप में उपयोग करते हैं। वे एक और दंगा शुरू कर देंगे। हम दंगे नहीं चाहते, हम शांति चाहते हैं।

विदेश सचिव का बांग्लादेश अल्पसंख्यकों का मुद्दा उठाया

नई दिल्ली। भारतीय विदेश सचिव विक्रम मिस्री ने ढाका में बांग्लादेश के विदेश सलाहकार मोहम्मद तौहीद हुसैन से मुलाकात की और देश में अल्पसंख्यकों की सुरक्षा और कल्याण सहित कई प्रमुख मुद्दे उठाए। बैठक के बाद मीडिया से बात करते हुए, मिस्री ने कहा कि उनकी चर्चा हाल के घटनाक्रमों पर केंद्रित थी, जिसमें सांस्कृतिक और धार्मिक स्थलों पर हमलों से जुड़ी घटनाएं भी शामिल थीं। विदेश सचिव विक्रम मिस्री ने कहा कि आज की चर्चाओं ने हम दोनों को (भारत-बांग्लादेश) संबंधों का जायजा लेने का अवसर दिया है। मैं अपने सभी वार्ताकारों के साथ स्पष्ट और रचनात्मक चर्चाओं की सराहना करता हूं। भारत बांग्लादेश के साथ सकारात्मक, रचनात्मक और पारस्परिक रूप से लाभकारी संबंध चाहता है।मिस्री ने कहा कि चर्चा से भारत और बांग्लादेश दोनों को द्विपक्षीय संबंधों का जायजा लेने का मौका मिला है। उन्होंने अपने सभी वार्ताकारों के साथ विचारों के स्पष्ट, स्पष्ट और रचनात्मक आदान-प्रदान के अवसर की भी सराहना की।

बीकानेर के संजय मल्होत्रा संभालेंगे आरबीआई की कमान

राजस्थान। राजस्थान कैडर के आईएएस संजय मल्होत्रा को केंद्रीय कैबिनेट कमेटी ने भारतीय रिजर्व बैंक का गवर्नर नियुक्त कर दिया है। संजय मल्होत्रा राजस्थान कैडर के आईएएस होने के साथ राजस्थान के ही रहने वाले भी हैं। उनका होम टाउन बीकानेर है। राजस्थान से वे जनवरी 2020 में प्रतिनियुक्ति पर केंद्र में चले गए थे। यहां पहले ऊर्जा मंत्रालय में अतिरिक्त सचिव के पद पर तैनाती मिली। इसके बाद उनकी एंट्री सीधे वित्त मंत्रालय में हो गई। यहां वे राजस्व विभाग में सचिव के पद पर अपनी सेवाएं दे रहे थे। संजय मल्होत्रा 1990 बैच के आईएएस हैं और वरिष्ठता में राजस्थान के मौजूद आईएएस अफसरों में चौथे नंबर पर आते हैं। सुधांश पंत से पहले राजस्थान में संजय मल्होत्रा का नाम ही चीफ सेक्रेट्री के लिए चर्चाओं में था, लेकिन जानकारी के मुताबिक केंद्र सरकार उनके टैलेंट को देखते हुए उन्हें वापस राजस्थान नहीं भेजना चाहती थी। संजय मल्होत्रा की सेवानिवृत्ति में भी अभी 2 साल से ज्यादा का समय शेष है।

साल 2019 से केंद्र ने वक्फ बोर्ड को नहीं दी जमीन

नई दिल्ली। केंद्र सरकार ने साल 2019 से वक्फ बोर्ड को कोई जमीन नहीं दी है। केंद्रीय आवास एवं शहरी मामलों के मंत्रालय ने सोमवार को राज्यसभा ये जानकारी दी। राज्यमंत्री तोखन साहू ने एक सवाल के लिखित जवाब में बताया कि जमीन राज्य का विषय है और केंद्र सरकार के पास राज्य सरकारों द्वारा दी गई जमीन का कोई डेटा उपलब्ध नहीं है। उन्होंने कहा कि जहां तक केंद्र सरकार का सवाल है तो केंद्र के अंतर्गत आने वाले आवास एवं शहरी मामलों के मंत्रालय ने 2019 से कोई जमीन वक्फ बोर्ड को नहीं दी है। गौरतलब है कि सरकार ने अगस्त में संसद में वक्फ संशोधन विधेयक पेश किया है, जिसे विपक्ष के विरोध के बाद गहन चर्चा के लिए संयुक्त संसदीय समिति के पास भेज दिया गया है। सरकार का कहना है कि प्रस्तावित कानून का उद्देश्य मस्जिदों के कामकाज में हस्तक्षेप करना नहीं है, लेकिन विपक्ष इसे केंद्र द्वारा अल्पसंख्यक समुदाय को निशाना बनाने और संविधान पर हमले के रूप में प्रचारित कर रहा है।

धर्मेंद्र प्रधान ने राहुल गांधी को बताया कॉमेडी किंग

नई दिल्ली। केंद्रीय मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने सोमवार को संसद परिसर में विपक्षी सदस्यों के विरोध प्रदर्शन को लेकर कांग्रेस नेता राहुल गांधी पर कटाक्ष किया। धर्मेंद्र प्रधान ने तंज कसते हुए राहुल गांधी को कॉमेडी किंग करार दिया। आपको बता दें कि कुछ इंडिया ब्लॉक पार्टियों के नेताओं ने सोमवार को अडानी विवाद को लेकर संसद परिसर में विरोध प्रदर्शन किया, जिसमें गांधी ने इस मुद्दे पर एक नकली साक्षात्कार आयोजित किया। इस दौरान कांग्रेस सदस्यों ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उद्योगपति गौतम अडानी के मुखौटे पहने हुए थे। धर्मेंद्र प्रधान ने एक्स पर लिखा कि राहुल गांधी वही कर रहे हैं जो वह सबसे अच्छा करते हैं-स्टैंड-अप कॉमेडी! उनके दुर्भावनापूर्ण दावे और प्रलाप हर बार व्यापक जांच के बोझ तले दब गए हैं। एक मोहरे की भूमिका बखूबी निभाते हुए, वह एक बार फिर गुमराह करने का प्रयास करता है, बावजूद इसके कि उसका गलत सूचना अभियान भारत के लोगों को प्रभावित करने में विफल रहा है। उन्होंने आगे लिखा कि 2014 के बाद से चुनावी नतीजे इस बात का जोरदार प्रमाण हैं कि उनके बासी, पुनर्चक्रित प्रचार को स्वीकार करने वाला कोई नहीं है।

संसद डायरी

जॉर्ज सोरोस और अदाणी मुद्दे पर हंगामा, दोनों सदनों की कार्यवाही स्थगित

विपक्ष के सदस्यों के विरोध के बाद संसद के दोनों सदनों की कार्यवाही सोमवार को दिन भर के लिए स्थगित कर दी गई। विपक्षी सदस्यों का दावा है ??कि विभिन्न मुद्दों पर चर्चा के उनके अनुरोध को सत्ता पक्ष द्वारा नजरअंदाज किया जा रहा है। इनमें दिल्ली में किसानों का विरोध प्रदर्शन और मणिपुर में चल रहा संघर्ष शामिल है। वहीं, दूसरी ओर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने वरिष्ठ कांग्रेस नेता सोनिया गांधी के फोरम ऑफ डेमोक्रेटिक लीडर्स इन एशिया पैसिफिक (एफडीएल-एपी) फाउंडेशन के जॉर्ज सोरोस फाउंडेशन के साथ कथित संबंध के बारे में दावा किया है।

कांग्रेस और समाजवादी पार्टी समेत कुछ विपक्षी दलों के सदस्यों ने अदाणी समूह से जुड़े मामले तथा कुछ अन्य मुद्दों को लेकर सोमवार को लोकसभा में हंगामा किया जिसके कारण सदन की कार्यवाही तीन बार के स्थगन के बाद मंगलवार पूर्वाह्न 11 बजे तक स्थगित करनी पड़ी। पिछले कुछ दिनों से लोकसभा में निरंतर गतिरोध बना हुआ है। सोमवार को सदन की बैठक पहले दोपहर 12 बजे तक स्थगित की गई। इसके बाद कार्यवाही अपराह्न दो बजे और फिर तीन बजे तक के लिए स्थगित करनी पड़ी।

वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) अधिकारियों ने अप्रैल से अक्टूबर महीने के बीच 17,818 फर्जी प्रतिष्ठानों की 35,132 करोड़ रुपये की आयकर चोरी के मामलों का पता लगाया है और 69 लोगों को गिरफ्तार किया है। सरकार ने सोमवार को संसद को यह जानकारी दी। वित्त राज्य मंत्री पंकज चौधरी ने लोकसभा में एक प्रश्न के लिखित उत्तर में कहा कि केंद्र और राज्य प्राधिकरणों द्वारा डेटा एनालिटिक्स और अन्य खुफिया जानकारी के माध्यम से फर्जी कंपनियों का पता लगाने के लिए नियमित कार्रवाई की जाती है।

राज्यसभा की कार्यवाही

राज्यसभा में सोमवार को सत्ता पक्ष एवं विपक्ष ने अलग-अलग मुद्दों पर भारी हंगामा किया जिसके कारण उच्च सदन की कार्यवाही तीन बार के स्थगन के बाद अपराह्न करीब तीन बजकर दस मिनट पर पूरे दिन के लिए स्थगित कर दी गयी। सत्तारूढ़ राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) के सदस्यों ने कांग्रेस तथा उसके नेताओं पर विदेशी संगठनों और लोगों के माध्यम से देश की सरकार तथा अर्थव्यवस्था को अस्थिर करने की कोशिश का आरोप लगाया और इस मुद्दे पर चर्चा कराने की मांग की। वहीं कांग्रेस के नेतृत्व में विपक्ष ने अदाणी समूह से जुड़ा मुद्दा उठाते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और सरकार के खिलाफ नारेबाजी की।

वहीं, सत्ता पक्ष का आरोप था कि कांग्रेस के लोग किस प्रकार से बहुराष्ट्रीय कंपनियों और अमेरिकी उद्योगपति जॉर्ज सोरोस की मदद से अंतरराष्ट्रीय एजेंसियों के एजेंट बनकर इस देश में विखंडन पैदा करना चाहते हैं। इस दौरान राजग के सदस्य हंगामा कर रहे थे। जनता दल (यूनाईटेड) के संजय झा ने कहा कि ऐसी रिपोर्ट आई है कि कांग्रेस के एक वरिष्ठ नेता का जॉर्ज सोरोस से संबंध है। झा ने कहा कि बांग्लादेश में जो कुछ हुआ, उसमें भी सोरोस की भूमिका है।

नेता सदन जे पी नड्डा ने कहा कि जिस तरह से घटनाएं घटी हैं और जिस तरह से चर्चाएं हो रही हैं, वह 'हमारे सदस्यों को बहुत उद्वेलित कर रही हैं।' नड्डा ने कहा कि देश की सुरक्षा बहुत महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि खबरें आ रही हैं कि 'फोरम ऑफ डेमोक्रेटिक लीडर्स इन एशिया पैसेफिक' का संबंध जिस प्रकार से जार्ज सोरोस के साथ सामने आता है, जो बहुत चिंताजनक है और 'जिसकी सह अध्यक्षा हमारे ही सदन की एक वरिष्ठ सदस्य हैं।' उन्होंने कहा कि कांग्रेस के वरिष्ठतम नेता विदेश में जाते हैं और वहां भी वही बोलते हैं जिसे जार्ज सोरोस प्रचारित करता है। उन्होंने कहा, 'जार्ज सोरोस के कोष से चलने वाले फोरम या फाउंडेशन जिस बात का प्रचार करते हैं, उनको कांग्रेस का वरिष्ठ नेता उठाता है और देश को अस्थिर करने के लिए उन बातों को दोहराता है' ' इसके बाद सभापति धनखड़ ने विपक्ष के नेता खरगे को बोलने का मौका दिया।

जगदीप धनखड़ के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव लाने की तैयारी

विपक्षी इंडिया गठबंधन उच्च सदन में विपक्षी सांसदों के साथ उनके लगातार टकराव का हवाला देते हुए, राज्यसभा के सभापति और उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव लाने के लिए तैयार है। सूत्रों के मुताबिक, इस प्रस्ताव पर पहले ही ब्लॉक के विभिन्न दलों के 70 सांसदों के हस्ताक्षर हो चुके हैं। कांग्रेस, तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी), आम आदमी पार्टी (आप), समाजवादी पार्टी (एसपी) और अन्य इंडिया ब्लॉक के सदस्य कथित तौर पर प्रस्ताव के साथ आगे बढ़ने के अपने फैसले में एकजुट हैं। इंडिया ब्लॉक के सांसद अक्सर राज्यसभा सभापति पर उच्च सदन में सत्तारूढ़ सदस्यों के प्रति पक्षपाती होने का आरोप लगाते रहे हैं।

गुलाब कमरो और रेणुका के बीच जुबानी जंग तेज

■ लापता और काल्पनिक पर वार पलटवार

मनेन्द्रगढ़ चिरमिरी भरतपुर। भरतपुर सोनहत विधानसभा क्षेत्र में बीजेपी और कांग्रेस के बीच जुबानी जंग तेज हो चुकी है। गुलाब कमरो के बयान पर विधायक रेणुका सिंह ने पलटवार किया है। आपको बता दें कि गुलाब कमरो ने रेणुका सिंह को लापता और काल्पनिक विधायक करार दिया था। वहीं विधायक रेणुका सिंह ने भी पलटवार करते हुए गुलाब कमरो को बच्चा बुद्धि कहकर पलटवार किया।

बीजेपी विधायक रेणुका सिंह ने कांग्रेस सरकार और पूर्व विधायक गुलाब कमरो पर हमला बोला।गुलाब कमरो ने कहा कि जब भूपेश बघेल की सरकार थी और गुलाब कमरो विधायक थे, तो उन्होंने कौन-सा ऐसा अच्छा काम किया कि जनता ने उन्हें लापता कर दिया?। अपने कार्यों का जिक्र करते हुए रेणुका सिंह ने कहा कि मैंने अंबिकापुर से दिल्ली तक ट्रेन चला। ये काम आज तक किसी सांसद या नेता ने नहीं किया। मैंने सरगुजा संभाग में भारतीय डाकघर का छठवां केंद्र स्थापित करवाया। सूरजपुर में सेंट्रल स्कूल का प्रस्ताव भी मेरे प्रयासों से पारित हुआ, लेकिन बलरामपुर में यह कांग्रेस विधायक की वजह से अटक गया। मेरा वादा है कि भरतपुर-चांग पखार को जिला बनाना और कठौतिया से मध्य प्रदेश के सीधी तक रेल लाइन बिछाना मेरी प्राथमिकता में शामिल है।

भाजपा विधायक रेणुका सिंह ने कहा जो मुझे लापता कह रहे हैं, जनता ने खुद उन्हें लापता कर दिया है।उनके बयानों में परिपक्वता की कमी है। ऐसे बयान ना तो संस्कृति का हिस्सा हैं और ना ही राजनीति में कोई स्थान रखते हैं।

वहीं बयानों पर पूर्व कांग्रेस विधायक गुलाब कमरों ने कहा कि रेणुका सिंह के समर्थक सीएम का नाम लेकर झूठे वादों के आधार पर वोट मांगते हैं। मैंने कभी उनका अपमान नहीं किया और हमेशा सम्मान दिया है। लेकिन इस तरह की बयानबाजी एक छोटे भाई के लिए अनुचित है।अगर मेरी राजनीति समाप्त करने से उन्हें खुशी मिलती है, तो मैं तैयार हूं। लेकिन मैं इन गीदड़ धमकियों से डरने वाला नहीं हूं। मैंने अपनी सच्चाई जनता के सामने रखी है और हमेशा रखूंगा।

निकाय चुनाव से पहले एक बार फिर गुलाब कमरो और रेणुका सिंह के बीच जुबानी जंग तेज हुई है। ऐसे में देखना होगा कि गुलाब कमरो इस बार अपनी बातों से जनता का मन जीत पाते हैं या फिर निकाय चुनाव में भी बीजेपी अपना परचम लहराने में कामयाब रहती है।

प्राचार्य और शिक्षक के खिलाफ लामबंद हुए स्टूडेंट्स

कलेक्टोरेट पहुंचकर बताई पीड़ा, कहा- मानसिक प्रताड़ना दे रहा स्टॉफ

गरियाबंद। आदिवासी ब्लॉक मैनपुर मुख्यालय का हायर सेकेंडरी स्कूल अखाड़ा में तब्दील हो गया है। यहां हायर सेकेंडरी पढ़ने वाले 50 से भी ज्यादा छात्र-छात्राएं सोमवार को कलेक्टोरेट पहुंचे और कलेक्टर दीपक अग्रवाल से मुलाकात कर ज्ञापन सौंपा। शाला नायिका अंजली ठाकुर के नेतृत्व में छात्रों ने ज्ञापन दिया है, जिसमें प्रिंसिपल माधुरी नागेश, शिक्षिका लक्ष्मी देवांगन, खुशबुरानी साहू, शिक्षक महेश साहू पर कई गंभीर आरोप लगाते हुए कार्रवाई की मांग की गई है।

छात्रों ने शिक्षकों के नामवार आरोपों का ब्यौरा दिया है, जिसमें कौन क्या कहकर प्रताड़ित करता है उसका उल्लेख है। शिकायत के मुताबिक, उपरोक्त स्टाफ द्वारा प्रैक्टिकल में अंक कम करने, पालकों को कॉल कर छात्रों के खिलाफ झूठी शिकायत, निराधार आरोपों पर बेवजह नोटिस थमाने के अलावा शिक्षिकाओं द्वारा बालक छात्रों को उनके गर्ल फ्रेंड और छात्राओं को बायफ्रेंड का नाम तक पूछने जैसे संगीन आरोप लगाया गया है। छात्रों ने कहा है कि 12 दिसंबर तक अगर पूर्व प्राचार्य हरिनारायण सिंह को वापस पद में नहीं भेजते हैं, उन पर लगाए निराधार आरोपों की जांच नहीं करते हैं तो छात्र अर्धवार्षिक परीक्षा का विरोध कर आंदोलन करेंगे।

छात्रों ने बताया कि 1998 में पदस्थ व्याख्याता हरिनारायण सिंह रसायन शास्त्र पढ़ाते थे। सबसे सीनियर होने के साथ ही उन्हें बालक व पालक सबसे उत्कृष्ट होने का दावा कर रहे है। कहा जाता है कि स्कूल में दो पावर फूल शिक्षिका है, जिनका दखल प्रशासन में है। एक गरियाबंद से तो दूसरी राजिम से आना-जाना करती है। अध्यापन प्रभावित होता देख तत्कालीन प्राचार्य द्वारा इनके खिलाफ कार्यवाही करते थे। परीक्षा ड्यूटी में लापरवाही को लेकर भी तीसरी शिक्षिका पर कार्यवाही हुई थी। छात्रों का आरोप है कि उक्त तीनों द्वारा मनगढ़ंत आरोप लगाकर तत्कालीन प्राचार्य के खिलाफ 18 बिंदु में शिकायत हुई, जिसकी जांच किए बगैर उन्हें जिला अधिकारियों ने एक तरफा हटा दिया। वर्तमान में प्राचार्य का चार्ज माधुरी नागेश के पास है।

इस मामले में अपर कलेक्टर अरविंद पांडेय ने कहा कि छात्रों से मिली शिकायत के आधार पर जांच टीम गठित की गई है। तीन दिवस के भीतर जांच कर प्रतिवेदन चाही गई है। जांच प्रतिवेदन के आधार पर कार्रवाई की जाएगी।

बालिका आश्रम में बड़ी लापरवाही

खाने में मिली छिपकली, 27 बच्चों की बिगड़ी तबीयत

बीजापुर। बीजापुर के माता रुक्मिणी धनोरा बालिका आश्रम में बड़ी लापरवाही सामने आई है। यहां बच्चों को परोसे जाने वाले खाने में छिपकली मिली है। देर रात खाने के बाद बच्चों की तबीयत बिगड़ने लगी। रात्रि भोजन के बाद 27 बच्चे फूड पॉइजनिंग का शिकार हो गए। जिसके बाद आनन-फानन में बच्चों को जिला अस्पताल भर्ती कराया गया है। कुछ बच्चों का आईसीयू में इलाज जारी है।

जानकारी के मुताबिक, बच्चों ने जिस खाने का सेवन किया उसमें चिपकली गिरी हुई थी। इसके बावजूद आश्रम के स्टाफ ने उसी भोजन को बच्चों को परोसा था। जिससे बच्चे बीमार पड़ गए। मामले में बीजापुर सीएमएचओ डॉ. बीआर पुजारी ने कहा कि माता रुक्मिणी धनोरा के बच्चे है, जिन्हें देर रात भोजन करने के बाद उल्टी-दस्त, बुखार आने लगा। जिसके बाद हमारी टीम आश्रम पहुंची और 27 बच्चों को बीजापुर जिला अस्पताल लाया गया है। बच्चों का अस्पताल में इलाज जारी है।

मंडल संयोजक भूपति नक्का ने कहा मेनू के अनुसार अण्डा, चिकन देने का था, लेकिन मेडम ने खाने में खीर और पनीर परोसा दिया। मुझे एक महीना हुआ है पद जॉइन किये हुए, मैं आश्रमों में विजिट कर रहा हूं। फूड पॉइजनिंग बीमारी की बात सामने आ रही है। लापरवाही तो हुई है।

धान उपार्जन केंद्र में लगी भीषण आग

सारंगढ़। छत्तीसगढ़ के सारंगढ़ मे बीती रात बोहराबहाल धान उपार्जन केन्द्र के कार्यालय में भीषण आग लग गई, जिससे कार्यालय जलकर खाक हो गया। बोहराबहाल में झोपड़ी बनाकर कार्यालय का संचालन किया जा रहा था। जहां रविवार रात 1 बजे आग लगने से करीब 10 हजार बारदाना, कंप्यूटर सेट, इलेक्ट्रॉनिक कांटा, मोटरसाइकिल समेत अन्य कई कीमती सामान जलकर राख हो गए। आग लगने के कारणों का अभी तक पता नहीं चल पाया है, लेकिन यह हादसा यह साबित करता है कि धान खरीदी के केंद्रों में सुरक्षा व्यवस्थाओं का अभाव है।

स्थानीय लोगों का कहना है कि धान उपार्जन केंद्रों में महज दिखावे के लिए तैयारियां की जाती हैं, जबकि सामान्य दुर्घटनाओं से निपटने के लिए कोई ठोस व्यवस्था नहीं है। इस हादसे ने यह भी सवाल खड़ा किया है कि करोड़ों रुपये का धान बिना किसी सुरक्षा के खुले आसमान के नीचे रखा हुआ है, जो बड़ी क्षति का कारण बन सकता है।

पुलिस ने गुम हुए मोबाइल फोन बरामद कर मालिकों को सौंपा

गरियाबंद। जिले की पुलिस ने साइबर सेल की मदद से 33 गुम हुए मोबाइल बरामद कर उनके वास्तविक मालिकों को सौंपकर सराहनीय कार्य किया है। इस पहल ने आम नागरिकों के चेहरों पर खुशी लौटा दी है। इसके साथ ही पुलिस ने नागरिकों से अपील की है कि यदि किसी का मोबाइल फोन गुम हो जाए, तो उसकी सूचना तुरंत साइबर सेल गरियाबंद को दें, जिससे मोबाइल को जल्द से जल्द बरामद किया जा सके।

इसके साथ ही गरियाबंद पुलिस अधीक्षक ने कॉप ऑफ द मंथ अवार्ड के तहत नवंबर महीने में सराहनीय कार्य करने वाले पुलिसकर्मियों को सम्मानित किया।

इन पुलिसकर्मियों को मिला सम्मान

सहायक उप निरीक्षक संजय तिवारी और महिला आरक्षक पिंकी ध्रुव: इन्होंने 5 साल से गुम एक नाबालिग लड़की को कर्नाटक-आंध्र प्रदेश बॉर्डर से सकुशल बरामद कर उसकी मां को सौंपा।

प्र.आर. धनुष निषाद और आरक्षक रिजवान कुरैशी: छुरा थाना क्षेत्र में हुई हत्या के मामले में आरोपी को गिरफ्तार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

आरक्षक तरुण यादव और आरक्षक 344 : इन्होंने 33 गुम मोबाइल फोन और साइबर फ्रॉड के जरिए हुए होल्ड अमाउंट को वापस करवाने में योगदान दिया।

पूर्व सरपंच की हत्या करने वाला इनामी नक्सली गिरफ्तार

72 घंटों में सन्नू कोरसा को पुलिस ने दबोचा

बीजापुर। बीजापुर के नैमेड़ थाना क्षेत्र में पूर्व सरपंच की नक्सली ने हत्या की थी। जिसके बाद इलाके में दहशत का माहौल था। इस केस में पुलिस ने आरोपी नक्सली को साथी समेत गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी नक्सली पर एक लाख का इनाम घोषित था।

बीजापुर जिले में चलाए जा रहे नक्सल विरोधी अभियान के तहत डीआरजी बीजापुर और थाना नैमेड़ की संयुक्त टीम मोसला- दूरधा जंगल की ओर एरिया डॉमिनेशन के लिए निकली थी। अभियान के दौरान सूचना के आधार पर मोसला- दूरधा के जंगल से कडेर के पूर्व सरपंच सुखराम अवलम की हत्या में शामिल नक्सली को अरेस्ट किया गया। नक्सली का नाम सन्नू कोरसा उर्फ गुट्टा है।जिस पर एक लाख का इनाम घोषित है। गुट्टा के साथ जनमिलिशिया प्लाटून डिप्टी कमाण्डर पण्डरू उरसा को भी पकड़ा गया ।

पकड़े गए नक्सली से घटना में शामिल अन्य नक्सलियों के बारे में भी जानकारी इकट्ठा की गई है। जिनकी तलाश की जा रही है।पकड़े गए नक्सलियों के विरूद्ध थाना नैमेड़ में कार्रवाई के बाद बीजापुर अदालत में पेश किया गया। एएसपी चंद्रकांत गोवर्ना ने बताया इनामी नक्सली के साथियों के साथ मोसला और दूरधा के जंगलों में मौजूद होने की सूचना मिली थी। जिस पर डीआरजी बीजापुर और जिला पुलिस नैमेड़ की बल रवाना हुई। घेराबंदी कर इनामी नक्सली को एक साथी समेत दबोचा गया।जो नैमेड़ में पूर्व सरपंच की हत्या में शामिल था।

आपको बता दें कि कडेर के पूर्व सरपंच सुखराम अवलम का शव गुरुवार सुबह सड़क पर मिला था। शव के पास गंगलूर एरिया कमेटी के पर्चे भी मिले हैं।बुधवार को सुखराम अवलम का अपहरण मुर्गा बाजार से किया गया था। जिसकी हत्या के बाद शव सड़क पर फेंका गया था।

छत्तीसगढ़ प्रमुख समाचार

प्रयास आवासीय विद्यालय की छात्रा तीसरी मंजिल से गिरी

कांकेर। कांकेर जिला मुख्यालय के प्रयास आवासीय विद्यालय में बड़ी घटना हुई है। यहां प्रयास आवासीय विद्यालय की तीसरी मंजिल से एक छात्रा गिर गई। जिसे जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया। जहां से प्राथमिक उपचार के बाद छात्रा को हायर सेंटर रेफर किया है। इस बारे में सहायक आयुक्त जया मानु ने जानकारी दी है कि छात्रा के सिर और पैर में गंभीर चोट आई है। छात्रा छत से कैसे गिरी अब तक इसकी जानकारी उपलब्ध नहीं हुई है। जया मानु ने कहा ग्यारहवीं कक्षा की छात्रा तबीयत खराब होने की वजह से स्कूल नहीं गई थी। सुबह करीब साढ़े 9 बजे छात्रा छत पर थी। साफ सफाई के लिए छत का दरवाजा खोला गया था। हमेशा वो बंद रहता है। तभी अचानक छात्रा नीचे गिरी, जिसे वहां काम कर रहे मजदूरों ने देखा। इसके बाद स्कूल प्रबंधन को सूचना दी। आनन फानन में उसे जिला अस्पताल लाया गया। जहां गंभीर चोट को देखते हुए उसे प्राथमिक उपचार के बाद रायपुर रेफर किया गया है। शुरुआती जानकारी के मुताबिक छात्रा का पैर फिसलने से हादसा हुआ है।

महाविद्यालय में मशरूम उत्पादन पर सफल प्रयोग

गौरेला पेंड्रा मरवाही। पेंड्रा क्षेत्र का वर्तमान तापमान ओएस्टर मशरूम उत्पादन के लिए बेहद अनुकूल है। इसे ध्यान में रखते हुए महंत बिसाहू दास उद्यानिकी महाविद्यालय जीपीएम के प्रथम वर्ष के छात्र-छात्राओं ने मशरूम उत्पादन के क्षेत्र में एक उल्लेखनीय प्रयास किया है। महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. नारायण साहू के मार्गदर्शन और विषय अध्यापिका डॉ. चेतना जांगड़े के सहयोग से मशरूम उत्पादन का सफल प्रयोग किया गया। सर्वप्रथम छात्रों ने ओएस्टर मशरूम (मशरूम का एक प्रमुख प्रकार) की खेती की, जिसमें सफेद और गुलाबी आयस्टर मशरूम की किस्मों का चयन किया गया। छात्रों ने धान के भूसे का उपयोग करके मशरूम के बैग तैयार किए। मशरूम उत्पादन के लिए सबसे पहले बैग भरने से एक दिन पहले ओएस्टर मशरूम के बीजों को गर्म पानी और फार्मलिन प्लस बाविस्टीन से निर्जर्मीकरण किया गया। प्राप्त जानकारी के अनुसार ओएस्टर मशरूम का जीवन चक्र लगभग 25 से 30 दिन का होता है और इसका आदर्श तापमान 23 से 25 डिग्री सेंटीग्रेड होता है।

मधुमक्खियों के झुंड ने मजदूरों पर किया हमला

कोरबा। कोरबा में दादर खुर्द तिवारी चाल के समीप उस वक्त अफरा तफरी मच गई, जब विचलित मधुमक्खियों ने आने जाने वालों पर हमला कर दिया। मधुमक्खियों के हमले से खुद को बचाने लोग इधर उधर भागने लगे। करीब 15 मिनट बाद मधुमक्खियों के शांत होने पर लोगों ने राहत की सांस ली। हालांकि घटनाक्रम में करने जा रहे मजदूरों पर हमला कर दिया इस घटना में 6 लोग से अधिक लोग घायल हो गई दो की हालत गंभीर बनी हुई है। उन्हें इलाज के लिए मेडिकल कॉलेज अस्पताल दाखिल कराया गया। सोमवार की दोपहर करीब एक बजे की है। दरअसल मूलत: जशपुर निवासी बीरसाय अपने साथी द्वारिका प्रसाद के साथ दादर खुर्द में किराए के मकान पर निवास करता है। वे दोनों रोजी मजदूरी का काम करते हैं। उन्हें राकेश नामक ठेकेदार ने गड्ढा खुदाई का काम दिया था। जिसके लिए दोनों मजदूर जगह देखने जा रहे थे। वे तिवारी चाल के समीप पहुंचे थे। इसी दौरान लोग दौड़ते भागते नजर आए। बीर सिंह और द्वारिका कुछ समझ पाते, इससे पहले ही मधुमक्खियों ने हमला कर दिया।

वन रक्षक भर्ती के लिए दौड़ रहा अभ्यर्थी बेहोश होकर गिरा

कांकेर। कांकेर में वन रक्षक भर्ती में शामिल होने आए युवक दौड़ते वक्त अचानक बेहोश हो गया। आनन-फानन में युवक को जिला अस्पताल लेजाया गया जहां डॉक्टरों की टीम ने युवक को मृत घोषित कर दिया है। कांकेर नगर में सोमवार को नगर सैनिक ग्राउंड में वन रक्षक भर्ती के लिए फिजिकल टेस्ट हो रहा था जहां जिले भर से अभ्यर्थी फिजिकल टेस्ट देने के लिए नगर सैनिक ग्राउंड पहुंचे हुए थे इसी दौरान नरहरपुर कसवाही गांव से पहुंचे अभ्यर्थी महेंद्र कुमार सुबह 8 बजे 200 मीटर दौड़ करने फिजिकल टेस्ट देने मैदान में उतारा। इसी दौरान 50 मीटर दौड़ने के बाद युवक अचानक बेहोश हो गया जिसे जिला अस्पताल लाया गया जिसे डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया। कांकेर टीआई मनीष नागर ने बताया कि सुबह सूचना मिली ही नगर सैनिक ग्राउंड में एक युवक वन रक्षक भर्ती के लिए फिजिकल टेस्ट के दौरान मौत हो गई है मर्ग कायम कर जांच जी जा रही है। युवक की मौत का कारण अज्ञात है पोस्टमार्टम के बाद मौत का कारण स्पष्ट होगा।

पिकनिक मनाकर लौट रहा पिकअप दुर्घटना का शिकार

कोरबा। छत्तीसगढ़ का कोरबा जिला दो भीषण हादसों से दहल उठा है। पहला मामला कटघोरा थाना अंतर्गत जटगा चौकी के ग्राम घुमानीडांड़ के हरमोड का है। जहां तेज रफ्तार पिकअप अनियंत्रित होकर पलट गई। इस हादसे में एक साल साल की मासूम की बच्ची मौत हो गई है। तो वहीं 25 लोग घायल हो गए। साथ की हालत बेहद गंभीर बनी हुई है। बताया जा रहा है कि बनखेता ग्राम पंचायत के कांसामार के लोग पिकअप में सवार होकर बुका पिकनिक मनाने गए हुए थे। रविवार की रात पिकनिक मनाकर वापस लौट रहे थे। इस दौरान बजटगा चौकी के ग्राम घुमानीडांड़ के हरमोड मोड़ के पास पिकअप अनियंत्रित होकर पलट गई। जहां इस घटना के बाद हड़कंप मच गया। राहगीरों की भीड़ वाहन में फंसे लोगों को बाहर से निकालने में जुट गई। वहीं दूसरा मामला भी कोरबा का है। एनएच130 कटघोरा से अम्बिकापुर में मार्ग पर दर्दनाक सड़क हादसा हो गया। घटना देर रात की है। जहां ट्रक ने बाइक सवार को रौंद डाला। मौके पर एक की मौत हो गई। दो की हालत गंभीर बनी हुई है।

रामानुजगंज में लग्जरी गाड़ी से लकड़ी की तस्करी

रामानुजगंज और विजयनगर पुलिस का लकड़ी तस्करों पर ज्वाइंट एक्शन

बलरामपुर। रामानुजगंज में आए दिन इमारती लकड़ी तस्करों पर पुलिस कार्रवाई करती है। रविवार को पुलिस ने एक बार फिर लकड़ी तस्करों पर कार्रवाई की। इस बार तस्कर कार से इमारती लकड़ी ढो रहे थे।

लग्जरी कार में इमारती लकड़ी तस्करी कर रहे युवक को रामानुजगंज पुलिस ने गिरफ्तार किया है। पुलिस ने उसके पास से करीब एक लाख की इमारती लकड़ी जब्त की। पुलिस ने इनोवा गाड़ी अपने कब्जे में लिया है। बताया जा रहा है कि आरोपी छतवा से इमारती लकड़ी की तस्करी कर कार में लेकर जा रहा था।

रामानुजगंज थाना प्रभारी रमाकांत तिवारी ने जानकारी देते हुए बताया कि बीती रात विजयनगर चौकी को मुखबिर से सूचना मिली कि एक सफेद रंग की कार में इमारती लकड़ी को लेकर जाया जा रहा है। इस सूचना पर विजयनगर चौकी और थाना रामानुजगंज की संयुक्त टीम ने अलग अलग चेक पोस्ट पर नाकेबंदी कर आरोपी को पकड़ा।पुलिस की टीम ने मुस्तैदी से पीछा करते हुए आरोपी को पकड़ा और लकड़ी सहित इनोवा कार सीजी 12 5216 को थाने लेकर आई।

रमाकांत तिवारी ने बताया कार में सवार एक आरोपी को पकड़ा गया। गाड़ी में लोड 12 साल की लकड़ियां जब्त की गई। जब्त लकड़ी की कीमत लगभग एक लाख रुपये आंकी गई है।

रामानुजगंज और विजयनगर पुलिस की संयुक्त टीम जब आरोपी को नाकेबंदी कर पकड़ने की कोशिश कर रही थी तो आरोपी तेज रफ्तार से भागने लगा। इस दौरान उसने एक गाड़ी को भी टक्कर मार दी। लेकिन पुलिस ने मुस्तैदी दिखाते हुए आरोपी को गिरफ्तार कर लिया। आगे की कार्रवाई की जा रही है।

जीपीएम में ठंड का सितम, वाहनों की थमी रफ्तार

विजिबिलिटी कम, घने कोहरे की चादर में लिपटा जिला

गौरेला पेंड्रा मरवाही। अमरकंटक की तराई में बसे गौरेला पेंड्रा मरवाही जिले में सोमवार को एक बार फिर मौसम ने करवट ली है। इलाके में घना कोहरा छाया हुआ है। कोहरे के चलते मौसम काफी खुशनुमा बना हुआ था। हालांकि घने कोहरे के चलते सड़कों पर विजिबिलिटी लगभग पांच मीटर के आसपास रह गई। कोहरे के चलते सड़कों पर चलने वाले वाहनों की रफ्तार पर भी असर देखने को मिला।

गौरेला पेंड्रा मरवाही जिले में आज मौसम का बदला अंदाज देखने को मिला है। सुबह से पूरा जिला घने कोहरे की चादर से लिपटा रहा और इलाके में कोहरा इतना घना था कि विजिबिलिटी महज पांच मी ही रह गई थी। हालांकि, कल हल्का बूंदाबांदी भी कुछ जगहों में हुई थी। वहीं आने वाले दिनों में मौसम एक-दो दिनों ऐसा ही बने रहने की संभावना है।

मौसम का यह बदला मिजाज लोगों को खूब रास आ रहा है। शानदार मौसम के लिए एक अलग पहचान रखने वाला गौरेला पेंड्रा मरवाही इलाके में इन दिनों मौसम में लगातार बदलाव देखने को मिल रहा है। आज सुबह जब लोग घर से बाहर निकले तो मौसम देखकर ऐसा एहसास होने लगा। जैसे कि वह किसी हिल स्टेशन में हो पूरा इलाका घने कोहरे की चादर में लिपटा हुआ था।

कोहरा इतना घना था, वहीं कोहरे की वजह से सड़कों में वाहन चलाना मुश्किल हो रहा था। जिससे दिन के वक्त भी वाहन लाइट जलाकर चलने को विवश रहे। घने कोहरे की वजह से सूर्य की रोशनी भी नहीं पहुंच पा रही है। मौसम का यह बदला मिजाज लोगों को खूब रास आ रहा है। स्थानीय लोग बता रहे हैं। वहीं कोहरे के चलते सड़कों पर चलने वाले वाहनों की रफ्तार धीमी हो गई है और लोग दिन में भी अपने वाहनों के लाइट जलाकर चला रहे है। वहीं मौसम जानकारों की मानें तो मौसम साफ होने के बाद एक बार फिर ठंड बढ़ेगी।

संक्षिप्त समाचार

स्वास्थ्य सुविधाओं पर सियासत, टीएस सिंहदेव ने की साय सरकार की तारीफ

रायपुर। आंबेडकर अस्पताल में स्वास्थ्य सुविधाओं पर सियासत शुरू हो गई है। पूर्व डिप्टी सीएम टीएस सिंहदेव ने अंबेडकर अस्पताल में 700 बेड के टेंडर जारी करने पर ट्वीट कर राज्य सरकार की तारीफ की है। इधर छत्तीसगढ़ कांग्रेस ने आंबेडकर अस्पताल में दवाओं की कमी पर ट्वीट किया है। इस पर मंत्री टंकराम वर्मा ने कांग्रेस को कंफ्यूज बताया है। मंत्री वर्मा ने कहा, विधानसभा से दक्षिण उपचुनाव तक, हर चुनाव में आपस में ही ये लड़ाई करते हैं। खुद की पार्टी सम्भल नहीं रही। निकाय चुनाव में भी यही होगा। वहीं पीसीसी चीफ दीपक बैज ने पूर्व उपमुख्यमंत्री के साय सरकार को दिए आभार से खुद को किनारा किया। बैज ने कहा, कोई कंफ्यूज नहीं है। टीएस सिंहदेव ने यदि धन्यवाद दिया है तो वो उनका आंकलन है। हम प्रदेश की लचर स्वास्थ्य व्यवस्था पर लगातार सवाल उठा रहे हैं।

छत्तीसगढ़ दौरे पर रहेंगे भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा, रिपोर्ट कार्ड करेंगे पेश

रायपुर। बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा 13 दिसंबर को एक दिवसीय छत्तीसगढ़ दौरे पर रहेंगे। साय सरकार के 1 साल पूरे होने पर वे यहां सरकार का रिपोर्ट कार्ड पेश करेंगे। राष्ट्रीय अध्यक्ष नड्डा के दौरे को लेकर प्रदेश के वित्त मंत्री ओपी चौधरी ने बताया कि भाजपा सरकार सुशासन के तौर पर काम कर रही है। एक साल में ही हमने बहुत काम किया है। आगे और भी करते रहेंगे। राष्ट्रीय अध्यक्ष के दौरे के दौरान 1 साल का रिपोर्ट कार्ड प्रस्तुत किया जाएगा।

दुकान को लेकर विवाद, निगम अधिकारियों से तू-तू मैं-मैं

रायपुर। रायपुर नगर निगम के एक अधिकारी के खिलाफ कोतवाली थाने में एक शिकायत की गई है। इसमें दावा किया गया है कि उक्त अधिकारी ने प्रार्थी अपनी दुकान बेचने का दबाव बना रहे है। दुकान न बेचने पर उसे तोड़ने की धमकी दिए जाने की बात कही गई है। प्रार्थी ने मीडिया को दस्तावेज उपलब्ध कराएं है, जिसमें दावा किया है कि उक्त दुकान के निर्माण के बाद राजीनामा कराकर वे जुर्माना पटाने (नियमों के तहत) तैयार है और इसका आवेदन भी दिया है। वहीं इसका जवाब भी निगम से नोटिस के माध्यम से मिला और कुछ दस्तावेज जमा कराने कहा गया है। प्रार्थी ने दावा किया है कि निगम अधिकारियों द्वारा मांगे गए दस्तावेज भी उन्होंने जमा करा दिए, लेकिन अब निगम अधिकारी दबाव बना रहे है कि वो इस दुकान को बेच दें, नहीं तो उनकी दुकान तोड़ दी जाएगी। प्रार्थी का दावा है कि उनकी दुकान बिना नोटिस के सील कर दी गई है। वहीं कार्रवाई करने पहुंची निगम की टीम और प्रार्थी के बीच जमकर तू-तू मैं-मैं हुई। जिसका वीडियो रिकार्ड किया गया है। वहीं इस मामले में जोन 4 के निगम कमिश्नर का कहना है कि अवैध निर्माण पर कार्रवाई की गई है। राजीनामे के सवाल पर उनका कहना था कि पहले अवैध निर्माण तोड़ा जाएगा और फिर आगे की कार्रवाई होगी।

राजधानी में नहीं थम रही चाकूबाजी, दो बहनों पर धारदार चाकू से किया वार

रायपुर। राजधानी रायपुर के मौलीपारा इलाके में चाकूबाजी की वारदात हुई है। जहां सगे भाई ने दो बड़ी बहनों पर धारदार चाकू से हमला कर दिया। घटना में दोनों बहनें गंभीर रुप से घायल हो गई। जिसके बाद पुलिस ने हत्या के प्रयास का मामला दर्ज कर आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। पूरा मामला तेलीबांधा थाना क्षेत्र का है। जानकारी के अनुसार, आरोपी युवक प्रशांत कुमार बेर की मां और दो बड़ी बहनें पिछले कुछ दिनों से धमतरी से रायपुर आकर रह रही थी। जिन्हें वापिस ले जाने के लिए आरोपी प्रशांत रायपुर आया था। इस दौरान मामूली बात को लेकर प्रशांत की कहा सुनी हो गई। जिसके बाद आक्रोश में आकर आरोपी ने चाकू से अपनी दोनों सगी बहनों पर जानलेवा हमला कर दिया। तेलीबांधा थाना प्रभारी विनय सिंह बघेल ने बताया कि आरोपी ने अपनी बहनों पर धारदार चाकू से हमला किया है। आरोपी को गिरफ्तार कर लिया गया है।

घड़ी चौक में दिनदहाड़े ऑटो चालक पर कैची से जानलेवा हमला

रायपुर। राजधानी रायपुर के घड़ी चौक में सोमवार को दिनदहाड़े एक ई-रिक्शा ऑटो चालक ने दूसरे ऑटो चालक पर कैंची से हमला कर दिया। इस हमले में ऑटो चालक गंभीर रूप से घायल हो गया है। घटना से क्षेत्र में हड़कंप मच गया है। पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। जानकारी अनुसार, रायपुर के घड़ी चौक में आज नशे में धुत्त एक ई-रिक्शा ऑटो चालक ने दूसरे ऑटो चालक को कैची पर जानलेवा हमला कर दिया। घटना में खून से लतपथ ऑटो चालक गंभीर रूप से घायल हो गया है। मौके पर मौजूद ऑटो चालकों ने बदमाश को पकड़कर पुलिस के हवाले कर दिया। वहीं आरोपी को गिरफ्तार करने के बाद पुलिस आगे की जांच में जुट गई है।

10वीं-12वीं बोर्ड परीक्षा की समय सारिणी जारी

रायपुर। छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मंडल ने हाईस्कूल, हायर सेकेंडरी मुख्य परीक्षा 2025 की समय सारणी जारी कर दी है। हायर सेकेंडरी की मुख्य परीक्षा 1 मार्च से 28 मार्च तक होगी। वहीं हाईस्कूल की बोर्ड परीक्षा 3 मार्च से 24 मार्च तक आयोजित होगी। दोनों परीक्षाएं सुबह की पाली में आयोजित की जाएगी।

साय सरकार में एक-एक वार्ड में हो रहे लाखों के विकास कार्य : उद्योग मंत्री

डिंगापुर में मंत्री देवांगन ने चार वार्डों में 1.11 करोड़ के विकास कार्यों का किया भूमिपूजन

रायपुर। प्रगतिपथ पर कोरबा विधानसभा के विकास कार्य तेज रफ्तार से हो रहे हैं, ये विष्णु के सुशासन की सरकार का ही परिणाम है कि अब एक-एक वार्ड में 50 लाख से एक करोड़ तक के कार्य एक साथ प्रारंभ हो रहे हैं। अभी तो सरकार को एक साल ही हुए हैं, आने वाले 4 वर्षों में वार्डों को सारी समस्याओं से मुक्त और सुविधाओं से परिपूर्ण करने के लक्ष्य लेकर हम काम कर रहे हैं।।

उक्त बातें वाणिज्य उद्योग और श्रम मंत्री श्री लखन लाल देवांगन ने कोरबा नगर निगम क्षेत्र के वार्ड क्रमांक 32 डिंगापुर में आयोजित चार वार्डों में होने वाले 1.11 करोड़ के 12 विकास कार्यों के भूमिपूजन कार्यक्रम के दौरान मुख्य अतिथि के आसंदी से कही। इस अवसर पर मंत्री श्री देवांगन ने भूमिपूजन कर शिलापट्टिका का अनावरण किया।

मंत्री श्री देवांगन ने कहा कि हमारा एक ही प्रयास है विकास और तेज रफ्तार से कोरबा का विकास। मंत्री श्री देवांगन ने कहा कि विधानसभा चुनाव में प्रचंड जीत के बाद एक ही प्रयास रहा है कि किस तरह वार्डो और मोहल्लों को विकास हो। जिस तेज रफ्तार से कोरबा शहर बढ़ रहा है उसी रफ़्तार से विकास करने पर भी जोर दिया जा रहा है। ताकि हर गली आने वाले 5 साल में पक्की हो सके, नाली निर्माण और बिजली के खंभे लग सके।मंत्री श्री देवांगन ने कहा कि वार्ड क्रमांक 32 रिसदी में कुछ वर्ष पूर्व जर्जर आंगनबाड़ी धराशाही होकर ढह गया था।

तब से वार्ड वासी मांग कर रहे थे कि सभी जगह नए आंगनबाड़ी भवन का निर्माण हों, मंत्री श्री देवांगन ने कहा कि सरकार आते ही सभी आंगनबाड़ी भवन के मरम्मत और निर्माण की स्वीकृति दे दी गई है। आज इस वॉर्ड में तीन नए आंगनबाड़ी केंद्र का निर्माण होने जा रहा है। 0 वार्ड की महिलाओं ने किया उद्योग मंत्री का अभिनन्दन डिंगापुर में आयोजित भूमिपूजन कार्यक्रम में पहुंचे मंत्री श्री देवांगन का वॉर्ड की महिलाओं ने आत्मीय स्वागत किया। महिलाओं ने मंत्री श्री देवांगन का आभार जताते हुए कहा कि जिन कार्यों की लंबे समय से मांग थी वह अब जाकर पूरी हो रही है।

इन कार्यों की मंत्री श्री देवांगन ने रखी आधारशिला

वार्ड क्रमांक 29, पोड़ीबहार में सीसी रोड निर्माण कार्य लागत 10 लाख, वॉर्ड क्रमांक 31 दादर बांसवाडी के सामने सामुदायिक भवन निर्माण कार्य लागत 10 लाख, वॉर्ड क्रमांक 31 हाउसिंग बोर्ड कालोनी में सांस्कृतिक मंच निर्माण लागत 5 लाख, वार्ड क्रमांक 32 सतनाम नगर बस्ती में सामुदायिक भवन निर्माण कार्य 10 लाख, वॉर्ड क्रमांक 33 रामपुर बस्ती में सीसी रोड निर्माण कार्य लागत 10 लाख, वार्ड क्रमांक 33 में नाली निर्माण 5 लाख, वार्ड क्रमांक 32 डिंगापुर 1, डिंगापुर 2, रिश्दी 1 में क्रमशः 12-12 लाख की लागत से तीन आंगनबाड़ी केंद्र निर्माण, वार्ड क्रमांक-31 दामाद मोहल्ला दादरखुर्द में सीसी रोड निर्माण कार्य 10 लाख, वॉर्ड क्रमांक 32 डिंगापुर संस्कार स्कूल के सामने सामुदायिक भवन निर्माण कार्य 10 लाख, वार्ड क्रमांक 32 रिश्दी बाजार के पास मुक्तिधाम निर्माण 5 लाख, कुल 1 करोड़ 11 लाख के विकास कार्यों की आधारशिला रखी गई। इस अवसर पर पार्षद अजय गोंड, नारायण दास महंत, सुकुंदी यादव, पीलूराम साहू, सुमन सोनी, पूर्व पार्षद दिनेश वैष्णव, रमा मिरी, गुडिया यादव,चन्दन सिंह, संजू सिंह, लक्ष्मण श्रीवास, शिव चंदेल, वैभव शर्मा, ललेश दुबे, अभिषेक पालीवाल समेत अधिक संख्या में कार्यकर्ता व वॉर्ड के स्थानीय लोग उपस्थित रहे।

वाणिज्य उद्योग मंत्री देवांगन आज रहेंगे कोण्डागांव जिले के दौरे पर

प्रदेश के वाणिज्य उद्योग एवं श्रम मंत्री लखन लाल देवांगन मंगलवार 10 दिसंबर को कोण्डागांव जिले के प्रवास पर रहेंगे। मंत्री श्री देवांगन सवेरे 10 बजे शंकर नगर स्थित निवास से रवाना होकर दोपहर एक बजे कोण्डागांव पहुचेंगे। तत्पश्चात वे दोपहर 2 बजे जिला अधिकारियों की बैठक लेंगे। अपरान्ह 2:30 बजे कोण्डागांव जिले के विभिन्न विकास कार्यो के लोकार्पण एवं भूमि पूजन कार्यक्रम में शामिल होंगे। तत्पश्चात आडिटोरियम में पीएससी एवं अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए कोचिंग सेंटर का शुभारंभ करेंगे एवं अभ्यर्थियों को स्टडी कीट का वितरण करेंगे। केबिनेट मंत्री श्री देवांगन शाम 5 बजे कोण्डागांव से रवाना होकर रात 8 बजे राजधानी रायपुर पहुंचेंगे।

मुख्यमंत्री की पहल से पर्यटन के क्षेत्र में मिला जशपुर को नया आयाम

अब पर्यटन वेबसाइट के माध्यम से पर्यटन प्रेमियों को जशपुर के नैसर्गिक जगहों की मिलेगी जानकारी

रायपुर> मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ को पर्यटन के क्षेत्र में आगे बढ़ाने के लिए सार्थक प्रयास किए जा रहे हैं और उसका सकारात्मक परिणाम भी देखने को मिल रहा है। अब देशभर के पर्यटन प्रेमी जशपुर की हरी-भरी वादियों की जानकारी के लिए पर्यटन वेबसाइटwww.easemytrip.com का उपयोग कर सकते हैं। जशपुर पर्यटन वेबसाइट में शामिल होने वाला प्रदेश का पहला जिला बन गया है। अब पर्यटन वेबसाइट के माध्यम से पर्यटन प्रेमियों को जशपुर के नैसर्गिक जगहों की जानकारी आसानी से मिलेगी। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने प्रदेशवासियों को बधाई देते हुए कहा है कि वैश्विक पर्यटन के नक्शे में जशपुर जिले का शामिल होना सभी प्रदेशवासियों के लिए गर्व का विषय है। छत्तीसगढ़ में पर्यटन के क्षेत्र को समृद्ध बनाने हेतु हमारी सरकार कृत संकल्पित है। उल्लेखनीय है कि जिला प्रशासन द्वारा जशपुर में पर्यटन को बढ़ावा देने के क्षेत्र में अनेक गतिविधियां आयोजित की जा रही हैं।

छत्तीसगढ़ के उत्तरी भाग में स्थित जशपुर जिला शहरी जीवन शैली से और भागदौड़ की जिंदगी से सुकून का अहसास दिलाता है। प्रकृति को नजदीक से जानने के लिए जशपुर एक आदर्श स्थान है। चाहे वह हरे-भरे चाय बागान हो, रॉक क्लाइम्बिंग का रोमांच हो, आदिवासी समुदायों की जीवंत परंपराओं को नजदीक से जानना हो, जशपुर हर यात्री के लिए एक अनूठा अनुभव प्रदान करता है। अपने मनमोहक परिदृश्य, ठंडी जलवायु और आदिवासी संस्कृति, रीति रिवाज, रहन-सहन, खान-पान, पारंपरिक व्यंजन और आत्मीयता से समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के साथ, जशपुर एक ऐसा अनुभव प्रदान करता है जो यात्रा के बाद लंबे समय तक पर्यटकों के साथ रहता है। जशपुर में रूकने के लिए एक सुंदर और आकर्षक सुविधा युक्त सरना एथनिक रिज़ॉर्ट है। जशपुर में दमेरा, देशदेखा, चाय बगान, सोगड़ा आश्रम, रानीदाह, बगीचा विकास खंड में कैलाश गुफा, खुडियारानी, राजपुरी, दनगरी, मकरभंजा, कुनकुरी विकास खंड में एशिया का सबसे दूसरा बड़ा चर्च, मधेश्वर पहाड़ सबसे बड़ा शिवलिंग, मयाली नेचर कैम्प आदि बहुत सारे पर्यटन स्थल का आनंद लिया जा सकता है।

मुख्यमंत्री ने गाय-धर्म और विज्ञान पुस्तक का किया विमोचन

रायपुर। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने अपने निवास कार्यालय में छत्तीसगढ़ राज्य गौ संरक्षण एवं संवर्धन समिति द्वारा प्रकाशित गाय - धर्म और विज्ञान पुस्तक का विमोचन किया। मुख्यमंत्री श्री साय को इस अवसर पर समिति के सदस्यों ने बताया कि इस पुस्तक में गाय के धार्मिक और वैज्ञानिक महत्व को बताया गया है। पूरे देश में 4 जनवरी 2025 को गौ-विज्ञान परीक्षा का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें देश भर के लगभग सवा लाख स्कूली छात्र-छात्राएं सम्मिलित होंगे।

मुख्यमंत्री श्री साय ने गौमाता के महत्व से बच्चों को परिचित कराने के लिए आयोजित की जा रही इस परीक्षा के सफल आयोजन के लिए समिति के सदस्यों को शुभकामनाएं दी। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार गौ माता के संरक्षण और संवर्धन के लिए प्रतिबद्ध है। हमारी सरकार ने राज्य के 125 गौशालाओं को चारे के लिए दी जा रही अनुदान राशि प्रति गाय 25 रुपए से बढ़ाकर 35 रूपए करने की घोषणा की है। राज्य सरकार द्वारा गौ माता के संरक्षण और संवर्धन के लिए आयोग का गठन किया है। राज्य सरकार ने गौ धाम बनाने तथा गौमूत्र और गोबर के उपयोग को बढ़ावा देने का निर्णय लिया है। उन्होंने कहा कि घर-घर इस पुस्तक के निःशुल्क वितरण से लोगों में गौ माता के प्रति जागरुकता आएगी। इस अवसर पर गाय धर्म और विज्ञान पुस्तक की संकलनकर्ता- संपादक श्रीमती शताब्दी सुबोध पाण्डे सहित अन्य गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

डॉ. शाहिद अली को बाबू राव विष्णु पराड़कर सम्मान से किया जाएगा अलंकृत

रायपुर। इंटेलेक्चुअल सोसाइटी ऑफ मीडिया प्रोमोटर्स द्वारा समाज के सर्वोन्नति व्यक्ति के व्यक्तित्व विकास, पर्यावरण शुचिता के लिए समर्पित व्यक्तियों को विभिन्न क्षेत्रों में दिये गये योगदान के लिए सम्मानित किया जा रहा है। इस कड़ी में कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय रायपुर के वरिष्ठ उपाचार्य डॉ शाहिद अली को प्रेस विरासत सम्मान वर्ग में बाबू राव विष्णु पराड़कर सम्मान से अलंकृत करने की घोषणा की गई है। उन्हें मार्च 2025 में रायपुर (छत्तीसगढ़) में आयोजित होने वाले प्रथम एजीएम संकल्प संस्कार 2025 में सम्मानित किया जाएगा। मीडिया शिक्षा, शोध एवं लेखन के क्षेत्र में लोकप्रिय प्राध्यापक डॉ अली पब्लिक रिलेशन सोसायटी ऑफ इंडिया के रायपुर चैप्टर के चेयरमैन भी हैं। उल्लेखनीय है कि जनसंपर्क के क्षेत्र में डॉ अली के प्रयासों से राज्य में प्रथम बार ऑल इंडिया पब्लिक रिलेशन कॉन्फ्रेंस 2024 का भी आयोजन रायपुर में 20 से 22 दिसंबर तक किया जा रहा है।

आईआईटी भिलाई की यात्रा में सीसीएलटी मील का पत्थर साबित होगा: राज्यपाल

- डेका ने आईआईटी भिलाई में संस्कृति, भाषा और परम्परा केंद्र का किया शुभारंभ

रायपुर। राज्यपाल रमेन डेका ने कहा है कि आईआईटी भिलाई की यात्रा में संस्कृति भाषा और परम्परा केंद्र महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित होगा। इस केंद्र की स्थापना आदिवासी समुदायों की सांस्कृतिक विरासत और ज्ञान, लुप्तप्राय भाषाओं और सतत विकास पर अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए उत्कृष्टता के लिए एक अंत:विषय केंद्र के रूप में की गई है। केंद्र का मिशन छत्तीसगढ़ के आदिवासी समुदायों की भाषाई विविधता, सांस्कृतिक बहुलवाद, पारिस्थितिक ज्ञान और सामूहिक स्मृति को भारत में सामने लाना है।

राज्यपाल श्री डेका आज आईआईटी भिलाई में संस्कृति, भाषा और परम्परा केंद्र के शुभारंभ अवसर पर आयोजित समारोह को मुख्य अतिथि की आसंदी से सम्बोधित कर रहे थे। राज्यपाल श्री डेका ने आगे कहा कि यह केंद्र छत्तीसगढ़ सरकार के साथ मिलकर एक नोडल ज्ञान केंद्र बनाने के लिए काम कर रहा है। इसमें आईआईटी भिलाई में छत्तीसगढ़ की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत पर एक पुस्तकालय और अत्याधुनिक विस्तारित वास्तविकता संग्रहालय शामिल होगा। इस ज्ञान केंद्र को राज्य के आदिवासी समुदायों के मौखिक इतिहास और सामूहिक सांस्कृतिक यादों के भंडार के रूप में योजनाबद्ध किया गया है।

राज्यपाल श्री डेका ने कहा कि विकसित भारत 2047 के हमारे सामाजिक और राष्ट्रीय लक्ष्य को पूरा करने के लिए इस तरह की पहल समय की मांग है। तेजी से हो रहे वैश्वीकरण के हमारे समकालीन युग में, एक जोखिम यह है कि अपने राष्ट्र के विकास में, हम अपने इतिहास, विरासत और विरासत से संपर्क खो सकते हैं। हमारी साझेदारी, सामूहिक एकता, अपने समाज को ऊपर उठाने और इसे दुनिया के सबसे समृद्ध देशों में शामिल करने की इच्छा कभी-कभी हमें यह भूलने पर मजबूर कर देती है कि हम कौन हैं और हम कहाँ से आए हैं। यह याद रखना और खुद को लगातार याद दिलाना महत्वपूर्ण है कि विकास का मतलब एकरूपता नहीं है, इसका मतलब हमारी सांस्कृतिक और जातीय पहचान का नुकसान नहीं है। राज्यपाल ने कहा कि हम भारत के लोग दुनिया की सबसे पुरानी सभ्यताओं में से एक होने के लिए भाग्यशाली हैं। भारतीय दर्शन, कला और वास्तुकला की जड़ें हजारों साल पुरानी हैं, और जाति, पंथ और समुदायों के विचारकों की अनगिनत पीढ़ियों के योगदान के माध्यम से परिष्कृत हुई हैं। राज्यपाल ने कहा कि आईआईटी हमारे भारतीय ज्ञान प्रणालियों की इस विरासत को पुन: प्राप्त करने के लिए शोध के विभिन्न तरीकों पर काम कर रहा है। हमारी खोई हुई ऐतिहासिक विरासत का दस्तावेजीकरण और उसकी गरिमा को बहाल कर रहा है और बिगड़े हुए पारिस्थितिकी तंत्र को बहाल करने में पारंपरिक कृषि तकनीकों के लाभों को सामने ला रहा है। यह ग्रामीण महिलाओं को डिजिटल तकनीकों के साथ लचीली आजीविका हासिल करने में सक्षम बना रहा है। आज लॉन्च की गई रिपोर्ट हमारे राज्य की विरासत और इतिहास तथा आदिवासी समुदायों के गहन पारिस्थितिकी और कृषि ज्ञान को उजागर करती है। राज्यपाल ने आईआईटी भिलाई के विद्यार्थीयों और कर्मचारियों को अनुसंधान केंद्र की स्थापना के लिए बधाई दी। इस अवसर पर राज्यपाल श्री डेका ने हेरिटेज एप्रीसिएशन ऑफ बारसुर- पर्सपेक्टिव्स ऑन हिस्ट्री, आर्किटेक्चर एण्ड ट्यूरिस्म और ऑगमेंटिग लाइवलीहुड्स थ्रू जीआई-ए केस स्टडी ऑन छत्तीसगढ़ रिपोर्ट लॉन्च किया। राज्यपाल श्री डेका ने समारोह स्थल पर लगाए गए छत्तीसगढ़ जनजातीय हैन्डीक्राफ्ट्स स्टॉल का भी अवलोकन किया।

डिप्टी सीएम के बयान पर बैज का पलटवार

साव से पूछा- कांग्रेस ने किसे ठगा, स्पष्ट करें, क्या 3100 रुपए किसानों से किया वादा पूरा कर रही सरकार

रायपुर। बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नाड्डा के दो दिवसीय दौरे पर आने वाले हैं। इसे लेकर दीपक बैज ने सवाल उठाते हुए कहा कि क्या 3100 ? किसानों से किया हुआ वादा सरकार पूरा कर रही। प्रदेश के युवा सूखे नशे की चपेट में आ चुके हैं। मनपसंद एप लॉंच किया है। युवाओं को कितनी नौकरी दी गई। बलौदाबाजा लोहारीडीह समेत पूरे प्रदेश में अपराध हो रहे। आदिवासियों के साथ अत्याचार, महिलाओं का बलात्कार, क्या इन्हें भी रिपोर्ट कार्ड में शामिल किया जाएगा?

कांग्रेस द्वारा किसानों को ठगने वाले उपमुख्यमंत्री अरुण साव के बयान पर पीसीसी चीफ दीपक बैज ने सवाल पूछा है कि कांग्रेस ने किसे ठगा, उपमुख्यमंत्री पहले स्पष्ट करें। क्या कांग्रेस ने 2640? से 2800? किसानों को नहीं दिया ? क्या किसानों का कांग्रेस कर्ज माफ नहीं किया? बीजेपी बताए क्या 21 क्विंटल 3100? धान का भुगतान हो रहा? क्या केंद्र सरकार का 117 रुपए हितग्राहियों को बीजेपी दे रही ? किसानों से झूठ बोलकर कौन सत्ता में आया, किसान सब समझ रहे हैं। सरकार

किसान हितैषी बनने का ढोंग बंद करे।

पीसीसी चीफ दीपक बैज का वित्त मंत्री के खिलाफ बड़ा बयान दिया है। बैज ने कहा मंत्री ओपी चौधरी को रायगढ़ का माफियाराज का सरगना बताया है। वहीं आरती वासनिक की गिरफ्तारी पर दीपक बैज ने कहा, जो गलत है उन पर कार्रवाई हो, कांग्रेस बचाव नहीं कर रही, लेकिन माफियाराज बीजेपी सरकार में चल रहा। असली माफियाराज रायगढ़ में चल रहा है और ओपी चौधरी इसके सरगना हैं। पीसीसी चीफ दीपक बैज ने कहा, अंतर्राष्ट्रीय माफिया भी छत्तीसगढ़ में पैर पसार चुका है।, कही उसके भी सरगना ओपी चौधरी तो नहीं है?

ओपी चौधरी के बयान पर पीसीसी चीफ दीपक बैज ने पलटवार किया है। उन्होंने कहा, ओपी चौधरी के बयान से लगता है कि ओपी चौधरी आंखों में पट्टा बाँध लिए हैं। गली-गली शराब बिक रही, क्या यही सुशासन है। तहसीलदार टीआई से लड़ रहे हैं। जनता तहसीलदार को पीट रही है। अगर यही सुशासन है तो सरकार को बधाई है।

विधानसभा में धान खरीदी का मुद्दा गरमाया हुआ है। बैज ने कहा, शीतकालीन विधानसभा सत्र से पहले विधायक दल की बैठक होगी, जिसमें सरकार को घेरने की रणनीति बनाई जाएगी। शीतकालीन विधानसभा सत्र को लेकर नेताप्रतिपक्ष से चर्चा हो चुकी है। धान खरीदी को लेकर सरकार के खिलाफ कल कांग्रेस आंदोलन करेगी। इसे लेकर पीसीसी चीफ दीपक बैज ने कहा, किसानों के हक में सरकार के खिलाफ कल पूरे प्रदेश में ब्लॉक स्तर पर एक दिवसीय धरना प्रदर्शन होगा और राज्यपाल के नाम ज्ञापन सौंपेंगे।

फ्लाइट में बम की सूचना देने वाला निकला आईबी का अफसर

रायपुर पुलिस फंसी

रायपुर। मामला उल्टा पड़ता देख अब पुलिस के हाथ पैर फूलने लगे हैं। दरअसल पिछले दिनों रायपुर में, नागपुर-कोलकाता फ्लाइट में एक पैसेंजर ने चिल्लाया...बम है। फ्लाइट को रोककर तलाशी ली गई लेकिन कुछ भी नहीं मिला और फ्लाइट को आगे रवाना किया गया लेकिन पैसेंजर को गिरफ्तार कर लिया गया जबकि वह पुलिस को बार-बार बताते रहा कि वह आईबी का अधिकारी है और जो सूचना उन्हे मिली उसी के आधार पर बम होने की बात उन्होने कही थी लेकिन पुलिस ने कुछ भी नहीं सुना सीधे गिरफ्तार कर लिया। अब जाकर जब पता चला कि फ्लाइट को बम से उड़ाने की खबर देने वाला अनिमेष मंडल आईबी का अधिकारी हैं और डिप्टी सेंट्रल इंटेलीजेंस के पद पर पदस्थ है। रायपुर पुलिस वालों को समझ नहीं आ रहा है कि आखिर कैसे इतनी बड़ी चूक हो गई। अब गाज किस पर गिरेगी,महकमे में चर्चा सरगर्म हैं।

राहुल गांधी लड़ते क्यों नहीं हैं?

संतोष पाठक

2024 के लोकसभा चुनाव से पहले विपक्षी दलों द्वारा बनाया गया इंडिया गठबंधन अब बिखरता हुआ नजर आने लगा है। लोकसभा चुनाव में पीएम नरेंद्र मोदी की पार्टी भाजपा का रथ 240 पर रोकने से उत्साहित विपक्षी दल के नेता ही नहीं बल्कि उनके नेता और कार्यकर्ताओं तक को लगने लगा था कि यह सरकार अब पहले की तरह अड़ कर काम नहीं पाएगी। लेकिन हर गुजरते महीने के साथ ही विपक्षी नेताओं का यह भ्रम टूटता हुआ सा नजर आने लगा है। लोकसभा चुनाव में अपनी पार्टी कांग्रेस को 99 सीटों पर जीत दिलाकर राहुल गांधी ने अपने नेतृत्व को जिस अंदाज में स्थापित करने की शुरुआत की थी, वह विश्वास भी अब दरकता हुआ नजर आ रहा है। राहुल गांधी और कांग्रेस के नेतृत्व को अप्रत्यक्ष तरीके से स्वीकार कर लेने वाले अखिलेश यादव, ममता बनर्जी, शरद पवार, उद्धव ठाकरे और तेजस्वी यादव जैसे नेताओं के विचार भी अब बदलते हुए नजर आने लगे हैं। लोकसभा चुनाव के नतीजों के बाद राहुल गांधी के नेतृत्व को लेकर जो स्वीकार्यता बढ़ती हुई नजर आने लगी थी, उसे हरियाणा और महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव के नतीजों ने पूरी तरह से चकनाचूर कर दिया है। झारखंड में विपक्षी इंडिया गठबंधन को फिर से सरकार बनाने में कामयाबी तो मिल गई है लेकिन इसका पूरा श्रेय जेएमएम नेता और राज्य के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को जा रहा है। लेकिन महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में महाविकास अघाड़ी गठबंधन को मिली हार का ठीकरा एक तरह से राहुल गांधी पर ही फोड़ा जा रहा है जबकि इस गठबंधन में महाराष्ट्र की राजनीति के दिग्गज नेता माने जाने वाले शरद पवार और बालासाहेब ठाकरे की विरासत पर दावा करने वाले उद्धव ठाकरे भी शामिल हैं। हरियाणा विधानसभा चुनाव के बाद कांग्रेस के सहयोगी जो बातें दबी जुबान में कह रहे थे, महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव के नतीजों के बाद वही बातें खुल कर कहने लगे हैं। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री एवं तृणमूल कांग्रेस की नेता ममता बनर्जी ने खुल कर इंडिया गठबंधन का नेतृत्व करने की अपनी इच्छा जाहिर कर दी है। इससे पहले उन्ही की पार्टी के सांसद कल्याण बनर्जी राहुल गांधी पर निशाना साधते हुए यह कह चुके हैं कि कांग्रेस लगातार चुनाव हार रही है, कांग्रेस ने अपने परफॉर्मेंस से इंडिया गठबंधन को निराश कर दिया है। कल्याण बनर्जी तो यहां तक बोल गए कि कांग्रेस को अपना अहंकार त्याग कर ममता बनर्जी को अपना नेता मान लेना चाहिए। समाजवादी पार्टी के मुखिया अखिलेश यादव भी कई बार इशारों-इशारों में और कई बार खुलकर कांग्रेस के रवैये पर सवाल उठा चुके हैं। उनके चाचा रामगोपाल यादव ने तो राहुल गांधी पर खुलकर हमला बोलते हुए यहां तक कह दिया कि वे इंडिया गठबंधन के नेता नहीं हैं। उद्धव ठाकरे, पहले से ही राहुल गांधी से नाराज हैं कि अपने वादे के मुताबिक कांग्रेस नेता ने विधानसभा चुनाव के समय उन्हें महाविकास अघाड़ी की तरफ से मुख्यमंत्री पद का उम्मीदवार घोषित नहीं किया। दरअसल, इंडिया गठबंधन में शामिल क्षेत्रीय दलों के नेताओं को अब अपने अस्तित्व का डर सताने लगा है। उनके मन में यह बात बैठती जा रही है कि राहुल गांधी लड़ नहीं पाते हैं। राहुल गांधी न तो पीएम नरेंद्र मोदी से लड़ पा रहे हैं और ना ही साये की तरह अपने साथ चलने वाले उन कांग्रेस नेताओं से लड़ पा रहे हैं जो उन्हें अनाप-शनाप सलाह देते रहते हैं। राहुल गांधी चाहकर भी अपने करीबी युवा नेता सचिन पायलट को राजस्थान का मुख्यमंत्री नहीं बना पाए। सर्वे रिपोर्ट के बावजूद राजस्थान विधानसभा चुनाव के समय अशोक गहलोत के करीबियों का टिकट नहीं काट पाए। वादा करने के बावजूद छत्तीसगढ़ में भूपेश बघेल को हटाकर टीएस सिंहदेव को मुख्यमंत्री नहीं बना पाए। मध्य प्रदेश में कमलनाथ और दिग्विजय सिंह की जोड़ी से अपने सबसे करीबी नेता रहे ज्योतिरादित्य को बचा नहीं पाए। राहुल गांधी अशोक गहलोत से लेकर भूपेंद्र सिंह हुड्डा तक किसी भी क्षेत्रीय क्षत्रप से अपनी बात मनवा नहीं पाते हैं। जिस तरह से अड़ कर उन्होंने गांधी परिवार से अलग हटकर मल्लिकार्जुन खड़गे को पार्टी का राष्ट्रीय अध्यक्ष बनवाया, उस तरह की जिद वह पार्टी के अन्य मामलों में कर नहीं पाते हैं। नतीजा यह है कि देश के कई राज्यों में आज सांगठनिक दृष्टि से कांग्रेस एक तरह से खत्म सी नजर आ रही है। केसी वेणुगोपाल को राष्ट्रीय संगठन महासचिव बनाकर, संगठन बनाने की जिम्मेदारी दी है, वह जनाब ज्यादा तवज्जों राहुल के साथ हमेशा घुमने को देते नजर आते हैं। सवाल यह खड़ा हो रहा है कि क्या राहुल गांधी इन बातों को समझ नहीं पा रहे हैं और अगर समझ रहे हैं तो फिर लड़ क्यों नहीं पा रहे हैं?

फडणवीस भाजपा के लिए चाणक्य बन चमक रहे

ललित गर्ग

महाराष्ट्र में सरकार गठन की राजनीति में दस दिन की सघन वार्ताओं और खासी नाटकीयता के बाद आखिर अंधेरा छंट गया और देवेंद्र फडणवीस तीसरी बार महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री बनने जा रहे हैं। फडणवीस का मुख्यमंत्री बनना न केवल महाराष्ट्र बल्कि देश की राजनीति को एक नई दिशा एवं दृष्टि देगा। क्योंकि फडणवीस ने अपने राजनीतिक कौशल से न केवल नये मानक गढ़े हैं बल्कि सकारात्मक राजनीति को नये आयाम दिये हैं। हार का कारण स्वयं को मानने एवं जीत का श्रेय पार्टी एवं सहयोगी दलों को देने की विराट सोच रखने वाले फडणवीस को अब भाजपा के शीर्ष नेताओं में शुमार किया जाने लगा है। फडणवीस ने राजनीति के चाणक्यों के चक्रव्यूहों को कुछ ऐसा भेदा कि लोग उन्हें आधुनिक अभिमन्यु भी कहने लगे। बात सही भी है फडणवीस अब किसी चक्रव्यूह में फंसते नहीं बल्कि उसे भेदकर बाहर निकलते हैं। सामने कोई भी हो शह और मात के खेल में उनकी जीत अब गारंटी बन चुकी है। वे भाजपा के लिए चाणक्य हैं तो विपक्ष के लिए अबूझ पहेली। पिछले एक दशक से महाराष्ट्र की राजनीति उनके ही इर्द-गिर्द घूम रही है। ऐसे कद्दावर राजनेता के नेतृत्व में निश्चित ही अगली पारी सफल होने वाली है। बावजूद इसके विशाल बहुमत वाली इस सरकार के मुखिया के तौर पर फडणवीस की यह पारी किसी भी रूप में कम चुनौतीपूर्ण नहीं है। फिर भी महाराष्ट्र को राजनीतिक स्थिरता और विकास के नए दौर में ले जाने की जिम्मेदारी निभाते हुए वह हर चुनौती के पार जायेंगे, लोगों ने उनकी पार्टी और सहयोगी दलों पर जो भरोसा जताया है, महायुति सरकार उनकी उम्मीदें पूरी करके एक नये इतिहास का सृजन करेंगी, इसमें कोई शंका दूर तक नजर नहीं आती।

तीसरी बार मुख्यमंत्री का ताज पहनने वाले देवेंद्र फडणवीस ने प्रखर राजनेता, अजातशत्रु, दूरदर्शी नायक एवं महाराष्ट्र-निर्माता के रूप में न केवल देश के लोगों का दिल जीता है, बल्कि विरोधियों के दिल में भी जगह बनाकर, अमिट यादों को जन-जन के हृदय में स्थापित कर अनेक राजनीतिक कीर्तिमान स्थापित किये हैं। फडणवीस यह नाम महाराष्ट्र राजनीतिक इतिहास का एक ऐसा स्वर्णिम पृष्ठ है, जिससे एक सशक्त जननायक, स्वप्नदर्शी राजनायक, आदर्श चिन्तक, नये महाराष्ट्र के निर्माता, कुशल प्रशासक के साथ-साथ राजनीति को एक खास रंग देने की महक उठती है। उनके व्यक्तित्व के इतने रूप हैं, इतने आयाम हैं, इतने रंग हैं, इतने दृष्टिकोण हैं, जिनमें वे व्यक्ति और नायक हैं, प्रशासक और राजनेता हैं, प्रबुद्ध और प्रधान है, वक्ता और नेता हैं, शासक एवं लोकतंत्र उन्नायक हैं। महाराष्ट्र राजनीति की एक खास स्थिति जहां सहयोगी दलों की आकांक्षाओं का ध्यान रखने और उन्हें यथासंभव संतुष्ट रखने की जरूरत से जुड़ी चुनौती है वहीं आगामी स्थानीय निकाय चुनावों में महायुति से जुड़े दलों पर बेहतर प्रदर्शन की बड़ी जिम्मेदारी है। हालांकि पहली चुनौती मंत्रिमंडल में विभागों के बंटवारे को संतोषजनक ढंग से निपटाने की है। एक बड़ी चुनौती महाराष्ट्र में भाजपा की ताकत को बलशाली बनाने की भी है। इन सब चुनौतियों एवं परिस्थितियों के बीच संतुलन बनाने एवं उनसे पार पाने की क्षमता फडणवीस में दिखती है। जो व्यक्ति 2022 में एकनाथ शिंदे मंत्रिमंडल में मुख्यमंत्री की बजाय उपमुख्यमंत्री की भूमिका मंजूर कर लेता है, पद से ज्यादा पार्टी हित को सामने रखता है, विशिष्ट परिस्थितियों में पार्टी के आग्रह पर न केवल सरकार का सुचारू संचालन सुनिश्चित करता है बल्कि चुनाव में पार्टी की अगुआई करते हुए उसे शानदार जीत भी दिलाता है, तो उन्हें मुख्यमंत्री की भूमिका सौंपी जा रही है तो अपनी पात्रता तो वह पहले ही अच्छी तरह सिद्ध कर चुके हैं, अब तो शासन के नये मानक गढ़ने है।

यह स्पष्ट है कि देवेंद्र फडणवीस के राजनीतिक जीवन के नए दौर की शुरुआत संभावनाभरी है। भाजपा विधायक दल का नेता चुने जाने के बाद उन्होंने अपने भाषण में हिंदवी स्वराज से लेकर अहिल्याबाई होलकर का नाम लेकर अपनी राजनीतिक धारा को बिल्कुल स्पष्ट किया। चुनाव प्रचार के दौरान भी उनकी छवि आत्मविश्वास से भरे हिंदुत्ववादी शुद्ध स्वयंसेवक भाजपा नेता की बनी। उन्होंने कट्टरपंथी मुस्लिम नेताओं और उनको समर्थन देने वाले महाविकास आघाड़ी के विरुद्ध लगातार प्रखर प्रहार से अपनी छवि वर्तमान राजनीतिक धारा के अनुरूप बनाई। चुनाव के समय लगा था कि एक हैं तो सेफ हैं और बंटेंगे तो कटेंगे नारे को लेकर महायुति में मतभेद के बावजूद उन्होंने गजब का संतुलन बनाते हुए इन नारों के बल पर महायुति की जीत को उच्च शिखर देकर सबको आश्चर्यचकित किया। महायुति सरकार की नई पारी पिछली पारी जैसी सहजता और स्थिरता दिखा पाएगी या नहीं यह सवाल तो खड़ा ही है, लेकिन इस सवाल को नकारते हुए नयी सरकार अपना पूरा कार्यकाल उतार-चढ़ाव के बावजूद निष्कंटक पार करेगी। दो पुरानी और सुगठित राजनीतिक पार्टियों में हुई असाधारण तोड़फोड़ के परिणास्वरूप बनी महायुति ने हालांकि 2024 विधानसभा चुनावों में अपनी सार्थकता सिद्ध कर दी है और इसलिए अब इसे किसी भी रूप में कृत्रिम गठबंधन नहीं कहा जा सकता। फिर भी नए मुख्यमंत्री और भाजपा नेतृत्व को सहयोगी दलों को साथ लेकर चलने और किसी भी असंतोष से बचने पर खास ध्यान देना होगा।

फडणवीस का राजनीतिक जीवन अनेक विशेषताओं एवं उपलब्धियों से भरा रहा है। उन्होंने अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के माध्यम से उसकी शुरुआत की। उनके पिता स्व. गंगाधरराव फडणवीस विधान परिषद सदस्य थे। लेकिन इस राजनीतिक विरासत का सहारा लेने के स्थान पर फडणवीस ने अपनी खुद की पहचान बनाई। सामान्य कार्यकर्ता की तरह खुद को तराशा। वे सदा दूसरों से भिन्न रहे, अनूठे रहे। घाल-मेल से दूर। भ्रष्ट राजनीति में बेदाग। विचारों में निडर। टूटते मूल्यों में अडिग। घेरे तोड़कर निकलती भीड़ में मर्यादित। वे भारत के इतिहास में उन चुनिंदा नेताओं में शामिल हैं जिन्होंने सिर्फ अपने नाम, व्यक्तित्व और करिश्मे के बूते पर न केवल सरकार बनाई बल्कि एक नयी सोच की राजनीति को पनपाया, पारदर्शी एवं सुशासन को सुदृढ़ किया।

2014 में पहली बार महाराष्ट्र का मुख्यमंत्री बनने के बाद फडणवीस अपनी कल्पनाशीलता, दूरदर्शिता, दृढ़संकल्प, राजनीतिक कौशल एवं अभिनव परियोजनाओं के माध्यम से उन्होंने अपनी असीम क्षमताओं को आकार दिया। उनकी नेतृत्व क्षमता और लोकप्रियता का अंदाज इसी बात से लगाया जा सकता है कि 2014, 2019 और 2024 के विधानसभा के चुनाव भाजपा ने फडणवीस के नेतृत्व में लड़े और शानदार प्रदर्शन किया, तीनों बार भाजपा सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरी। 2019 में उनके नेतृत्व में भाजपा की चुनावी जीत के बावजूद अविभाजित शिवसेना के मुखिया उद्धव ठाकरे की जिद के कारण वह मुख्यमंत्री नहीं बन पाए, हालांकि राकांपा नेता अजित पवार के साथ मिलकर उस वक्त उन्होंने तीन दिन की सरकार जरूर बनाई। यह प्रयोग विफल होने के बाद उनके विरोधियों ने उनकी रणनीतिक क्षमता पर सवाल भी उठाए थे लेकिन देवेंद्र फडणवीस को अपनी क्षमता पर पूरा भरोसा था और उन्होंने कहा भी था कि वे पूरे जोश से आयेंगे, तमाम तूफानों के बीच से विजेता की तरह फिर उभरेंगे। ऐसा उन्होंने करके दिखाया। भाजपा को प्रचंड बहुमत दिलाने के बावजूद फडणवीस को मुख्यमंत्री पद हासिल करने के लिए खासी जद्दोजहद करनी पड़ी है। भाजपा के प्रदर्शन में फडणवीस ने अपने योगदान का पुरजोर दावा किया है। वे चुनाव-प्रचार अभियान के दौरान पार्टी का मुख्य चेहरा थे और उन्होंने राज्य के सभी छह क्षेत्रों में 64 रैलियां कीं। उनको मिली शानदार सफलता में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से उन्हें मिला अटूट समर्थन था। संघ इस बात पर अड़ा हुआ था कि भाजपा को कार्यकर्ताओं का मनोबल ऊंचा रखने के लिए इस बार मुख्यमंत्री पद के लिए राजस्थान, छत्तीसगढ़ एवं मध्यप्रदेश की तरह लो-प्रोफाइल नेता नहीं चाहिए और फडणवीस ही इस पद के लिए उसकी पहली पसंद हैं। शाह, योगी और फडणवीस- इन तीनों के सामने अभी बहुत वर्षों की राजनीति शेष है। भाजपा के शीर्ष नेतृत्व की ओर बढ़ते हुए फडणवीस को ऐसे सर्वमान्य व्यक्ति के रूप में देखा जाता है, जो खींचतान और दबाव के बीच संतुलन बनाए रखते हैं, उनमें हर बड़ी-से-कड़ी जिम्मेदारी को निभाने की क्षमता है। इस विधा में उनके कौशल का परीक्षण अब महाराष्ट्र में तीन-पक्षीय गठबंधन सरकार के नेतृत्व से होने जा रहा है।

पुराण दिग्दर्शन .... तीसरा अध्याय

वेदों में अष्टादश पुराणों के नाम

गतांक से आगे...

अकबर के जमाने में निस्संदेह आज की भाँति जहाजों का निरन्तर गमनागमन नहीं होता था तथा पतवार और पंखे वाली नौकाएँ अटलांटिक महासागर को लांघ कर प्रतिदिन अमेरिका आती जाती हों यह भी सुसम्भव नहीं जँचता। यदि सचमुच कोई पादरी उस समय आया था तो उसे यह क्यों विदित था कि भारत में तमाखू पैदा नहीं होता! और कदाचित् विदित हो भी तो वह इतने लम्बे कष्ट- साध्य मार्ग में तमाखू की पौद को कैसे सुरक्षित रख सका, यह भी एक विचारणीय समस्या है।

क्योंकि प्रायः तमाखू की पौद ही खेतों में लगाई जाती है। हमें तो ऐसा जान पड़ता है कि यदि वह अवश्य ही तमाखू लाया था तो निस्संदेह कुटाकुटाया पीने योग्य तमाखू बतौर सौगात = तोफा या भेंट के लाया होगा! आज भी दूसरे देश के राजाओं को भेंट में ऐसे 2 उपहार अक्सर दिये जाते हैं।

अच्छा, मान लीजिए कि जरूर हो अमेरिकन पादरी के आने से पूर्व भारत में तमाखू नहीं होता था! लेकिन इससे पुराणों की नवीनता कैसे सिद्ध हो जायेगी? क्योंकि पुराण केलल भारतवर्ष भर की सीमा के अभ्यन्तरवर्ती पदार्थों का ही वर्णन करते हैं यह कहता कौन है ? पुराणों में तो इस पृथ्वी के मुठ्ठीभर पदार्थों के अतिरिक्त स्वर्गादि लोकोंके पदार्थों का भी विस्तृत वर्णन है। जिन पुराणों में इन्द्रलोक में होने वाले कल्पवृक्ष का वर्णन विद्यमान हो यदि उन्हीं पुराणों में इसी भूमि के एक कोने में में पैदा हुने अमेरिकन तमाखू का नाम ग्रा गया तो क्या आश्चर्य हो गया?

वेदव्यास जी योगी थे, यह हम पूर्व सिद्ध कर चुके हैं। योगी लोग समस्त ब्रह्माण्ड का ज्ञान रखते हैं यह योगशास्त्र में लिखा है यथा- भुवनज्ञानं सूर्ये संयमात्। (योगदर्शन विभूतिपाद 26)

क्रमशः ...

शहीद वीर नारायण सिंह ने हिला दी थी अंग्रेजों की हुकूमत

दीपेन्द्र शुक्ला

छत्तीसगढ़ के गौरव और स्वतंत्रता संग्राम के पहले सेनानी शहीद वीर नारायण सिंह की स्मृति में 8 से 10 दिसंबर तक बलौदा बाजार जिले के सोनाखान में भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। इस तीन दिवसीय आयोजन में प्रदेश के मुख्यमंत्री विष्णु देव साय मुख्य अतिथि के रूप में शामिल होंगे। इस दौरान सीएम साय सोनाखान में विभिन्न विकास कार्यों का लोकार्पण और शिलान्यास करेंगे।

शहीद वीर नारायण सिंह का जन्म 1795 में सोनाखान में हुआ था। वे जमींदार परिवार से थे, लेकिन उनका हृदय हमेशा किसानों और गरीबों के लिए धड़कता था। 1856 में जब सूखे के कारण क्षेत्र में अकाल पड़ा, तब उन्होंने साहूकारों से अनाज छीनकर जरूरतमंदों में बांट दिया।

इसके बाद उन्हें अंग्रेजों ने गिरफ्तार किया।

1857 में जब भारत का पहला स्वतंत्रता संग्राम शुरू हुआ, तो उन्होंने जेल से भागकर अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह का नेतृत्व किया। वीर नारायण सिंह ने बड़ी संख्या में आदिवासियों और किसानों को संगठित किया और अंग्रेजों को चुनौती दी। 10 दिसंबर, 1857 को रायपुर के जय स्तंभ चौक पर वीर नारायण सिंह को अंग्रेजों ने फांसी दे दी थी।

बता दें कि वीर नारायण सिंह ने अपने संघर्ष की शुरुआत सोनाखान से की थी। अब यह जगह उनकी शहादत और वीरता का प्रतीक है। यहां हर साल शहादत दिवस पर उनके सम्मान में विशेष आयोजन किए जाते हैं।

सांस्कृतिक कार्यक्रम और योजनाओं की जानकारी देंगे विभागीय स्टॉल

तीन दिवसीय आयोजन के दौरान छत्तीसगढ़ के पारंपरिक नृत्य, संगीत और लोक कला का प्रदर्शन किया जाएगा। इसके अलावा, विभागीय स्टॉल लगाए जाएंगे, जहां सरकारी योजनाओं की जानकारी दी जाएगी। साथ ही लोगों की समस्याओं का समाधान करने के लिए उनके आवेदन भी लिए जाएंगे।

इस आयोजन में छत्तीसगढ़ के विभिन्न जिलों से बड़ी संख्या में लोग शामिल होंगे। यह आयोजन न केवल वीर नारायण सिंह की वीरता को याद करने का माध्यम बनेगा, बल्कि छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक समृद्धि और इतिहास को भी प्रदर्शित करेगा।

बता दें कि छत्तीसगढ़ के प्रथम शहीद वीर नारायण सिंह का पराक्रम ऐसा कि जीते जी न तो उन्होंने ब्रिटिश गुलामी को स्वीकार किया और न ही सोनाखान पर अंग्रेजी हुकूमत कायम होने दी। 1857 में अंग्रेज हुक्मरानों ने उन्हें षड्यंत्र पूर्वक गिरफ्तार कर लिया। दरअसल, दो दिसंबर को वीर नारायण सिंह को फिर से अंग्रजों ने पकड़ लिया। वीर नारायण सिंह को अंग्रेज पकड़कर रायपुर लाए और राजद्रोह का आरोप लगाकर कोर्ट में पेश किया। जज ने 10 दिसंबर को फांसी देने का फैसला सुनाया। अंग्रेज उनसे इतना डरे हुए थे कि उन्हें 6 दिनों तक फांसी पर लटकाए रखा। फिर भी तसल्ली नहीं हुई तो तोप से उड़ा दिया।

भारत-चीन संबंधों में सुधार की कोशिश

सुशांत सरीन

विदेश मंत्री एस जयशंकर ने चीन के साथ संबंधों के बारे में संसद में जो कुछ कहा है, उसके हर शब्द को तौलकर पढ़ा जाना चाहिए। उन्होंने यह नहीं कहा है कि चीन के साथ हमारे रिश्ते सुधर रहे हैं। उन्होंने भारत-चीन रिश्तों के बारे में कोई उम्मीद भी नहीं जतायी है। उन्होंने सिर्फ यह कहा है कि कुछ पहलू ऐसे हैं, जहां आपसी संबंधों में कुछ सुधार दिखायी पड़ा है। उनका यह कहना था कि पूर्वी लद्दाख के देपसांग और डेमचोक से चीनी सैनिक पीछे हटे हैं और वास्तविक नियंत्रण रेखा पर अब शांति है। इस पर ध्यान देने की जरूरत है कि विदेश मंत्री ने पूर्वी लद्दाख में सुधर रही स्थिति के बारे में बोलते हुए अतीत के अनुभवों के आधार पर चौकस रहने तथा सरहद पर दोनों देशों के सैनिकों से तीन शर्तों का पालन करने की आवश्यकता बतायी है।

पहली शर्त यह है कि दोनों पक्ष को वास्तविक नियंत्रण रेखा का सम्मान करना पड़ेगा। दूसरी शर्त यह है कि दोनों में से कोई पक्ष एकतरफा ढंग से वास्तविक नियंत्रण रेखा में यथास्थिति को नहीं उलटेगा। और तीसरी शर्त यह है कि अतीत में जो भी द्विपक्षीय समझौते किये गये हैं, और जो आपसी सहमतियां बनी हैं, उनका पूरी तरह से पालन करना पड़ेगा। तभी आगे शांति की उम्मीद बनेगी।

अलबत्ता भारत और चीन के बीच रिश्तों में जो खटास है, उसे देखते हुए पूर्वी लद्दाख का घटनाक्रम एक छोटा-सा कदम है। इस कदम के आधार पर दोनों देशों के संबंधों के बारे में कोई राय नहीं बनायी जा सकती, न ही इससे कोई ठोस निष्कर्ष निकाला जा सकता है। हां, यह जरूर है कि पूर्वी लद्दाख में कुछ कदम उठाकर दोतरफा संबंधों को पटरी पर लाने की कोशिश हो रही है।

दोतरफा संबंधों को सुधारने के मामले में दोनों देशों के रवैये को भी समझने की आवश्यकता है। सच्चाई यह है कि भारत अब चीन की तरफ से रिश्तों के बेहतर होने के दावे पर भरोसा नहीं करता, बल्कि वह इस संबंध में ठोस प्रमाण चाहता है। चीन से संबंधों के मामले में हमारी दिक्कत यह रही है कि हम आसानी से उसके दावों पर भरोसा करते रहे हैं। इसका अतीत में हमें खामियाजा भुगतना पड़ा है। लेकिन अब वह पहले वाली स्थिति नहीं है। वास्तविक नियंत्रण रेखा पर ही देखें, तो चीन द्वारा सैनिकों की तैनाती के जवाब में हमारी ओर से भी सैन्य तैनाती की गयी थी। यानी चीन को मालूम है कि धौंस देकर अब भारत को डराया या डिगाया नहीं जा सकता। इसलिए हाल के दौर में चीन की तरफ से रिश्तों को बेहतर करने की कई कोशिशें हुईं।

हालांकि मानना चाहिए कि भारत-चीन रिश्तों के बीच कई जटिलतायें हैं। एक बड़ी जटिलता तो आर्थिक मोर्चे पर ही है। एक वास्तविकता यह है कि भारत और चीन के व्यापार में संतुलन हमेशा चीन की ओर झुका रहता है, क्योंकि निर्यात को लगातार मजबूत करके ही उसने खुद को वैश्विक आर्थिक शक्ति बनाया है। दूसरी बात यह कि कच्चे माल और औद्यगिक वस्तुओं के मामले में हम चीन पर निर्भर हैं। आर्थिक मोर्चे पर चीन पर निर्भरता बनाये रहकर हम उससे किस सीमा तक दुश्मनी मोल ले सकते हैं, हमेशा यह सवाल हमारे सामने बना रहता है। हमारी अपनी स्थिति अभी ऐसी नहीं कि आर्थिक मोर्चे पर हम चीन पर अपनी निर्भरता खत्म कर सकें।

दरअसल चीन के मामले में भारत के सामने दोतरफा चुनौती हमेशा बनी रही है। एक चुनौती सीमा पर चीन की आक्रामकता को उसकी भाषा में जवाब देने की है। दूसरी चुनौती चीन के साथ संबंधों को सामान्य रखने की दिशा में कोशिश चलाये जाने की है। कहना चाहिए कि दोनों मोर्चे पर हम अभी तक कमोबेश सफल रहे हैं। वर्ष 2020 में चीन के साथ संबंध खराब होने के बाद से सैन्य मोर्चे पर कई चरणों की बात हुई। यहां तक कि वार्ता के शुरुआती चरणों में अपेक्षित सफलता न मिलने के बाद भी यह बातचीत जारी रही।

सैन्य वार्ता से इतर कूटनीतिक मोर्चे पर भी संबंध सामान्य बनाये रखने की कोशिश की गयी। लेकिन इस ओर भी ध्यान देना चाहिए कि इधर चीन की तरफ से रिश्ते सामान्य करने की कोशिशों के बाद भारत ने सकारात्मक प्रतिक्रिया दी है, लेकिन यह भी पूरी तरह स्पष्ट कर दिया है कि भारत रिश्तों की बेहतरी के मामले में प्रमाणों पर भरोसा करता है, दावों पर नहीं। भारत से संबंध सामान्य बनाने की कोशिश चीन की तरफ से क्यों है? ऐसा इसलिए है कि अमेरिका से चीन के संबंध अच्छे नहीं हैं। ट्रंप के राष्ट्रपति चुने जाने के बाद अमेरिका-चीन संबंध और खराब होने के ही आसार हैं। दूसरी तरफ चीन को मालूम है कि भारत के अमेरिका से बहुत अच्छे संबंध हैं।

अमेरिका और पश्चिमी देश आर्थिक मोर्चे पर चीन से दूरी बनाने की कोशिशों में लगे हैं। अब अगर भारत से भी चीन के रिश्ते पूरी तरह खराब हो गये, तो भारत जैसा बड़ा बाजार भी उसके हाथ से निकल जायेगा, जो चीन नहीं चाहता। वह बस इतनी गारंटी चाहता है कि अमेरिका से गर्मजोशी भरे रिश्ते के बावजूद भारत चीन को नुकसान न पहुंचाये। इसी के तहत उसने भारत से रिश्ते सामान्य करने की दिशा में कदम उठाये हैं। और यह भी समझना चाहिए कि चीन की तरफ से रिश्ते सामान्य बनाने की संजीदगी को देखते हुए ही भारत ने अपनी ओर से भी पहल की। पिछले महीने रूस के कजान में हुए ब्रिक्स के सम्मेलन में जिनपिंग के साथ नरेंद्र मोदी की मुलाकात और हमारे रक्षा मंत्री की चीन के रक्षा मंक्षी के साथ हुई वार्ता को इसी संदर्भ में देखना चाहिए।

सैनिकों के पीछे हटने की बातें कही तो जा रही हैं, लेकिन लगता नहीं है कि फौज पीछे हटेगी। इस मामले में भारत की तुलना में चीन बेहतर स्थिति में है। उसकी तरफ भौगोलिक स्थिति समतल है, इसके अलावा उसने सरहद पर सड़कों के अलावा दूसरे ढांचागत निर्माण इस तरह कर लिया है कि वह कम समय में अपनी फौज को सीमा पर तैनात कर सकता है। हमारी स्थिति ऐसी नहीं है। एक तो सरहद के पास तक पहुंचने के लिए हमारे सैनिकों को दुर्गम पहाड़ी रास्तों से गुजरना पड़ता है। इसके अलावा हमने वहां बुनियादी ढांचे को विकसित नहीं किया है कि कम समय में फौज की तैनाती कर सकें। यहीं पर अपनी सरकार से मेरा यह सवाल है कि इस समय अगर सेना को पूरी तरह पीछे ले जायें, तो फिर अचानक जरूरत पड़ने पर सैन्य साज-ओ-सामान को तेजी से सरहद पर कैसे ले जायेंगे। दोबारा सैन्य साज-ओ-सामान को सरहद पर ले जाना बहुत कठिन और खर्चीला काम है। मेरा यह मानना है कि भारत और चीन के बीच के रिश्ते धीरे-धीरे ही सुधरेंगे।

आज का इतिहास

1940 हिटलर ने बर्लिन में मुनीतिओन्स कार्यकर्ताओं के लिए एक भाषण दिया।

1941 जापान ने गुआम की लड़ाई पर जीत हासिल की।

1945 एल्काइड डी गैसपीरी इटली के प्रधानमंत्री बने।

1953 अल्बर्ट स्चित्ज़र को 1952 नोबेल शांति पुरस्कार दिया गया।

1958 पहली घरेलू यात्री जेट संचालित विमान उड़ान संयुक्त राज्य अमेरिका में हुई जब नेशनल एयरलाइंस बोइंग 707 ने न्यूयॉर्क शहर से मियामी के लिए 111 यात्रियों को उतारा।

1968 जापान का सबसे बड़ा उत्तराधिकारी, कभी-हल 300 मिलियन येन डकैती, टोक्यो में हुई

1977 करोड़पति और चावल विक्रेता, तोंगसून पार्क के भाग्य पर कोरिया और संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा बहस की जा रही थी, क्योंकि उन्हें धोखाधड़ी और भ्रष्टाचार का दोषी माना गया था। यह मान लिया गया था कि कोरिया और अमेरिकी इस मामले में एक समझौते के करीब थे और वह पार्क अमेरिकी में गवाही देगा और बाद में कोरिया को वापस भेज दिया जाएगा।

1979 ताइवान के कुओमितांग तानाशाही ने बड़ी संख्या में विपक्षी नेताओं को गिरफ्तार किया, जिन्होंने लोकतंत्र समर्थक प्रदर्शनों का आयोजन किया था, एक घटना ने 2000 में चरूञ्ज के शासन को समाप्त करने का श्रेय दिया।

1983 राउल अल्फोंसिन सैन्य लोकतंत्र के पतन के बाद पद संभालने वाले अर्जेंटीना के पहले लोकतांत्रिक रूप से निर्वाचित राष्ट्रपति बने।

1988 बचावकर्मियों के मुताबिक, अर्मेनिया में आए विनाशकारी भूकंप से लगभग 45,000 लोग मारे गए हैं और लगभग 50,000 बेघर हुए हैं।

1989 मंगोलिया में पहले खुले लोकतंत्र समर्थक प्रदर्शन के दौरान, पत्रकार त्सखिआगिन एल्बेगदोरज ने मोंगोलियन डेमोक्रेटिक यूनियन के गठन की घोषणा की, जो चार महीने बाद कायमुनिस्ट शासन को समाप्त करने में सहायक होगी।

1996 दक्षिणी अफ्रीका के विख्यात संघर्षकर्ता और राष्ट्रपति नेल्सन मंडेला ने एक नये संविधान पर हस्ताक्षर किये।

2002 पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति जिमी कार्टर को कूटनीति का उपयोग करके 1970 के दशक में मध्य पूर्व संकट को हल करने में उनकी मदद के लिए नोबेल शांति पुरस्कार के साथ प्रस्तुत किया गया है।

2007 क्रिस्टीना फर्नांडीज ने अर्जेंटीना की पहली निर्वाचित महिला राष्ट्रपति के रूप में शपथ ली।

कर्नाटक में अंतर्कलह में उलझी भाजपा

आदिति फडणीस

देश के आधा दर्जन से अधिक राज्यों में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) विपक्ष में है। झारखंड में वह दस साल से सत्ता से बाहर है और सरकार के कामकाज को लेकर लगातार झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) की आलोचना करती रही है। पश्चिम बंगाल में ममता बनर्जी नीत तृणमूल कांग्रेस सरकार को विभिन्न मुद्दों पर घेरने के लिए आंतरिक विरोधाभासों से जूझने के बावजूद विपक्षी भाजपा वहां भी उग्र नजर आती है। पंजाब में अभी उसे मजबूत विपक्ष के रूप उभरना है। दिल्ली में भी वह बेहतर प्रदर्शन के लिए हाथ-पांव मार रही है।

लेकिन, देश के जितने भी राज्यों में यह विपक्ष में है, उनमें उसकी सबसे खराब स्थिति कर्नाटक में है। पिछले महीने हुए उप चुनावों में वह यहां सभी सीटें हार गई। उसके बाद से पार्टी नेता एक-दूसरे पर सार्वजनिक रूप से आरोप-प्रत्यारोप लगा रहे हैं। इस दक्षिणी राज्य की तीन विधान सभा सीट- शिगगांव, संदुर और चन्नपटना यहां के विधायकों के लोक सभा चुनाव जीतने के कारण खाली हुई थीं। शिगगांव सीट से भाजपा के वरिष्ठ नेता और पूर्व मुख्यमंत्री बसवराज बोम्मई विधायक थे और बाद में हावेरी सीट से लोक सभा चुनाव जीत कर वह दिल्ली का रुख कर गए।

चन्नपटना का प्रतिनिधित्व एचडी कुमारस्वामी करते थे। पहले के चुनाव में जब जद(एस) का गठबंधन कांग्रेस के साथ था तो कुमारस्वामी ने इस सीट से भाजपा उम्मीदवार को हराया था। लेकिन, लोक सभा चुनाव में जद(एस) ने भाजपा के साथ मिलकर लड़ा और जीत कर कुमारस्वामी केंद्र सरकार में मंत्री बन गए। संदुर विधान सभा सीट दोबारा कांग्रेस के कब्जे में आ गई है। पिछले चुनाव में भी कांग्रेस के ई. तुकाराम ने यहां से भाजपा उम्मीदवार को हराया था।

क्षेत्रीय स्तर पर थोड़े भिन्न इन इलाकों में हार में कुछ चीजें एक जैसी दिखती हैं। भाजपा का एक गुट इस हार के लिए खुलकर अपने प्रदेश अध्यक्ष बीवाई विजयेंद्र को जिम्मेदार बता रहा है। विजयेंद्र के पिता बीएस येदियुरप्पा राज्य के मुख्यमंत्री रह चुके हैं और भाजपा के दिग्गज नेताओं में उनका शुमार होता है। यह पहली बार नहीं है जब राज्य में पार्टी की अंदरूनी कलह उजागर हुई है। मौजूदा उठापटक विजयेंद्र और पूर्व केंद्रीय मंत्री एवं विधायक बसनगौड़ा पाटिल यतनाल के गुट के बीच चल रही है।

यतनाल गुट इस समय दिल्ली में डेरा डाले हुए है, जो भाजपा के शीर्ष नेतृत्व को यह संदेश पहुंचाने की कोशिश कर रहा है कि राज्य पार्टी प्रमुख के तौर पर विजयेंद्र नाकाम रहे हैं। इस गुट का तर्क है कि विजयेंद्र के पास एकमात्र सकारात्मक चीज यही है कि वह पूर्व मुख्यमंत्री और भाजपा के वरिष्ठ नेता येदियुरप्पा के बेटे हैं। यतनाल और उनके समर्थकों के ये तर्क पूरी तरह सच नहीं माने जा सकते क्योंकि, विजयेंद्र के नेतृत्व में भाजपा कर्नाटक के ऐसे इलाकों तक अपना प्रसार करने में

कामयाब रही है, जहां वह पहले कभी नहीं पहुंच पाई थी। दक्षिणी कर्नाटक इसका जीता-जागता उदाहरण है। विधान सभा चुनाव में कांग्रेस से करारी मात खाने के सात महीने बाद भाजपा ने बहुत ही विचार-विमर्श के बाद विजयेंद्र को प्रदेश अध्यक्ष पद की जिम्मेदारी सौंपी थी। पार्टी को एक ऐसे नेता की जरूरत थी, जो मजबूत व्यक्तिगत आधार का मालिक होने के साथ-साथ पूरे राज्य में स्वीकार्य हो। लोक सभा चुनाव में पार्टी के बेहतरीन प्रदर्शन ने यह दिखा दिया कि शीर्ष नेतृत्व का निर्णय गलत नहीं था। आम चुनाव में पूरे देश में भाजपा की सीटें घटीं, लेकिन पार्टी ने कर्नाटक की 28 में से 19 सीटों पर जीत कर अपनी धमक का एहसास करा दिया।

लेकिन, बसनगौड़ा और उनके समर्थक चाहते हैं कि विजयेंद्र से पार्टी अध्यक्ष पद की जिम्मेदारी वापस लेकर उन्हें घर भेज दिया जाए। यह गुट विजयेंद्र का इतना विरोधी हो गया है कि इसने वक्फ भूमि अतिक्रमण के मुद्दे पर पार्टी को नजरअंदाज कर बीदर से अपना अलग अभियान शुरू किया, जिसके बैनर और पोस्टरों पर केवल प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की तस्वीरें छायी हुई थीं और पार्टी प्रदेश अध्यक्ष विजयेंद्र की फोटों कहीं नहीं थीं। यहां तक कि भाजपा की बीदर इकाई ने यतनाल के खिलाफ पुलिस में शिकायत भी दर्ज कराई थी। माना जा रहा है कि इस फैसले को बीएल संतोष का समर्थन प्राप्त है, क्योंकि कभी संतोष के पीछे-पीछे चलने वाले एमएलसी सीटी रवि इस पदयात्रा में शामिल हुए थे।

अब कर्नाटक में विधान सभा चुनाव मई 2028 में होने हैं, लेकिन यतनाल की महत्त्वाकांक्षाएं अभी से ठाठें मार रही हैं। पिछले सप्ताह बेलागावी में स्थानीय मीडिया से बात करते हुए उन्होंने स्पष्ट शब्दों में अपनी भावनाओं का इजहार करते हुए कहा था, 'मैं निस्स्वार्थ राजनेता या कोई संत आदमी नहीं हूं। मैं आने वाले दिनों में कर्नाटक का नंबर एक राजनेता बनूंगा। जब मैं मुख्यमंत्री बन जाऊंगा तो मीडिया मेरे पीछे-पीछे भागेगा।' कर्नाटक उन राज्यों में से है जहां 1992 में हुबली में ईदगाह मैदान विवाद के बाद हिंदू भावनाओं को समेट कर धुव्रीकरण हुआ और राम मंदिर रथ यात्रा को जबरदस्त समर्थन यहां मिला। कर्नाटक भाजपा में अनुशासनहीनता का इतिहास नहीं रहा है और इसीलिए भाजपा कार्यकर्ता भ्रम की स्थिति में पड़ गए हैं। उनका मानना है कि पार्टी विरोधी गतिविधियों के लिए कार्रवाई होनी चाहिए, लेकिन साथ ही वे यह भी समझ रहे हैं कि यतनाल द्वारा उठाए जा रहे मुद्दे विचारधारा के स्तर पर कहीं अधिक ठोस हैं। विजयेंद्र और उनके समर्थक कहते हैं कि वे यतनाल से बात करने को तैयार हैं। साथ ही उनका यह भी मानना है कि यतनाल गुट की गतिविधियां पार्टी को राज्य में विपक्ष के तौर पर कमजोर कर रही हैं। लेकिन, कर्नाटक में भाजपा के अंदर बड़ी विचित्र और जटिल स्थिति बन गई है। राज्य के मुख्यमंत्री और कांग्रेस नेता सिद्धरमैया के येदियुरप्पा के साथ बहुत अच्छे संबंध रहे हैं। चार साल पहले जब बीएस येदियुरप्पा राज्य के मुख्यमंत्री थे तो उनके जन्मदिन पर आयोजित समारोह में सिद्धरमैया न केवल शामिल हुए थे, बल्कि कई मामलों को लेकर उनकी खूब तारीफ भी की थी।

यही वजह है कि यतनाल गुट के कई नेताओं का मानना है कि कांग्रेस के अंदर से ही हमले झेल रहे सिद्धरमैया और भाजपा के विजयेंद्र गुट के बीच एक-दूसरे को बचाने के लिए कोई न कोई मिलीभगत है। हालांकि यह आरोप केवल संदेह तक ही सीमित हैं, क्योंकि इनका कोई तथ्यात्मक आधार नहीं मिलता। विजयेंद्र यह अच्छी तरह जानते हैं कि उनके समक्ष अपनी काबिलियत साबित करते हुए राज्य में भाजपा को दोबारा खड़ा करने की चुनौती है। लेकिन, अंदरूनी गुटबाजी की ओर इशारा करते हुए उनके समर्थक कहते हैं कि भाजपा का पुनर्जीवित करने का काम विजयेंद्र अपना एक हाथ पीठ पीछे बंधा होने के कारण कैसे कर पाएंगे।

आइए बंगलादेश से सीखें...!

राबर्ट क्लीमैंट्स

अधिकांश भारतीय बंगलादेश में हिंदुओं के खिलाफ हिंसा और मंदिरों के विनाश से स्तब्ध हैं। जहां एक ओर हमारा मन बंगलादेश को अविश्वास से देखता है वहीं भारत बंगलादेश को आजाद कराने वाले हमारे बहादुर सैनिकों के बलिदान को याद करता है, जबकि बंगलादेश दो तरफ से युद्ध लड़ रहा है। हमें अपने देश को भी उसी अविश्वास से देखने की जरूरत है, जिस तरह हमारे अपने लोग उस व्यक्ति का अनादर करते हैं और उसका नाम मिटाने की कोशिश करते हैं जिसने हमारे देश को अंग्रेजों से आजाद कराया। वस्तुत- एक व्यक्ति की सेना, जिसने एक अपरंपरागत युद्ध लड़ा, और हमें गोरे उपनिवेशवादियों की बेडियों से आजाद कराया।

उन्होंने कठोर हाथों से शासन किया, जैसे बंगलादेश को पाकिस्तानी सेना की ताकत ने कुचल दिया था, जब तक कि भारतीय सैनिक अंदर नहीं आए, और अपने पड़ोसी को आजाद नहीं कराया। लेकिन अब भारत कृतज्ञता नहीं बल्कि विश्वासघात देख रहा है, ठीक वैसे ही जैसे राष्ट्रपति का आदर करने वाले लोग उसी व्यक्ति को हमारे देश के अंदर कई लोगों द्वारा धोखा दिए जाते हुए देखते हैं। एक और महत्वपूर्ण तथ्य जिससे हमें सीखने की जरूरत है वह यह है कि अल्पसंख्यकों को कैसा लगता है जब वे जिस देश को अपना कहते हैं, वही उन्हें धमकाता है। जब मंदिरों पर हमला होता है तो हमें कितना दुख होता है, न सिर्फ बंगलादेश में बल्कि दुनिया के किसी भी दूसरे हिस्से में। हम चिल्लाते हैं, 'उन्हें अधिकार है! उनके पूजा स्थल की रक्षा करो!' लेकिन चुपचाप अपने ही देश में लोगों द्वारा कही गई उन्हीं बातों को सुनें। क्या आप जानते हैं कि जब उनके पूजा स्थल पर हमला होता है तो उन्हें कैसा लगता है? एक चर्च को अपवित्र किया जाता है, एक मस्जिद को गिरा दिया जाता है। किसने

किया? एक ही राष्ट्रीयता के लोगों के भाइयों और बहनों ने! फिर से, विश्वासघात, है न? हमारा देश, जो बाकी दुनिया के लिए प्रकाश की किरण हो सकता है, यह दिखाने के लिए कि शांति और भाईचारा वास्तव में क्या है, स्वार्थी राजनेताओं द्वारा नष्ट किया जा रहा है, और हां, बंगलादेश में भी ऐसा ही हो रहा होगा। लेकिन विदेश में ऐसी घटनाओं पर प्रतिक्रिया करने से पहले, हमें सीमा पार चिल्लाने की स्थिति में होना चाहिए, 'मुहम्मद यूनुस! हमें देखो और हमारा अनुकरण करो!' लेकिन क्या हम ऐसा कह सकते हैं? नहीं! यही कारण है कि वे हत्या करके भी बच निकलते हैं क्योंकि वे वही कर रहे हैं जो वे सीमा पार देख रहे हैं। ऐसी हरकतों को रोकने के लिए हमें उदाहरण पेश करने की जरूरत है। हां, यहां-वहां कुछ छिटपुट घटनाएं हो सकती हैं, लेकिन हम राष्ट्रीय नेताओं को अपने मुंह से जहर उगलकर देश को ध्रुवीकृत करने की अनुमति नहीं दे सकते। बंगलादेश में हमारे खिलाफ जो कुछ हो रहा है, वह जल्द ही दुनिया के अन्य हिस्सों में भी ऐसी घृणित हरकतों की शुरूआत हो सकती है। धीरे-धीरे लेकिन निश्चित रूप से, हमारे खिलाफ हर जगह हिंसा की छिटपुट घटनाएं हो रही हैं क्योंकि वे हमें भी ऐसा करते हुए देखते हैं। आइए हम इस पर रोक लगाएं और दुनिया को दिखाएं कि भारत एक ऐसा देश है जिसने विविधता के बीच एकता में रहना सीखा है। इसके लिए हमें बंगलादेश में जो कुछ हो रहा है, उससे सीखने की जरूरत है, इससे पहले कि बहुत देर हो जाए..!

संविधान की दिवस की रस्मी अदायगी से नहीं बदलेगी हकीकत

योगेंद्र योगी

26 नवंबर 1949 को भारत का संविधान पारित किया गया और अपनाया गया। इस दिन को संविधान दिवस या राष्ट्रीय कानून दिवस के रूप में जाना जाता है। डॉ. भीमराव अंबेडकर ने कहा था कि भारत का संविधान व्यावहारिक, लचीला, और मज़बूत है। संविधान में हर समस्या का समाधान है। संविधान भारतीय लोकतंत्र की आत्मा है। इसके बावजूद आजादी के बाद से केंद्र हो या राज्यों की सरकारें, सभी ने संविधान में मौजूद कानूनों को अपने राजनीतिक फायदों के लिए इस्तेमाल करने में कसर बाकी नहीं रखी। राजनीतिक दलों की सत्ता लोलुपता के कारण संविधान काफी हद तक कानून का पुलंदा बन कर रह गया। राजनीतिक दलों की मनमानी का आलम ही है कि देश आज भी गरीबी, असमानता, अपराध, जनसंख्या बढ़ोतरी, पर्यावरणीय समस्या और बुनियादी सुविधाओं की कमी से जूझ रहा है।

संविधान का दुरुपयोग केंद्र में हर दल की सरकार ने करने की भरसक कोशिश की है। इंदिरा गांधी ने अपनी सत्ता बचाने के लिए देश में आपात्तकाल लगा दिया। संविधान की सरेआम धज्जियां उड़ाने का ऐसा मंजर भारत में कभी देखने को नहीं मिला। इसके बाद केंद्र में लंबे अर्से तक शासन में रही कांग्रेस की सरकार ने संविधान के दुरुपयोग में कोई कसर बाकी नहीं रखी। राज्यों की सरकारों को बर्खास्त करने के लिए आर्टिकल 356 का जमकर दुरुपयोग किया गया। इंदिरा गांधी ने आर्टिकल 356 का 50 बार दुरुपयोग किया। श्रीमती गांधी ने विपक्षी और क्षेत्रीय दलों की सरकारों को गिरा दिया। केरल में वामपंथी सरकार चुनी गई, जिसे नेहरू पसंद नहीं करते थे, उसे गिरा दिया गया। करुणानिधि जैसे दिग्गजों की सरकारें गिरा दी गईं। कुल 90 बार चुनी हुई सरकारों को गिराया गया। कांग्रेस सरकार ने डीएमके और वामपंथी सरकारों को गिराया। बदनियति से संविधान के कानूनों को अपनी सुविधा के हिसाब से बदलने और लागू करने का काम सिर्फ कांग्रेस ने ही नहीं किया, बल्कि केंद्र में शासन में आने के बाद भाजपा भी इसमें पीछे नहीं रही। सर्वोच्च न्यायालय ने एक महत्वपूर्ण फैसले में संविधान के 99वें

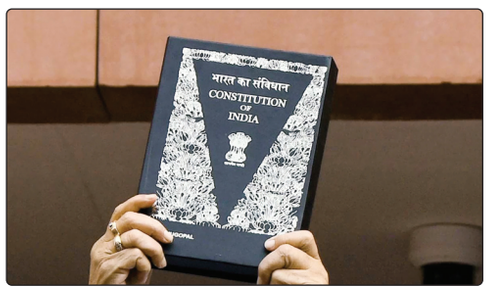

संशोधन और राष्ट्रीय न्यायिक नियुक्ति आयोग (एनजेएसी) अधिनियम को असंवैधानिक करार देते हुए इसे निरस्त कर दिया और उच्च न्यायालयों तथा सर्वोच्च न्यायालय में न्यायाधीशों की नियुक्ति के लिए पुरानी कॉलेजियम प्रणाली को बहाल कर दिया।

देश के लोगों की सोशल मीडिया के जरिए अभिव्यक्ति और असहमति के अधिकार को केंद्र और राज्यों के कुचलने की कोशिश को सुप्रीम कोर्ट ने नाकाम कर दिया। सुप्रीम कोर्ट ने आईटी एक्ट की धारा 66 ए को असंवैधानिक करार दिया। अदालत ने सभी राज्यों के पुलिस महानिदेशकों और गृह सचिवों को यह सुनिश्चित करने के लिए कई निर्देश जारी किए कि सभी लंबित मामलों से धारा 66 ए का संदर्भ हटा दिया जाए। कोर्ट ने यह भी निर्देश दिया कि प्रकाशित आईटी अधिनियम के बेयरएक्ट्स को पाठकों को पर्याप्त रूप से सूचित करना चाहिए कि धारा 66 ए को अमान्य कर दिया गया है। इस धारा में यह प्रावधान था कि सोशल मीडिया पर आपत्तिजनक, उत्तेजक या भावनाएं भड़काने वाली सामग्री डालने पर व्यक्ति को गिरफ्तारी किया जा सकता है, लेकिन शीर्ष अदालत ने इस कानून को संविधान के अनुच्छेद 19.1.ए के तहत बोलने और अभिव्यक्ति की आजादी के मौलिक अधिकार के खिलाफ बताकर निरस्त कर दिया था। आरक्षण को लेकर सभी राजनीतिक दल वोटों की राजनीतिक करते रहे हैं। आरक्षण के सही प्रावधानों को लागू करने में भी नेताओं को वोटों का डर सताता रहा है। यही वजह रही है कि आरक्षण के फायदे-नुकसान पर कोई दल किसी तरह की चर्चा तक करने को तैयार नहीं होता। आरक्षण को लेकर राजनीतिक दलों ने संविधान से छेड़छाड़ करने में कसर बाकी नहीं रखी। मुख्य न्यायाधीश डी वाई चंद्रचूड़ की अगुवाई वाली सुप्रीम कोर्ट की सात जजों की बेंच ने अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति वर्ग के कोटे में कोटा दिए जाने को मंजूरी दी थी। उस दौरान कोर्ट ने कहा था कि एससी-एसटी कैटेगरी के भीतर नई सब कैटेगरी बना सकते हैं और इसके तहत अति पिछड़े तबके को अलग से रिजर्वेशन दे सकते हैं। इसको लेकर पीएम नरेंद्र मोदी से संसद भवन में 100 दलित सांसद मिले। इसके बाद केंद्र ने इसकी घोषणा भी कर दी कि जरूरत पड़ी तो संसद में विधेयक लाया जाएगा, पर आरक्षण के मौजूदा प्रावधानों में कोई बदलाव मंजूर नहीं होगा। हालांकि तमिलनाडु और कर्नाटक ने सुप्रीम कोर्ट के कोटे में कोटा के निर्णय पर अमल का फैसला किया।

इतना ही नहीं संविधान से इतर जाकर राज्यों की सरकारों ने भी वोटों की राजनीति के लिए आरक्षण को हथियार बनाने के प्रयासों में कसर बाकी नहीं रखी। हां, कुछ राज्यों ने निजी क्षेत्र में स्थानीय लोगों के लिए आरक्षण देने का कानून बनाने की कोशिश की है। हालांकि, इन कोशिशों को संवैधानिक चुनौतियों का सामना करना पड़ा। साल 2008 में महाराष्ट्र सरकार ने भूमिपुत्रों को 80 प्रतिशत आरक्षण देने की कोशिश की थी। साल 2019 में आंध्र प्रदेश सरकार ने निजी क्षेत्र में 75 प्रतिशत स्थानीय आरक्षण अनिवार्य करने वाला कानून पारित किया था। साल 2020 में हरियाणा सरकार ने निजी क्षेत्र में 75 प्रतिशत स्थानीय आरक्षण देने का कानून बनाया था। हालांकि, पंजाब और हरियाणा उच्च न्यायालय ने इसे असंवैधानिक माना था।

इसी तरह साल 2023 में झारखंड ने निजी क्षेत्र में स्थानीय उम्मीदवारों के लिए 75 प्रतिशत आरक्षण अनिवार्य करने वाला कानून पेश किया था। कर्नाटक सरकार ने भी निजी क्षेत्र में स्थानीय लोगों के लिए आरक्षण देने का विधेयक पेश किया था। हालांकि, उद्योग जगत की प्रतिक्रिया के बाद इसे स्थगित कर दिया गया। संविधान के अनुच्छेद 16(3) के मुताबिक, संसद ही किसी खास राज्य में नौकरियों के लिए निवास की ज़रूरत तय करने का कानून बना सकती है। संविधान दिवस मनाना महज एक रस्मी रिवायत रह गई है।

संसद में नोट की गड्डी मिलने पर मचा बवाल

शिवेंद्र तिवारी

संसद में नोटों की गड्डी मिलने का मामला सुर्खियों में है। शुक्रवार को संसद में उस वक्त हंगामा हो गया जब राज्यसभा में नोटों की गड्डी मिलने की जानकारी सामने आई। गुरुवार को कार्यवाही के बाद सदन की जांच के दौरान नोटों की गड्डी कांग्रेस सांसद अभिषेक मनु सिंघवी को आवंटित सीट से मिली थी। हालांकि, सिंघवी ने कहा कि वह केवल 500 रुपये की एक नोट लेकर संसद जाते हैं। केंद्रीय मंत्री और भाजपा सांसद जेपी नड्डा ने कहा कि यह घटना सामान्य नहीं है और ये सदन की गरिमा पर चोट है। फिलहाल घटना की जांच हो रही है।

आइये जानते हैं कि संसद में नोटों की गड्डी मिलने का मामला क्या है? इस मामले का खुलासा कैसे हुआ? संसद में सदस्यों के लिए नियम-कायदे क्या होते हैं? सांसदों के लिए किन चीजों की मनाही होती है?

राज्यसभा में शुक्रवार को नोटों की गड्डी मिलने की खबर के बाद जमकर हंगामा हुआ। नोट गुरुवार को सदन की कार्यवाही के बाद जांच के दौरान कांग्रेस सांसद अभिषेक मनु सिंधवी के आवंटित सीट से मिले। राज्यसभा के सभापति जगदीप धनखड़ ने सदस्यों को बताया कि गुरुवार को सदन की कार्यवाही स्थगित होने के बाद नियमित जांच पड़ताल के दौरान सुरक्षा अधिकारियों ने सीट संख्या 222 से 500 रुपये के नोटों की एक गड्डी बरामद की। गड्डी में 100 नोटें हैं। यह सीट तेलंगाना से सांसद अभिषेक मनु सिंघवी को आवंटित है। मामला मेरे संज्ञान में लाया गया और मैंने सुनिश्चित किया कि जांच हो और जांच चल रही है। उन्होंने यह भी कहा कि यह स्पष्ट नहीं है कि नोट असली हैं या नकली। वहीं, इस मामले में कांग्रेस सांसद अभिषेक मनु सिंघवी ने कहा कि सदन में मिले पैसे उनके नहीं है और वे सदन में सिर्फ 500 का नोट लेकर गए थे।

संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने बताया कि नियमित प्रोटोकॉल के अनुसार सदन की कार्यवाही खत्म होने के बाद एंटी-सैबोटेज टीम ने सीटों की जांच की। उस प्रक्रिया के दौरान नोट की गड्डी पाई गई और सीट नंबरों को डिकोड किया गया। रिजिजू ने सवाल किया कि जब हम डिजिटल इंडिया की ओर बढ़ रहे हैं, तो सदन में नोटों का बंडल ले जाना उचित है? हम सदन में नोटों का बंडल नहीं ले जाते। इसकी गंभीर जांच होनी चाहिए।

संसद सत्र के दौरान केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल (सीआईएसएफ) की एंटी-सैबोटेज टीमें हर दिन जांच करती हैं। टीमों के पास खोजी कुत्ते होते हैं जिन्हें विस्फोटकों का

पता लगाने के लिए विशेष रूप से प्रशिक्षित किया जाता है। हर सुबह करीब तीन घंटे तक दोनों सदनों की हर सीट की जांच की जाती है। संसद के कर्मचारी बाहर निकल जाते हैं और सदन को सीआईएसएफ सुरक्षा दस्ते को सौंप दिया जाता है। बता दें कि 20 मई 2024 को सीआईएसएफ ने संसद परिसर की पूरी सुरक्षा व्यवस्था अपने हाथ में ले ली थी। यह बदलाव 13 दिसंबर 2023 को परिसर में हुए गंभीर सुरक्षा उल्लंघन के कारण किया गया था।

सांसदों को सदन में अनुशासन और शिष्टाचार बनाए रखने के लिए कुछ नियमों का पालन करना होता है। इन नियमों का उल्लेख राज्यसभा और लोकसभा दोनों सदनों की नियम पुस्तिका में है जो समय-समय पर जारी की जाती है। जब सदन चल रहा हो, तो सदस्यों से संसदीय शिष्टाचार के कुछ नियमों का पालन करना होता है। ये नियम राज्य सभा और लोकसभा दोनों में प्रक्रिया और कार्य संचालन के नियमों और समय-समय पर सभापति या अध्यक्ष द्वारा दिए गए नियमों पर आधारित हैं।

सांसदों के लिए कुछ महत्वपूर्ण नियम

सदस्यों को निर्धारित समय से कुछ मिनट पहले सदन में उपस्थित होना चाहिए, जो कि सामान्यत: सुबह 11 बजे है। सदस्य को सदन में प्रवेश करते या छोड़ते समय और अपनी सीट पर बैठने या छोड़ने से पहले भी चेयर को अभिवादन करना चाहिए। जब सदन की बैठक चल रही हो, तो सदस्य को सदन में इस तरह से प्रवेश करना और छोड़ना चाहिए कि सदन की कार्यवाही में कोई व्यवधान न आए। सदस्य को कभी भी अध्यक्ष और बोलने वाले सदस्य के बीच से नहीं गुजरना चाहिए। सदस्यों को चेयर की ओर पीठ करके नहीं बैठना चाहिए या खड़ा नहीं होना चाहिए। बैठक के दौरान, यदि कोई सदस्य चाहे, तो सदन में कोई व्यवधान पैदा किए बिना अपनी सीट के पास के पिछले दरवाजे से जल्दी से बाहर जा सकता है। सदस्यों को आपस में इस तरह बातचीत नहीं करनी चाहिए कि सदन की कार्यवाही में बाधा उत्पन्न हो। सदस्यों को अपनी सीटों पर बैठकर समाचार पत्र, पत्रिकाएं, किताबें या पत्र नहीं पढ़ने चाहिए, जो कार्यवाही से सीधे संबंधित न हों या उसके लिए जरूरी न हों। जब कोई सदस्य बोलना चाहता है, तो उसे सभापति का ध्यान आकर्षित करने के लिए अपने स्थान पर खड़ा होना चाहिए। जैसे ही अध्यक्ष बोलने के लिए खड़े होते हैं या ऑर्डर कहते हैं, हर सदस्य को अपनी सीट पर वापस आ जाना चाहिए। जब अध्यक्ष सदन को संबोधित कर रहे हों, तो किसी भी सदस्य को उठना या सदन छोड़ना नहीं चाहिए। अध्यक्ष की पूर्व अनुमति के बिना, किसी भी सदस्य को लिखित भाषण नहीं पढ़ना चाहिए, हालांकि नोट्स का उल्लेख किया जा सकता है। सदस्य को सदन में दूसरे सदस्य की उपस्थिति के दौरान भाषण पढ़ने की अनुमति नहीं है। सदस्यों को अपना भाषण समाप्त करने के तुरंत बाद सदन नहीं छोड़ना चाहिए। किसी वाद-विवाद में भाग लेने वाले सदस्यों को उस समय सदन में उपस्थित रहना चाहिए जब मंत्री वाद-विवाद का उत्तर दे। जहां तक संभव हो, किसी सदस्य को नाम से नहीं, बल्कि किसी अन्य उपयुक्त तरीके से संबोधित किया जाना चाहिए। बोलते समय किसी सदस्य को व्यक्तिगत सदस्य को सीधे संबोधित नहीं करना चाहिए, बल्कि हमेशा सभापति को संबोधित करना चाहिए। किसी सदस्य को दूसरे सदस्य के बोलने के समय उससे बहस नहीं करनी चाहिए। सभापति ने जिस सदस्य को बाहर जाने का आदेश दिया गया है, उसे तुरंत बाहर चले जाना चाहिए और शेष दिन की बैठक के दौरान अनुपस्थित रहना चाहिए। आक्षेप, आपत्तिजनक और असंसदीय अभिव्यक्तियों वाले शब्दों का प्रयोग करने से पूरी तरह बचना चाहिए। अपने भाषणों में, सदस्यों को सरकारी अधिकारियों का नाम लेकर उल्लेख नहीं करना चाहिए। दो सदस्यों को एक ही समय पर खड़े नहीं रहना चाहिए। जब कोई सदस्य अपना पहला भाषण दे रहा हो, तो उसे बीच में नहीं रोकना चाहिए। कोट को बांह पर लटकाकर सदन में प्रवेश करना अनुचित है और सदन की मर्यादा के विरुद्ध है। सदस्यों को संसद भवन परिसर में कोई भी साहित्य, प्रश्नावली या पुस्तिका आदि नहीं बांटनी चाहिए, जब तक कि सभापति से लिखित में पहले से अनुमति न ली गई हो।

साख बचाने के लिए एकनाथ शिंदे ने लिया वक्त

संतोष पाठक

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के लाडले और नागपुर से ही आने वाले देवेंद्र फडणवीस तीसरी बार महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री बन गए हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह, उत्तर प्रदेश और असम के मुख्यमंत्री सहित एनडीए शासित राज्यों के मुख्यमंत्रियों की उपस्थिति में एक भव्य समारोह में मुख्यमंत्री पद की शपथ लेकर फडणवीस ने इस तथ्य को अब पूरी तरह से स्थापित कर दिया है कि भाजपा राज्य में बड़े भाई की भूमिका में ही रहेगी। मशहूर उद्योगपत्तियों और शाहरुख खान, सलमान खान और संजय दत्त सहित अनगिनत फिल्मों सितारों की मौजूदगी में शानदार और भव्य अंदाज में शपथ लेकर देवेंद्र फडणवीस ने यह संदेश भी दे दिया कि देश का ताकतवर तबका उनके साथ है और वह भविष्य में बड़ी भूमिका निभाने को तैयार है। लेकिन इस सबके बीच शिवसेना नेता एकनाथ शिंदे के रूठने-मनाने के खेल को लेकर कई तरह के सवाल उठ रहे है। अब यह पूछा जा रहा है कि क्या वाकई एकनाथ शिंदे मुख्यमंत्री नहीं बनाए जाने से इतने नाराज हो गए थे कि बैठक छोड़कर अपने गांव चले गए ? महाराष्ट्र विधानसभा के नंबर और भाजपा के सीटों की संख्या पता होने के बावजूद क्या वाकई शिंदे यह मान कर चल रहे थे कि भाजपा पिछली बार की तरह इस बार भी उन्हें मुख्यमंत्री बना देगी ? या इसके पीछे कहानी कुछ और ही है ? दरअसल, नाराजगी का यह प्रदर्शन करना एकनाथ शिंदे की चाहत और इच्छा से कहीं ज्यादा उनकी मजबूरी बन गई थी। दरअसल, शिवसेना को तोड़ कर भाजपा के साथ आते समय एकनाथ शिंदे ने उद्धव ठाकरे पर इसी तरह के आरोप लगाए थे कि वह दिल्ली दरबार के आगे झुक गए हैं और बालासाहेब ठाकरे की विरासत का अपमान कर रहे हैं। लेकिन इस बार वही स्थिति शिंदे साहब की खुद की बन गई थी। महाराष्ट्र की जनता में और खासकर शिवसैनिकों में यह संदेश जा रहा था कि एकनाथ शिंदे भी दिल्ली दरबार के आगे झुक गए हैं, बालासाहेब ठाकरे की विरासत का अपमान कर रहे हैं और उद्धव ठाकरे की तरह ही अपने बेटे को आगे कर परिवारवाद की राजनीति कर रहे हैं। एकनाथ शिंदे को इस बात का भी अहसास बखूबी हो गया था कि अगर यह बात महाराष्ट्र की जनता और शिवसैनिकों के मन में घर कर गई तो उनकी पार्टी टूट भी सकती है। विधानसभा चुनाव में बुरी तरह से हारने के बाद उद्धव ठाकरे इसी तरह के मौके की तलाश में है। शिवसेना को बचाने और अपने साख की रक्षा करने के लिए एकनाथ शिंदे ने नाराजगी वाले भारतीय राजनीति के उसी पुराने दांव को एक बार फिर से खेल दिया। इससे जनता में यह संदेश भी चला गया कि एकनाथ शिंदे ने बहादुरी के साथ दिल्ली दरबार से लड़ाई की, दिलेरी के साथ अमित शाह के सामने अपनी शर्तें रखी लेकिन शिवसैनिकों के मनाने के बाद महाराष्ट्र की जनता के हित मे बड़ा त्याग करते हुए मुख्यमंत्री की बजाय उपमुख्यमंत्री बनना स्वीकार कर लिया। हालांकि फडणवीस सरकार में उपमुख्यमंत्री बनने के बाद भी एकनाथ शिंदे के सामने शिवसेना को बचाने की चुनौती बनी ही रहेगी। उद्धव ठाकरे या उनके बेटे आदित्य ठाकरे अगर मैदान में उतर कर आक्रामक राजनीति करने लगते हैं तो फिर उस स्थिति में एकनाथ शिंदे, उनके बेटे श्रीकांत शिंदे और शिवसेना के बड़े नेताओं को भी सामने आकर खुल कर बयानबाजी करनी ही होगी। हालांकि संख्या बल के कारण महायुति गठबंधन सरकार की स्थिरता पर इन बयानबाजियों की वजह से कोई फर्क तो नहीं पड़ेगा लेकिन हर बार एकनाथ शिंदे की इज्जत बचाने के लिए देवेंद्र फडणवीस को उनके घर जाना पड़ सकता है।

गीता में कहा गया है कि शुक्ल पक्ष में मरने वाला वापस लौट कर नहीं आता?

चारों वेदों का सार उपनिषद है और उपनिषदों का सार गीता है। गीता ही प्रमुख धर्मग्रंथ है। गीता में कहा गया है कि शुक्ल पक्ष में मृत्यु को प्राप्त व्यक्ति वापस नहीं लौटता और कृष्ण पक्ष में मृत्यु को प्राप्त व्यक्ति वापस लौट आता है अर्थात उसे फिर से जन्म लेना होता है। उल्लेखनीय है कि भीष्म ने अपना शरीर तब तक नहीं छोड़ा था जब तक की उत्तरायण का शुक्ल पक्ष नहीं आ गया था। लाखों लोग हैं जो शुक्ल पक्ष में मरते हैं और लाखों ऐसे लोग भी हैं जो कृष्ण पक्ष में मरते हैं तो क्या शुक्ल पक्ष में मरने वाले सभी लोगों को मोक्ष मिल जाता है? क्या वह वापस धरती पर नहीं लौटते हैं? दरअसल, गीता में यह बात उन लोगों के लिए कही गई है जो कि ध्यानी, योगी या अनन्य भक्त हैं। आम व्यक्ति को मरने के कुछ ही समय बाद दूसरा जन्म ले लेता है लेकिन जो पाप कर्मी है उसे दूसरा जन्म लेने में कठिनाई होती है। मतलब यह कि वह भूत, प्रेत या पिशाच योगी भोगने के बाद ही जन्म लेगा। यह भी हो सकता है कि वह मनुष्य योनी को छोड़कर निचले स्तर की योनी में चला जाए। मतलब यह कि उसका डिमोशन हो जाए। कृष्ण का शुक्ल और कृष्ण मार्ग का ज्ञान-

यत्र काले त्वनावत्तिमावृत्तिं चैव योगिनः।
प्रयाता यान्ति तं कालं वक्ष्यामि भरतर्षभ।

भावार्थ : हे अर्जुन! जिस काल में (यहाँ काल शब्द से मार्ग समझना चाहिए, क्योंकि आगे के श्लोकों में भगवान ने इसका नाम 'सृति', 'गति' ऐसा कहा है।) शरीर त्याग कर गए हुए योगीजन तो वापस न लौटने वाली गति को और जिस काल में गए हुए वापस लौटने वाली गति को ही प्राप्त होते हैं, उस काल को अर्थात दोनों मार्गों को कहूँगा।

अग्निर्ज्योतिरहः शुक्लः षण्मासा उत्तरायणम।
तत्र प्रयाता गच्छन्ति ब्रह्म ब्रह्मविदो जनाः।

भावार्थ : जिस मार्ग में ज्योतिर्मय अग्नि-अभिमानी देवता हैं, दिन का अभिमानी देवता है, शुक्ल पक्ष का अभिमानी देवता है और उत्तरायण के छः महीनों का अभिमानी देवता है, उस मार्ग में मरकर गए हुए ब्रह्मवेत्ता योगीजन उपयुक्त देवताओं द्वारा क्रम से ले जाए जाकर ब्रह्म को प्राप्त होते हैं।

धूमो रात्रिस्तथा कृष्ण षण्मासा दक्षिणायनम।
तत्र चान्द्रमसं ज्योतिर्योगी प्राप्य निवर्तते।

भावार्थ : जिस मार्ग में धूमाभिमानी देवता है, रात्रि अभिमानी देवता है तथा कृष्ण पक्ष का अभिमानी देवता है और दक्षिणायन के छः महीनों का अभिमानी देवता है, उस मार्ग में मरकर गया हुआ सकाम कर्म करने वाला योगी उपयुक्त देवताओं द्वारा क्रम से ले गया हुआ चंद्रमा की ज्योत को प्राप्त होकर स्वर्ग में अपने शुभ कर्मों का फल भोगकर वापस आता है।

शुक्ल कृष्णे गती ह्येते जगतः शाश्वते मते।
एकया यात्यनावृत्ति मन्ययावर्तते पुनः।

भावार्थ : क्योंकि जगत के ये दो प्रकार के- शुक्ल और कृष्ण अर्थात देवयान और पितृयान मार्ग सनातन माने गए हैं। इनमें एक द्वारा गया हुआ (अर्थात इसी अध्याय के श्लोक 24 के अनुसार अर्चिमार्ग से गया हुआ योगी।)- जिससे वापस नहीं लौटना पड़ता, उस परमगति को प्राप्त होता है और दूसरे के द्वारा गया हुआ (अर्थात इसी अध्याय के श्लोक 25 के अनुसार धूममार्ग से गया हुआ सकाम कर्मयोगी।) फिर वापस आता है अर्थात जन्म-मृत्यु को प्राप्त होता है।

क्या है कृष्ण और शुक्ल पक्ष?

हिन्दू माह में तीस दिन होते हैं। तीस दिनों को चंद्र के घट-बढ़ के अनुसार 15-15 तिथियों में बांटा गया है। चंद्र जब बढ़ने लगता है तो उस काल को शुक्ल पक्ष और जब घटने लगता है तो उस काल को कृष्ण पक्ष कहते हैं। शुक्ल पक्ष की अंतिम तिथि पूर्णिमा और कृष्ण पक्ष की अंतिम तिथि अमावस्या होती है। शुक्ल पक्ष को देवताओं का दिन और कृष्ण पक्ष को पितरों का दिन कहते हैं। इसी तरह उत्तरायण को देवताओं का काल और दक्षिणायन को पितरों का काल कहते हैं।

भगवान बुद्ध ने नहीं दिए थे इन प्रश्नों के उत्तर?

कहते हैं कि लव-कुश की पीढ़ी में शाक्य, शाक्य से शुद्धोधन और शुद्धोधन से सिद्धार्थ का जन्म हुआ। यह सिद्धार्थ ही आगे चलकर गौतम बुद्ध ने नाम से प्रसिद्ध हुए। गौतम बुद्ध के दर्शन में अनीश्वरवाद, अनात्मवाद और क्षणिकवाद को महत्व दिया जाता है। उनका मानना था कि संबुद्ध होना ही सत्य है। इसके लिए ही उन्होंने आष्टांगिक मार्ग बताएं हैं।

गौतम बुद्ध से उनके जीवन में लाखों प्रश्न पूछे गए लेकिन उनमें से 14 प्रश्नों के उन्होंने जवाब नहीं दिए। जब भगवान बुद्ध से जीव, जगत आदि के विषय में चौदह दार्शनिक प्रश्न किए जाते थे तो वे सदा मौन रह जाते थे। ये प्रसिद्ध चौदह प्रश्न निम्नांकित हैं-

1-4 क्या लोक शाश्वत है? अथवा नहीं? अथवा दोनों? अथवा दोनों नहीं?
5-8 क्या जगत नाशवान है? अथवा नहीं? अथवा दोनों? अथवा दोनों नहीं?
9-11. तथागत देह त्याग के बाद भी विद्यमान रहते हैं? अथवा नहीं? अथवा दोनों? अथवा दोनों नहीं?
11-14 क्या जीव और शरीर एक हैं? अथवा भिन्न?
14 अव्याकृत प्रश्न : बौद्ध धर्म में इन प्रश्नों को अव्याकृत कहा गया है। अव्याकृत का अर्थ है जो व्याकरण-सम्मत नहीं है।

क्यों उत्तर नहीं दिया

उक्त प्रश्न पर बुद्ध मौन रह गए। इसका तात्पर्य यह नहीं कि वे इनका उत्तर नहीं जानते थे। उनका मौन केवल यही सूचित करता है कि यह व्याकरण-सम्मत नहीं थे। इनसे जीवन का किसी भी प्रकार से भला नहीं होता। उक्त प्रश्नों के पक्ष या विपक्ष में दोनों के ही प्रमाण या तर्क जुटाए जा सकते हैं। इन्हें किसी भी तरह से सत्य या असत्य सिद्ध किया जा सकता है। यह पारमार्थिक दृष्टि से व्यर्थ है।

जानिए हिन्दू देवता पूषन देव को

पूषन एक वैदिक देवता है। पूषन वह देवता हैं जो विवाह के संचालन में मदद करते, सुरक्षित यात्रा प्रदान करते और उन दिलों में वास करते हैं जो पशुओं को भोजन खिलाते हैं। वह हमारे कर्मों के अनुसार वे फल देते हैं। वह आत्माओं को दूसरे संसार की यात्रा करने के लिए पथप्रदर्शन करते हैं। वह लोगों की मृत्यु के समय के दौरान अपनी सुंदर उपस्थिति दिखाकर उनके भय को दूर करते हैं। वह तीर्थ यात्रियों को चोरों और जानवरों से बचाते हैं और लोगों को दुश्मनों, दुर्घटनाओं और अप्राकृतिक मृत्यु से बचाकर लोगों को दिव्य पथ पर ले जाते हैं। वह देने वाले देवता भी हैं जो हमरे जीवन में धन, स्वास्थ और समृद्धि देते हैं। जब हम एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा करते हैं, तो वह हमारे सामान की सुरक्षा भी करते हैं। वह हमारे दिमाग में बुरे विचारों को दूर करते हैं, काला जादू को दूर करते हैं और कई खतरनाक बीमारियों को ठीक करते हैं।

वह मुख्य रूप से सभी प्रकार की प्राकृतिक आपदाओं से लोगों को राहत देते हैं जो चक्रवात, बाढ़, भारी बारिश और सुनामी के कारण होती हैं। वह शांतिपूर्ण जीवन जीने के लिए, हमारे लिए सभी कार्य करते हैं। वह हमेशा उन भक्तों की देखभाल करते हैं जो किसी भी रूप में ईश्वर की पूजा करते हैं और चाहें दूसरे धर्म के लोग भी हो, लेकिन वे लोगों से केवल यही अपेक्षा रखते हैं कि वे भगवान की सच्ची भक्ति करें। यदि हमारे अंदर ईश्वर के लिए शुद्ध भक्ति है, तो वह हमारे पूर्व कर्मों के आधार पर हमरे जीवन में अच्छे काम करेंगे। वह हमारे बुरे कर्मों को कुछ हद तक कम करने और हमारे जीवन में अच्छे परिणाम देने की शक्ति भी रखते हैं लेकिन वह किसी व्यक्ति के पूरे भाग्य को नहीं बदल सकते हैं। उनका उल्लेख ऋग्वेद और प्राचीन पुराणों और धार्मिक ग्रंथों में भी मिलता है। वह यज्ञ में भाग भी लेते हैं। वह यज्ञ कर्ता और लोगों को आशीर्वाद देते हैं। वह विभिन्न बीमारियों जैसे खांसी, सर्दी, दमा, हृदय की समस्याओं और कई अन्य लंबे समय से चली आ रही बीमारियों से तेजी से राहत दिलाएंगे। वह लोगों को मानसिक विकार, मन में भ्रम, ऊर्जा की कमी, सुस्ती, आलस्य और मानसिक अस्थिरता से भी छुटकारा दिलाते हैं। विभिन्न होम का आयोजन करते समय उनका नाम कई बार दोहराया जाता है। उन्हें इंद्र, वरुण, अग्नि, वायु, सूर्य और चंद्र जैसे वैदिक देवताओं के समकक्ष माना जाता है। उसके पास अलौकिक शक्तियां हैं और आपकी पुकार सुनकर किसी भी क्षण किसी भी स्थान पर पहुंच जाएंगे। हम उसके नाम का बार-बार जाप कर सकते हैं, ताकि वह जीवन के हर पड़ाव में हमारे साथ हों। पुराणों में पूषन को 12 आदित्यों में से एक के रूप में वर्णित किया गया है और वे अदिति एवं कश्यप के पुत्र हैं। उनके भाई सूर्य, वरुण और इंद्र हैं। वह हमारे लिए एक अंगरक्षक के रूप में कार्य करते हैं और हमारे दैनिक जीवन में हमारी सभी इच्छाओं को पूरा करते हैं। यद्यपि वह अन्य देवताओं के समान नहीं जाने जाते हैं। वह वैदिक देवताओं में भी एक है और पृथ्वी पर लोगों की मदद करते हैं। वह भगवान इंद्र द्वारा दिए गए निर्देशों के अनुसार अपने कर्तव्यों को करते हैं और उसके लिए एक सहायक मित्र के रूप में भी कार्य करते हैं। वह अपने कर्तव्यों का सही ढंग से निर्वहन करने के लिए वायु, वरुण, सूर्य और चंद्र जैसे अन्य देवताओं के साथ भी परस्पर बातचीत करते हैं। वह कई ऋषियों द्वारा पूजे जाते हैं, और वे ऋषि उनसे आशीर्वाद लेते हैं। वह ऋषियों को उनकी तपस्या को सही तरीके से करने में मदद करते हैं और तपस्या करते समय उनके कारण हुई भूल को दूर करते हैं। सामान्य तौर पर, हम कह सकते हैं कि वह पूरी दुनिया के लिए मित्रवत हैं। आइए हम उनकी महिमा का गुणगान करें और धन्य हों।

श्रीकृष्ण का यह मंदिर मात्र 2 मिनट के लिए बंद होता है

केरल के कोट्टायम जिले में तिरुवेरपु या थिरुवरप्पु में भगवान श्रीकृष्ण का एक प्रसिद्ध और चमत्कारिक मंदिर है जिसे तिरुवरप्पु श्रीकृष्ण मंदिर कहते हैं। इस मंदिर के संबंध में कई तरह की किंवदंतियां जुड़ी हुई हैं। एक यह है कि जब भगवान श्रीकृष्ण ने कंस को मारा था तो उनको बहुत भूख लगने लगी थी। कहते हैं कि यहां की श्रीकृष्ण की मूर्ति को भूख बर्दाश्त नहीं होती है। 1,500 साल पुराने इस मंदिर की दूसरी खासियत यह है कि यह मंदिर 24 घंटे में से मात्र 2 मिनट के लिए ही बंद होता है और वह समय है- सुबह 1158 बजे से 1200 बजे तक। मंदिर 2 मिनट से ज्यादा बंद नहीं रख सकते। इसके लिए पुजारी को एक कुल्हाड़ी दी जाती है, क्योंकि मंदिर खोलते वक्त यदि देर हो तो वह कुल्हाड़ी से ताला तोड़ दे। दरवाजा खोलने के लिए चाबी दी जाती है, लेकिन यदि चाबी कहीं फंस जाए तो तुरंत कुल्हाड़ी का उपयोग करें।

इसके पीछे मान्यता है कि यहां भगवान कृष्ण हमेशा भूखे रहते हैं और वे जरा भी देर के लिए भूख बर्दाश्त नहीं कर पाते हैं। इसीलिए यदि चाबी के साथ दरवाजा खोलने में कोई देरी होती है, तो पुजारी को कुल्हाड़ी से दरवाजा खोलने की अनुमति दी जाती है। यहां कम से कम 10 बार नैवेद्यम चढ़ाया जाता है। अभिषेकम समाप्त होने के बाद स्वामी (श्रीकृष्ण) का सिर पहले सूख जाता है। तब नैवेद्यम चढ़ाया जाता है और फिर केवल उसका शरीर सूख जाता है। कहते हैं कि भगवान श्रीकृष्ण के सोने का समय 1158 बजे से दोपहर 1200 बजे तक ही है। केवल 2 मिनट! भक्तों के लिए यह मंदिर सुबह के लगभग 2 बजे खुलता है।

यह मंदिर ग्रहण के समय भी बंद नहीं होता है। शंकराचार्य के समय एक बार इस मंदिर को ग्रहण के समय बंद कर दिया गया था। बाद में जब दरवाजा खोला गया तो उन्होंने पाया कि स्वामी की कमर की पट्टी नीचे खिसक गई है। उस समय आए आदिशंकराचार्य ने बताया कि ऐसा इसलिए हुआ, क्योंकि भगवान श्रीकृष्ण बहुत भूखे थे, तब से यह मंदिर ग्रहण काल के दौरान भी बंद नहीं किया जाता है। कहते हैं कि जो भी यहां का थोड़ा भी प्रसाद ग्रहण कर लेते हैं, उसे ऐसा लगता है कि पेट भर गया। यहां से प्रसादम का सेवन किए बिना किसी भी भक्त को जाने की अनुमति नहीं है। हर दिन 1157 बजे (मंदिर को बंद करने से पहले) पुजारी जोर से पुकारता है कि क्या कोई भी यहां है जिसने प्रसाद नहीं लिया हो?

ऐसा भी कहा जाता है कि जो भी व्यक्ति एक बार यहां का प्रसाद ग्रहण कर लेता है, वह फिर जीवन में कभी भी भूखे नहीं रहता है। मतलब यह कि उसके जीवन में भोजन प्राप्त करने में कोई समस्या नहीं होती है। यहां अप्रैल के महीने में 10 दिनों तक वार्षिक उत्सव मनाया जाता है। त्योहार का मुख्य आकर्षण यह है कि यहां युवा कुंआरी लड़कियां समारोहों के दौरान दीप जलाती हैं। इस मंदिर के बारे में एक कथा यह भी प्रचलित है कि महाभारत काल में जब पांडव जंगल में रहते थे तो श्रीकृष्ण ने उन्हें 4 हाथ वाली अपनी प्रतिमा दी थी। जब पांडव जंगल से जाने लगे तो चेरथलाई लोगों ने यह मूर्ति उनसे ले ली। कुछ काल तक वे इसकी पूजा करते रहे लेकिन बाद में उन्होंने कुछ कारणों से इसे समुद्र में फेंक दिया। लंबे समय के बाद यह मूर्ति केरल के एक महान ऋषि को मिली, जब वे नाव से यात्रा कर रहे थे। कहते हैं कि जब उनकी नाव डूब रही थी, तब इस मूर्ति को लेकर कोई दिव्य पुरुष प्रकट हुआ और उसने यह मूर्ति उन्हें दी थी। इस मूर्ति को लाकर उन ऋषि ने उसे यहां स्थापित कर दिया। इस संबंध में और भी कहानियां प्रचलित हैं।

मार्गशीर्ष माह में पूजें शंख को जानिए पूजन सामग्री की सूची विधि एवं मंत्र

धर्म शास्त्रों के अनुसार सुख-सौभाग्य में वृद्धि के लिए शंख को अपने घर में स्थापित करना चाहिए। माना जाता है कि अगहन (मार्गशीर्ष) के महीने में शंख पूजन का विशेष महत्व है। अगहन के महीने में किसी भी शंख को भगवान श्रीकृष्ण का पंचजन्य शंख मान कर उसका पूजन-अर्चन करने से मनुष्य की समस्त इच्छाएं पूरी होती हैं। विष्णु पुराण के अनुसार समुद्र मंथन के दौरान प्राप्त हुए 14 रत्नों में से ये एक रत्न है शंख। प्रतिदिन घर में शंख पूजन करने से जीवन में कभी भी रुपए-पैसे, धन की कमी महसूस नहीं होती। इसके अलावा दक्षिणावर्ती शंख को लक्ष्मी स्वरूप कहा जाता है। इसके बिना लक्ष्मी जी की आराधना पूरी नहीं मानी जाती है। अगहन मास में खास तौर पर लक्ष्मी पूजन करते समय दक्षिणावर्ती शंख की पूजा अवश्य करनी चाहिए।

शंख पूजन सामग्री की सूची

*शंख *कुंमकुंम *चावल *जल का पात्र *कच्चा दूध
*एक स्वच्छ कपड़ा *एक तांबा या चांदी का पात्र (शंख रखने के लिए)
*सफेद पुष्प *इत्र *कपूर *केसर *अगरबत्ती
*दीया लगाने के लिए शुद्ध घी *भोग के लिए नैवेद्य *चांदी का वर्क आदि।

कैसे करें पूजन

- प्रातः काल में स्नान कर स्वच्छ धुले हुए वस्त्र धारण करें।
- पटिए पर एक पात्र में शंख रखें।
- अब उसे कच्चे दूध और जल से स्नान कराएं।
- अब स्वच्छ कपड़े से उसे पोंछें और उस पर चांदी का वर्क लगाएं।
- तत्पश्चात घी का दीया और अगरबत्ती जला लीजिए।
- अब शंख पर दूध-केसर के मिश्रित घोल से श्री एकाक्षरी मंत्र लिखें तथा उसे चांदी अथवा तांबा के पात्र में स्थापित कर दें।
- अब उपरोक्त शंख पूजन के मंत्र का जप करते हुए कुंमकुंम, चावल तथा इत्र अर्पित करके सफेद पुष्प चढ़ाएं।
- नैवेद्य का भोग लगाकर पूजन संपन्न करें।
- अगहन मास में निम्न मंत्र से शंख पूजा करनी चाहिए -

त्वं पुरा सागरोत्पन्न विष्णुना विधृतः करे।
निर्मितः सर्वदेवैश्च पाञ्चजन्य नमोस्तु ते।
तव नादेन जीमूता वित्रसन्ति सुरासुराः।
शशांकायुतदीप्ताभ पाञ्चजन्य नमोस्तुते।

राष्ट्रीय/अंतरराष्ट्रीय
प्रमुख समाचार

राहुल गांधी जॉर्ज सोरोस की भाषा बोलते हैं : गिरिराज सिंह

नईदिल्ली। केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह ने सोमवार को कांग्रेस नेता राहुल गांधी पर टुकड़े-टुकड़े गैंग का नेता बताया। उन्होंने सोनिया गांधी और राहुल गांधी पर देशद्रोह का आरोप लगाते हुए गंभीर आरोप लगाए और दावा किया कि वे जॉर्ज सोरोस के साथ मिले हुए हैं। उन्होंने कहा कि सोनिया गांधी और राहुल गांधी देशद्रोह करते हैं। जॉर्ज सोरोस के साथ मिलकर राहुल गांधी जॉर्ज सोरोस की भाषा बोलते हैं। जॉर्ज सोरोस उन लोगों को फंड देते हैं जो पार्टी विरोधी गतिविधियों में शामिल होते हैं। सोनिया गांधी और राहुल गांधी को जवाब देना चाहिए। राहुल गांधी टुकड़े-टुकड़े गैंग के नेता हैं। लोकसभा में कांग्रेस के सोरोस कनेक्शन का मुद्दा उठाने वाले बीजेपी सांसद निशिकांत दुबे को विपक्षी बेंचों की कड़ी आलोचना का सामना करना पड़ा है, लेकिन उनका कहना है कि लोगों को सच्चाई जानने का अधिकार है। उन्होंने कहा कि देश को कांग्रेस, विपक्षी दलों और अंतरराष्ट्रीय शक्तियों के बीच संबंधों के बारे में जानने का अधिकार है।

भाजपा ने राज्यसभा उपचुनाव के लिए उम्मीदवारों की घोषणा की

नईदिल्ली। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने सोमवार को राज्यसभा उपचुनाव के लिए अपने उम्मीदवारों की सूची जारी की। सूची में आंध्र प्रदेश, ओडिशा और हरियाणा के उम्मीदवारों के नाम शामिल हैं। भाजपा ने आंध्र प्रदेश से रयागा कृष्णैयाह, ओडिशा से सुजीत कुमार और हरियाणा से रेखा शर्मा पर दांव लगाया है। राष्ट्रीय महिला आयोग (एनसीडब्ल्यू) की अध्यक्ष रेखा शर्मा का कार्यकाल मंगलवार, 6 अगस्त को समाप्त हो गया था। उच्च सदन के लिए चुनाव 20 दिसंबर को होंगे और नतीजे भी उसी दिन घोषित किये जायेंगे. आंध्र प्रदेश, ओडिशा, पश्चिम बंगाल और हरियाणा राज्यसभा के लिए छह सदस्यों का चुनाव करेंगे। आंध्र प्रदेश में तीन, ओडिशा, पश्चिम बंगाल और हरियाणा में एक-एक सीट खाली थी। राज्य में सत्तारूढ़ बीजेपी के कृष्ण लाल पंवार ने राज्यसभा सीट से इस्तीफा दे दिया है. पंवार का कार्यकाल 1 अगस्त 2028 तक था। बीजेपी इस सीट को बरकरार रखने के लिए तैयार है।

आम आदमी पार्टी ने जारी की 20 उम्मीदवारों की दूसरी सूची

नईदिल्ली। आम आदमी पार्टी (आप) ने सोमवार को 20 उम्मीदवारों की दूसरी सूची जारी की। अरविंद केजरीवाल के नेतृत्व वाली पार्टी ने पूर्व उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया की सीट बदल दी, जो पटपड़गंज से विधायक हैं। अब वह जंगपुरा सीट से चुनाव लड़ेंगे। सिसोदिया की सीट पटपड़गंज से इस बार अवध ओझा को टिकट दिया गया है। आप ने कृष्णा नगर से विकास बग्गा, गांधी नगर से नवीन चौधरी (दीपू), शाहदरा से पद्मश्री जितेंद्र सिंह शंटी और मुस्तफाबाद से आदिल अहमद खान को टिकट दिया है। इसके अलावा देवली से प्रेम कुमार चौहान, त्रिलोकपुरी से अंजना पारछा पर भरोसा जताया है। इसमें नरेला से दिनेश भारद्वाज, मंगोलपुरी से राकेश जाटव धर्मरक्षक, तिमारपुर से सुरेंद्र पाल सिंह बिट्टू, आदर्श नगर से मुकेश गोयल, मुंडका से जसबीर कारला, रोहिणी से प्रदीप मित्तल, चांदनी चौक से पुनरदीप सिंह साहनी (सेबी), पटेल नगर से प्रवेश रतन, मादीपुर से राखी बिडला, जनकपुरी से प्रवीण कुमार, बिजवासन से सुरेंद्र भारद्वाज, पालम से जोगिंदर सोलंकी का नाम शामिल है।

दिल्ली के 40 स्कूलों को मिली बम से उड़ाने की धमकी

नईदिल्ली। दिल्ली के 40 से अधिक स्कूलों को मिले धमकी भरे ईमेल में 30,000 डॉलर की मांग की गई और भुगतान नहीं करने पर बम विस्फोट करने की धमकी दी गई। पुलिस ने कहा कि एहतियात के तौर पर बच्चों को घर भेज दिया गया है। दिल्ली के कई स्कूलों को सोमवार सुबह ईमेल के जरिए बम की धमकी मिली, आरके पुरम में दिल्ली पब्लिक स्कूल और पश्चिम विहार में जीडी गोयनका पब्लिक स्कूल ने सबसे पहले ईमेल के जरिए इसकी सूचना दी। सत्तारूढ़ आप ने सोमवार को दिल्ली के कई स्कूलों को मिली बम की धमकियों पर चिंता व्यक्त की और भाजपा के नेतृत्व वाले केंद्र पर शहर के निवासियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने में विफल रहने का आरोप लगाया। आम आदमी पार्टी (आप) सुप्रीमो अरविंद केजरीवाल ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा कि दिल्ली ने कानून-व्यवस्था की इतनी खराब स्थिति कभी नहीं देखी और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह से शहर के लोगों को जवाब देने की मांग की।

राहुल नार्वेकर दूसरी बार बने महाराष्ट्र विधानसभा अध्यक्ष

मुंबई। भाजपा विधायक राहुल नार्वेकर को महाराष्ट्र विधानसभा का निर्विरोध अध्यक्ष चुना गया। यह अध्यक्ष के रूप में उनके दूसरे कार्यकाल की शुरुआत है। उन्हें निर्विरोध चुना गया क्योंकि विपक्षी महा विकास अघाड़ी (एमवीए) ने अपना उम्मीदवार नहीं उतारा था। कोलाबा विधानसभा सीट से बीजेपी विधायक नार्वेकर ने अपना नामांकन पत्र दाखिल किया. वह 14वीं विधानसभा में ढाई साल तक स्पीकर रहे और 20 नवंबर के विधानसभा चुनाव में मुंबई की कोलाबा विधानसभा सीट से फिर से चुने गए। उनके चुनाव के बाद नई सरकार की ताकत साबित करने के लिए फ्लोर टेस्ट होगा. इसके बाद राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन राज्य विधानमंडल के दोनों सदनों के संयुक्त सत्र को संबोधित करेंगे। महाराष्ट्र विधानसभा अध्यक्ष के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान, नार्वेकर ने फैसला सुनाया था कि बाल ठाकरे द्वारा स्थापित पार्टी में विभाजन के बाद एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाली पार्टी वैध और असली शिवसेना थी।

अदाणी और जॉर्ज सोरोस मामले पर संसद में हंगामा

- राज्यसभा में अचानक होने लगी महाभारत और धृतराष्ट्र की बात

नई दिल्ली। संसद के शीतकालीन सत्र के 11वें दिन यानी सोमवार को भी लोकसभा और राज्यसभा में जोरदार हंगामा देखने को मिला। लोकसभा की कार्यवाही शुरू होते ही दोपहर 12 बजे तक के लिए स्थगित कर दी गई। वहीं राज्यसभा में भी नोकझोंक देखने को मिली। दोनों सदनों में अदाणी और जॉर्ज सोरोस-सोनिया गांधी के बीच सांठगांठ मामले पर हंगामा देखने को मिला। राज्यसभा में हंगामे के बीच विपक्ष की ओर से सदन चलाने की दुहाई दी जाती रही तो वहीं ट्रेजरी बेंच आक्रामक नजर आया। इसी बीच आम आदमी पार्टी के सांसद संजय सिंह ने जब परंपरा और पारित प्रस्ताव का हवाला देते हुए यह कहा कि सदन में प्रश्नकाल और शून्यकाल की कार्यवाही चलनी चाहिए, ऐसा हम चाहते हैं। इस पर सभापति जगदीप धनखड ने कुरुक्षेत्र दौरे का जिक्र करते हुए महाभारत के संजय का जिक्र कर मजाकिया अंदाज में जवाब दिया।

सभापति धनखड़ ने कहा, रविवार को मैं अंतरराष्ट्रीय गीता महोत्सव में शामिल होने के लिए कुरुक्षेत्र गया था और वहां मुझे संजय की याद आई। तब कैसे संजय ने पूरा महाभारत देखकर धृतराष्ट्र को सुनाया था। यहां भी संजय हैं और इन्होंने भी पांच दिन देखा है कि सदन की कार्यवाही को किस तरह से बाधित किया गया, चलने नहीं दिया गया। संजय सिंह इस बार वेल में नहीं आए लेकिन देखा है कि कैसे बार-बार सदन को स्थगित करा दिया गया।

इससे पहले आप सांसद संजय सिंह ने कहा, आपके समक्ष और इस सदन के समक्ष नेता सदन ने एक प्रस्ताव रखा कि शून्यकाल और प्रश्नकाल अनिवार्य रूप से चलना चाहिए, ताकि सत्ता पक्ष और विपक्ष के सारे सदस्य महत्वपूर्ण विषयों पर अपनी बात रख सकें।

सभापति धनखड़ ने आगे कहा कि सांसदों के इतने अहम मुद्दे लगे हैं। इस पर सदस्यों ने भी सहमति जताई कि बाधा ना डाली जाए। इस पर सभापति धनखड़ ने उन्हें टोका और कहा, सोचिए

मुझे कितनी पीड़ा होती होगी। जो आप बात कह रहे हैं उसे आप ही पहले भूल गए। किसी भी तरफ से रुकावट डाली जाए चाहें इधर से या उधर से मेरे दिल को चोट लगती है।

उन्होंने आगे कहा, हमने भारतीय संविधान को अपनाने की एक सदी की चौथी तिमाही में प्रवेश करके अपना वर्तमान सत्र शुरू किया है। पूरे सप्ताह सदन नहीं चल सका। किसी को भी सदन को बाधित नहीं करना चाहिए।

अदाणी मुद्दे पर संसद परिसर में विपक्षी गठबंधन का प्रदर्शन

विपक्षी गठबंधन इंडिया के नेताओं ने सोमवार को संसद परिसर के अंदर विरोध प्रदर्शन किया। उन्होंने अदाणी मुद्दे पर संयुक्त संसदीय जांच की भी मांग की। लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी, कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे अन्य सांसदों के साथ संसद के मकर द्वार के बाहर मोदी अदाणी एक है और हमें न्याय चाहिए के नारे भी लगाए। हालांकि, तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी), समाजवादी पार्टी (सपा) और आम आदमी पार्टी (आप) इस प्रदर्शन का हिस्सा नहीं थे। भाजपा का कहना है कि विपक्षी गठबंधन टूट रहा है।

विपक्षी गठबंधन के टूटने के भाजपा के दावों पर समाजवादी पार्टी (सपा) के नेता राम गोपाल यादव ने प्रतिक्रिया दी। उन्होंने कहा, विपक्षी गठबंधन में सब ठीक है। द्रमुक, शिवसेना (यूबीटी), आजेडी और राकांपा-एसपी के सांसद विरोध प्रदर्शन में शामिल हुए और नारेबाजी की। इसके साथ ही उन्होंने अदाणी मुद्दे पर चर्चा और जांच की मांग की। प्रदर्शनकारी सांसद संविधान सदन के सामने कतार में खड़े हो गए और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उद्योगपति गौतम अदाणी के खिलाफ नारे लगाए। शीतकालीन सत्र शुरू होने के बाद से ही अदाणी मुद्दे को लेकर विपक्ष का विरोध प्रदर्शन संसद परिसर के अंदर हो रहा है। कांग्रेस समेत अन्य विपक्षी पार्टियां इस मामले में संयुक्त संसदीय जांच की मांग कर रही है। कांग्रेस नेता राहुल गांधी अदाणी की गिरफ्तारी की मांग कर रहे हैं।

एमएसपी को लेकर संसद में कृषि मंत्री शिवराज सिंह ने कर दिया बड़ा ऐलान

केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने राज्यसभा में आश्वासन दिया कि नरेंद्र मोदी सरकार सभी कृषि उपज को न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) पर खरीदने के लिए प्रतिबद्ध है। कृषि मंत्री का बयान उस दिन आया जब किसानों ने मांगों के एक चार्टर के साथ दिल्ली तक मार्च किया, जिसमें फसलों के एमएसपी के लिए कानूनी गारंटी शामिल थी। चौहान ने कहा कि मैं आपके माध्यम से सदन को आश्वस्त करना चाहता हूं कि किसानों की सभी उपज न्यूनतम समर्थन मूल्य पर खरीदी जाएगी। यह मोदी सरकार है और मोदी की गारंटी को पूरा करने की गारंटी है।

कृषि मंत्री ने कहा कि एमएसपी तब दिया जाता है जब कोई फसल एमएसपी से कम दाम पर बेची जाती है। मैं आश्वस्त करना चाहता हूं कि किसानों का कल्याण हमारी प्रतिबद्धता है।

सोनिया-सोरोस में सांठगांठ के आरोपों पर रिजिजू का वार

संसद के अंदर और बाहर अदाणी मुद्दे और जॉर्ज सोरोस के साथ कांग्रेस पार्टी के रिश्तों पर लगातार हंगामा जारी है। जहां सोमवार को लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी समेत विपक्षी सांसदों ने अदाणी मामले को लेकर संसद परिसर में विरोध प्रदर्शन किया। वहीं भारत के खिलाफ भ्रामक प्रचार करने वाले जॉर्ज सोरोस के साथ कांग्रेस पार्टी के रिश्तों को लेकर भाजपा लगातार हमलवार है। इस बीच, केंद्रीय संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने इस मुद्दे को लेकर जोरदार हमला बोला। उन्होंने कहा कि देश के सामने कुछ मुद्दे हैं, जिन्हें राजनीतिक चश्मे से नहीं देखा जाना चाहिए। उन्होंने कांग्रेस और उसके कार्यकर्ताओं से भारत विरोधी ताकतों के खिलाफ एकजुट होकर लड़ने का आग्रह किया। किरेन रिजिजू ने कहा, मुझे लगता है कि देश के सामने कुछ मुद्दे हैं, जिन्हें राजनीतिक चश्मे से नहीं देखा जाना चाहिए। जॉर्ज सोरोस और उनके संबंध जो सामने आए हैं, हम इसे कांग्रेस पार्टी, राहुल गांधी से संबंधित मुद्दे के रूप में नहीं देखते हैं। हमें इस मुद्दे को गंभीरता से लेना चाहिए खासकर अगर यह भारत विरोधी ताकतों से संबंधित है। उन्होंने कहा, हम इसे पार्टी की राजनीति के रूप में नहीं देखते हैं। हमने कांग्रेस और अन्य दलों से कहा है कि हम 13 और 14 दिसंबर (लोकसभा में) और 16 और 17 दिसंबर (राज्यसभा में) को संविधान पर चर्चा करेंगे। मैं कांग्रेस पार्टी के नेताओं और उसके कार्यकर्ताओं से अपील करना चाहता हूं कि अगर उनके नेताओं के भी भारत विरोधी ताकतों से संबंध पाए जाते हैं, तो उन्हें भी अपनी आवाज उठानी चाहिए। हमें एकजुट होकर भारत विरोधी ताकतों के खिलाफ एकजुट होकर लड़ना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि सोनिया गांधी और जॉर्ज सोरोस के बीच सांठगांठ की जो बातें उजागर हुई है वो गंभीर हैं। केंद्रीय मंत्री ने कहा, जॉर्ज सोरोस मामले के बारे में जो रिपोर्ट सार्वजनिक तौर पर सामने आई हैं, उनमें आरोप गंभीर हैं। चाहे वह संसद का सदस्य हो या आम आदमी, सभी को देश के लिए काम करना चाहिए। हम एकजुट होने और भारत विरोधी ताकतों के खिलाफ लड़ने की अपील करते हैं। इंडिया ब्लॉक के बारे में पूछे जाने पर उन्होंने कहा, कांग्रेस और इंडिया गठबंधन में जो कुछ चल रहा है, हम उसमें हस्तक्षेप नहीं करना चाहते और न ही हमारा ऐसा कोई इरादा है। हालांकि, मैंने सुना है कि विपक्षी गठबंधन के भीतर के दलों ने राहुल गांधी के नेतृत्व को लेकर सवाल उठाए हैं।

राइजिंग राजस्थान समिट में बोले पीएम मोदी

रिफॉर्म, परफॉर्म, ट्रांसफॉर्म के मंत्र पर चलते हुए भारत का हो रहा विकास

जयपुर। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सोमवार को जयपुर में 9 से 11 दिसंबर तक आयोजित होने वाले राइजिंग राजस्थान ग्लोबल इन्वेस्टमेंट समिट 2024 को संबोधित किया। उद्घाटन समारोह के दौरान उन्होंने कहा कि दुनिया का हर निवेशक भारत को लेकर उत्साहित है। मोदी ने कहा कि राजस्थान की विकास यात्रा में आज एक और अहम दिन है। देश और दुनिया से बड़ी संख्या में प्रतिनिधि और निवेशक यहां पधारे हैं। यहां उद्योग जगत के भी अनेक साथी मौजूद हैं। राइजिंग राजस्थान ग्लोबल इन्वेस्टमेंट समिट में आप सभी का अभिनंदन है। मैं राजस्थान की भाजपा सरकार को इस शानदार आयोजन के लिए बधाई दूंगा।

मोदी ने आगे कहा कि आज दुनिया का हर विशेषज्ञ, हर निवेशक भारत को लेकर बहुत ही उत्साहित है। रिफॉर्म, परफॉर्म, ट्रांसफॉर्म के मंत्र पर चलते हुए भारत ने जो विकास किया है, वो हर क्षेत्र में नजर आ रहा है। उन्होंने कहा कि आजादी के बाद, सात दशक में भारत, दुनिया की 11वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन पाया था, जबकि पिछले 10 वर्ष में भारत 11वीं अर्थव्यवस्था से दुनिया की 5वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बना है। लोकतंत्र, जनसांख्यिकी, डिजिटल डेटा और वितरण की शक्ति क्या होती है, ये भारत की सफलता से पता चलता है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत में जैसे डायवर्स देश में लोकतंत्र इतनी सशक्त हो रही है, ये अपने आप में बहुत बड़ी उपलब्धि है। उन्होंने कहा कि डेमोक्रेटिक रहते हुए मानवता का कल्याण, भारत का मूल चरित्र है। आज भारत की जनता अपने डेमोक्रेटिक हक के माध्यम से भारत में स्थिर सरकार के लिए वोट कर रही है। मोदी ने कहा कि भारत के इस पुरातन संस्कार को हमारी युवा शक्ति आगे बढ़ा रही है। आने वाले अनेक वर्षों तक भारत, दुनिया के सबसे युवा देशों में रहने वाला है। भारत में युवाओं का सबसे बड़ा पुल होने के साथ ही सबसे बड़ा स्किल्ड युवा वर्ग भी होगा। इसके लिए सरकार एक के बाद एक कई फैसले ले रही है।

नरेंद्र मोदी ने कहा कि ये सदी तकनीक-संचालित, डेटा-संचालित सदी है। भारत ने दिखाया है कि कैसे डिजिटल प्रौद्योगिकी का लोकतंत्रीकरण हर क्षेत्र, हर वर्ग को फायदा पहुंचा रहा है। उन्होंने कहा कि आजादी के बाद की सरकारों की प्राथमिकता न देश का विकास था और न ही देश की विरासत और इसका नुकसान राजस्थान उठा चुका है। आज हमारी सरकार विकास भी, विरासत भी के मंत्र पर चल रही है और इसका बहुत बड़ा लाभ हमारे राजस्थान को हो रहा है।

खेल
प्रमुख समाचार

रोहित की कप्तानी में लगातार चौथा टेस्ट हारा भारत

नई दिल्ली। रोहित शर्मा की कप्तानी में भारत को करारी हार का सामना करना पड़ा। उनके नेतृत्व में टीम इंडिया को लगातार चौथे मैच में शिकस्त मिली। इससे पहले भारत ने ऑस्ट्रेलिया को पर्थ टेस्ट में 295 रन से हराया था, लेकिन इस मैच में जसप्रीत बुमराह ने भारतीय टीम का नेतृत्व किया था। वहीं, पिछले महीने टीम को न्यूजीलैंड के खिलाफ 0-3 से हार मिली थी। उससे पहले बांग्लादेश ने भी टीम को उनके घर में हराकर सभी को हैरान किया था।

भारत की इस हार के बाद अब रोहित शर्मा को पूर्व दिग्गजों की आलोचनाओं का सामना करना पड़ रहा है। रविवार को भारत की 10 विकेट से हार के बाद पूर्व कप्तान सुनील गावस्कर ने कहा कि भारतीय क्रिकेटरों को दो अतिरिक्त दिन अभ्यास करना चाहिए। उन्होंने कहा, अब इस सीरीज को तीन मैचों की सीरीज के रूप में देखें। भूल जाइए कि यह पांच टेस्ट मैचों की सीरीज थी। मैं चाहता हूं कि यह भारतीय टीम अगले कुछ दिनों का उपयोग अभ्यास के लिए करे। यह बहुत महत्वपूर्ण है। आप अपने होटल के कमरे में या कहीं भी नहीं बैठ सकते क्योंकि आप यहां क्रिकेट खेलने आए हैं। आपको पूरे दिन अभ्यास करने की जरूरत नहीं है। आप सुबह या दोपहर में एक सत्र का अभ्यास कर सकते हैं, जो भी समय आप चुनते हैं, लेकिन इन दिनों को बर्बाद न करें। अगर टेस्ट मैच पांच दिन तक चलता तो आप यहां टेस्ट मैच खेल रहे होते। इसके अलावा भारतीय टीम के पूर्व मुख्य कोच रवि शास्त्री ने रोहित शर्मा की कप्तानी पर सवाल उठाए। उन्होंने कहा कि मैं उसे बल्लेबाजी में शीर्ष पर देखना चाहता हूं। यहीं पर वह आक्रामक और एक्सप्रेसिव हो सकता है। बस उसकी शारीरिक भाषा देखकर लगा कि वह कुछ ज्यादा ही दब्बू है। फैक्ट ये है कि उसने रन नहीं बनाए, मुझे नहीं लगता कि मैदान पर पर्याप्त रन थे। मैं बस उन्हें और अधिक एनिमेटेड देखना चाहता था।

आर्थिक/वाणिज्य/विज्ञान/
प्रमुख समाचार

लाल रंग में क्लोज हुआ बाजार सेंसेक्स 200 अंक टूटा

नईदिल्ली। वैश्विक बाजारों में मजबूती के बावजूद भारतीय शेयर बाजार सोमवार (9 दिसंबर) को भारी उठापटक के बाद लाल निशान में बंद हुए। लगातार दूसरे ट्रेडिंग सेशन में मार्केट गिरावट में रही। इंडेक्स हैवी वेट रिलायंस इंडस्ट्रीज और एफएमसीजी स्टॉक्स में गिरावट ने बाजार को नीचे खींचा। तीस शेयरों वाला बीएसई सेंसेक्स आज 100 से ज्यादा अंक की गिरावट के साथ 81,602.58 अंक पर खुला। कारोबार के दौरान यह हरे और लाल निशान के बीच झूलता रहा। हालांकि, दूसरे हाफ में सेंसेक्स ज्यादातर समय गिरावट में ही रहा। अंत में सेंसेक्स 200.66 अंक या 0.25% गिरकर 81,508.46 पर बंद हुआ। सेंसेक्स की 30 कंपनियों में हिंदुस्तान यूनिलीवर का शेयर 3 प्रतिशत से ज्यादा गिरकर बंद हुआ। टाटा मोटर्स, एक्सिस बैंक, नेस्ले इंडिया, एशियन पेंट्स, आईटीसी, रिलायंस इंडस्ट्रीज, महिंद्रा एंड महिंद्रा, स्टेट बैंक के शेयर प्रमुख रूप से गिरावट में बंद हुए।

राजस्थान में 1 लाख करोड़ रू. का निवेश करेगा वेदांत ग्रुप

जयपुर। वेदांत ग्रुप के चेयरमैन अनिल अग्रवाल ने राजस्थान में 1 लाख करोड़ रुपये की इन्वेस्टमेंट करने की घोषणा की है। यह इन्वेस्टमेंट राज्य में जिंक और तेल के प्रोडक्शन को बढ़ावा देने के लिए की जायेगी। ग्रुप ने उम्मीद जताई है कि इस निवेश से राजस्थान में 5 लाख से ज्यादा लोगों को जॉब्स मिलेंगी। अग्रवाल ने निवेश का एलान करते कहा, हिंदुस्तान जिंक ने अब तक रू. 1 लाख करोड़ का निवेश किया है। सालाना रू. 50,000 करोड़ का योगदान सरकारी खजाने में होता है, जिसमें से रू.10,000 करोड़ राजस्थान सरकार को जाता है। उन्होंने राजस्थान वैश्विक निवेश शिखर सम्मेलन 2024 में कहा कि वेदांत ग्रुप इस निवेश को तीन गुना बढ़ाएगा और इसके लिए काम चल रहा है। इस निवेश से राज्य में 5 लाख लोगों को नौकरियों के अवसर मिलेंगे।

शॉपिंग मॉल्स में जोर पकड़ रही दूकानों की मांग

नईदिल्ली। मॉल में शॉप की मांग जोर पकड़ रही है। जिससे मॉल वेकैंसी 6 साल में सबसे कम रह गई। कोरोना का असर खत्म होने के बाद मॉल वेकैंसी में काफी गिरावट दर्ज की गई है। कोरोना के असर वाले दोनों साल की तुलना में मॉल वेकैंसी घटकर अब लगभग आधी रह गई है। रिटेलर और ब्रांड मॉल में छोटे स्पेस को प्राथमिकता दे रहे हैं। संपति सलाहकार फर्म एनारॉक की रिपोर्ट के मुताबिक इस साल की पहली छमाही में मॉल वेकैंसी 8.3 फीसदी दर्ज की गए। जो पिछले साल की पूरी वेकैंसी 9 फीसदी से कम है। रिपोर्ट के अनुसार इस साल की पहली छमाही में देश के प्रमुख शहरों में मॉल में 31 लाख वर्ग फुट जगह लीज पर ली गई है। एनारॉक ग्रुप के सीईओ और एमडी (रिटेल, इंडस्ट्रियल और लॉजिस्टिक्स) अनुज केजरीवाल कहते हैं कि सीमित आपूर्ति और मजबूत लीजिंग के कारण प्रमुख मॉल में वेकैंसी लगातार घट रही हैं।

नवंबर में टू-व्हीलर्स सेल्स 16 प्रतिशत बढ़ी

नईदिल्ली। देश में टू-व्हीलर्स की अच्छी डिमांड के चलते वाहनों की खुदरा बिक्री नवंबर, 2024 के दौरान सालाना आधार पर 11.21 प्रतिशत बढ़कर 32,08,719 यूनिट हो गई। पिछले साल इसी महीने में देशभर में वाहनों की कुल बिक्री 28,85,317 यूनिट थी। फेडरेशन ऑफ ऑटोमोबाइल डीलर्स एसोसिएशन ने सोमवार को बयान में कहा, पिछले महीने टू-व्हीलर्स की रिटेल बिक्री 15.8 प्रतिशत बढ़कर 26,15,953 यूनिट रही। नवंबर 2023 में यह 22,58,970 यूनिट थी। हालांकि, कारों की बिक्री में करीब 14 फीसदी की गिरावट दर्ज की गई। दूसरी ओर, पैसेंजर व्हीकल्स की रिटेल बिक्री 13.72 प्रतिशत घटकर 3,21,943 यूनिट रह गई। एक साल पहले इसी महीने में यह 3,73,140 यूनिट थी। इसकी वजह पीवी सेगमेंट के समक्ष पेश हो रहीं विभिन्न चुनौतियां रहीं।

खेती मजबूत, तो अर्थव्यवस्था सुदृढ़

अशोक भगत

कृषि भारत की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं द्वारा चलाये जा रहे विभिन्न कार्यक्रमों एवं प्रयासों से कृषि को राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में गरिमापूर्ण दर्जा मिला है। आंकड़े बताते हैं कि कृषि क्षेत्र में लगभग 64 प्रतिशत श्रमिकों को रोजगार मिला हुआ है। वर्ष 1950-51 में सकल घरेलू उत्पाद यानी जीडीपी में कृषि का हिस्सा 59.2 प्रतिशत था, जो 1990-91 में घटकर 36.4 फीसदी और 1982-83 में 34.9 प्रतिशत पर आ गया। यह प्रतिशत लगातार घट रहा है, पर आज भी सकल निर्यात में कृषि अपनी हिस्सेदारी बनाये हुए है।

एक स्वतंत्र एजेंसी के आंकड़े बताते हैं कि देश में राष्ट्रीय आय का लगभग 28 फीसदी कृषि से प्राप्त होता है। लगभग 70 प्रतिशत आबादी अपनी आजीविका के लिए प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से कृषि पर निर्भर है। गैर कृषि-क्षेत्रों में बड़ी मात्रा में उपभोक्ता वस्तुओं एवं बहुतायत उद्योगों को कच्चा माल इसी क्षेत्र से प्राप्त हो रहा है। ऐसे में इस क्षेत्र को नजरअंदाज करना देश की अर्थव्यवस्था के साथ खिलवाड़ करने जैसा है। रोजगार और अर्थव्यवस्था की दृष्टि से कृषि क्षेत्र में अपार संभावनाएं हैं। सबसे बड़ा कृषि योग्य भू-भाग भारत के पास है। देश की जलवायु ऐसी है कि वर्ष में तीन फसलें आसानी से ली जा सकती हैं। आज दुनिया के देश मोटे अनाज की ओर बढ़ रहे हैं, जबकि भारत उसके उत्पादन के लिए उपयुक्त देश है। कोरोना के समय देश के सारे उद्योग बंद हो गये थे और शहरों में काम करने वाले श्रमिक बड़ी संख्या में बेरोजगार हो गये थे। तब खेती ने ही उन श्रमिकों को आश्रय दिया था। इससे यह तो साबित हो गया कि देश में खेती को यदि दुरुस्त किया जाये, तो यह हमारे लिए न

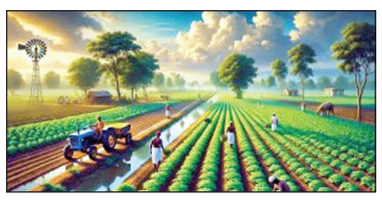

केवल रोजगार का अवसर प्रदान करेगा, अपितु हमारी अर्थव्यवस्था को भी बेहतर तरीके से मजबूत बनायेगा।

एक अनुमान के अनुसार, देश में लगभग दो हजार लाख हेक्टेयर भूमि खेती के योग्य है। इसमें से केवल 1,200 से लेकर 1,500 लाख हेक्टेयर भूमि का ही हम उपयोग कर पा रहे हैं। उसमें से भी हमारे पास लगभग 40 प्रतिशत भूमि ही सिंचित है। बाकी 60 प्रतिशत भूमि पर भगवान भरोसे खेती होती है। पड़ोसी देश चीन की बात की जाये, तो वहां जब साम्यवादी सरकार आयी, तो सबसे पहले उसने खेती की आधारभूत संरचना विकसित की। अमेरिका के दूरद्रष्टा राष्ट्रपति रूजवेल्ट ने भी खेती को विकास का आधार बनाया था।

दुनिया की तेजी से बढ़ रही अर्थव्यवस्थाओं में से एक वियतनाम ने भी अपनी खेती को विकास का आधार बनाया है। अपने यहां खेती की ओर देखा तो गया है, लेकिन आज भी आधारभूत संरचना की दृष्टि से खेती का क्षेत्र पिछड़ा हुआ है। आजादी के बाद सरकारों ने इस दिशा में सोचा जरूर, लेकिन जिस गहराई के साथ सोचना चाहिए, वैसा यहां नहीं हुआ है। विगत कुछ वर्षों से ग्रामीण अर्थव्यवस्था, खेती और ग्रामीण आधारभूत संरचना पर ध्यान दिया जा रहा है, पर अब भी बहुत कुछ करने की जरूरत है। हालांकि नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार ने खेती और खेती पर आधारित उद्योग को बढ़ावा देने की रणनीति बनायी है। इसका असर भी देखने को मिल रहा है। जैसे कि ग्रामीण क्षेत्रों से हो रहे पलायन में कमी आयी है। ग्रामीण अर्थव्यवस्था सुधरी है, लेकिन अब भी शहरों की तुलना में गांव कमजोर हैं। इसलिए सरकार को सबसे पहले खेती के लिए सिंचाई की बड़ी आधारभूत संरचना खड़ी करनी होगी। सिंचाई का सबसे बड़ा आधार वर्षा जल है। झारखंड जैसे पठारी राज्यों का 90 प्रतिशत जल बह कर समुद्र में चला जाता है। इससे हमारी उपजाऊ मिट्टी भी बह जाती है। इसका बड़ा नुकसान हो रहा है। हम केवल 20 से 25 प्रतिशत वर्षा जल का ही उपयोग कर पाते हैं। जबकि इसका बूंद-बूंद संरक्षित करने की जरूरत है। हमारी नदियां मर रही हैं। उन्हें जीवित करना होगा। भूमिगत जल का जो स्तर गिर रहा है, उसे भी संभालने की आवश्यकता है। खेती की आधारभूत संरचना तैयार करने के लिए कृषि क्षेत्र में बड़े निवेश की जरूरत है।

प्रदेश में 7 आवासीय परियोजनाओं का हुआ शुभारम्भ

आवासीय परियोजनाओं में 340 करोड़ की लागत से 1650 भवनों का होगा निर्माण

रायपुर। छत्तीसगढ़ सरकार ने अटल विहार योजना अंतर्गत वृहद स्तर पर आवास निर्माण का महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किया है। इस योजना के अतंर्गत प्रदेश के विभिन्न जिलों में 4450 एकड़ भूमि में निर्माण कार्य किया जाएगा। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने इस योजना के तहत 7 आवासीय परियोजनाओं का शुभारंभ किया है, जिनकी कुल लागत 340 करोड़ रूपए है। इन परियोजनाओं में 1650 भवनों का निर्माण होगा। छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मंडल के आयुक्त श्री कुंदन कुमार ने आज शाम प्रेस कॉन्फ्रेंस लेकर इस आशय की जानकारी दी।

छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मंडल के आयुक्त ने बताया कि योजना के तहत शासन द्वारा हाउसिंग बोर्ड को एक रुपये प्रति वर्गफुट की दर पर भूमि आबंटित की जा रही है। वहीं राज्य शासन द्वारा ईडब्ल्यूएस परिवार को 80 हजार रूपए और एल.आई.जी परिवार को 40 हजार रूपए का अनुदान दिया जाएगा। श्री कुमार ने बताया कि इन परियोजनाओं से निम्न आय वर्ग को काफी फायदा मिलेगा। इन परियोजनाओं के लिए कोई भी व्यक्ति विभागीय वेबसाईट का अवलोकन कर अपना पंजीयन करा सकते हैं।

आयुक्त कुन्दन कुमार ने बताया कि इन परियोजनाओं में भुरकोनी रायपुर में 61 करोड़, कोकड़ापारा बीजापुर में 30 करोड़, खस्तुली धमतरी में 26 करोड़, सिहाद (भखारा) धमतरी में 27 करोड़, पथर्रा राजिम में 62 करोड़, पुलगांव दुर्ग में 104 करोड़ तथा गुरूर बालोद में 30 करोड़ रूपए की लागत आएगी। अटल विहार योजना का उद्देश्य प्रत्येक नागरिक को किफायती एवं गुणवत्तायुक्त आवासीय सुविधा प्रदान करना है।

इस योजना में निम्न एवं कमजोर आय वर्ग के लोगों को ज्यादा से ज्यादा भवनों का निर्माण कर आबंटन किया जाएगा। यह योजना प्रदेश के विकास में मील का पत्थर साबित होगी।

प्रदेश में राजधानी से लेकर दूरस्थ अंचलो जैसे-बीजापुर, सरगुजा, जशपुर तक जरूरतमंदों को किफायती दर पर आवास उपलब्ध कराने का जो दायित्व है उसे पूरा करने के लिए हम सभी कृत संकल्पित है।

राष्ट्रपति मुर्मु कल राष्ट्रीय पंचायत पुरस्कार विजेताओं को बधाई देंगी

महिला नेतृत्व वाली पंचायतें चमकीं

राष्ट्रीय पंचायत पुरस्कार विजेताओं में 42% का नेतृत्व महिलाएं कर रही हैं

रायपुर। पंचायती राज मंत्रालय ने मूल्यांकन वर्ष 2022-2023 के लिए प्रतिष्ठित राष्ट्रीय पंचायत पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं की घोषणा की है। ये पुरस्कार उत्कृष्टता के एक मानक के रूप में जमीनी स्तर पर समावेशी और सतत विकास को आगे बढ़ाने में देश भर में पंचायती राज संस्थानों के अनुकरणीय प्रयासों को स्वीकार करते हैं। राष्ट्रीय पंचायत पुरस्कार 2024 के लिए सम्मान समारोह 11 दिसंबर, 2024 को विज्ञान भवन, नई दिल्ली में होगा, जहाँ माननीय राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु पुरस्कार विजेताओं/प्राप्तकर्ताओं को पुरस्कार प्रदान करेंगी। इस वर्ष, विभिन्न श्रेणियों के तहत 45 पुरस्कार विजेताओं का चयन किया गया है, जो जमीनी स्तर पर शासन और सामुदायिक विकास में उपलब्धियों के व्यापक फलक को दर्शाता है । श्रेणियों में दीन दयाल उपाध्याय पंचायत सतत विकास पुरस्कार, नानाजी देशमुख सर्वोत्तम पंचायत सतत विकास पुरस्कार, ग्राम ऊर्जा स्वराज विशेष पंचायत पुरस्कार, कार्बन न्यूट्रल विशेष पंचायत पुरस्कार और पंचायत क्षमता निर्माण सर्वोत्तम संस्थान पुरस्कार शामिल हैं। ये पुरस्कार गरीबी उन्मूलन, स्वास्थ्य, बाल कल्याण, जल पर्याप्तता, स्वच्छता, बुनियादी ढांचे के विकास, सामाजिक न्याय, महिला सशक्तिकरण और जलवायु स्थिरता जैसे प्रमुख क्षेत्रों में उपलब्धियों को मान्यता देते हैं। इस वर्ष प्रतियोगिता में 1.94 लाख ग्राम पंचायतों ने भाग लिया। पुरस्कार प्राप्त करने वाली 42 पंचायतों में से 42% पंचायतें महिला नेतृत्व वाली हैं। सावधानीपूर्वक चयन प्रक्रिया में ब्लॉक स्तर से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक 5 विभिन्न समितियों द्वारा सतत विकास लक्ष्यों (एलएसडीजी) के स्थानीयकरण के साथ जुड़े विभिन्न विषयगत क्षेत्रों में पंचायतों के प्रदर्शन का गहन मूल्यांकन शामिल था। यह प्रक्रिया पारदर्शिता को बढ़ावा देने और पंचायती राज संस्थाओं (पीआरआई)/ग्रामीण स्थानीय निकायों (आरएलबी) के बीच प्रतिस्पर्धात्मक भावना को प्रोत्साहित करने के लिए मंत्रालय की अटूट प्रतिबद्धता को उजागर करती है। यह घोषणा पंचायती राज संस्थाओं की सराहनीय उपलब्धियों का जश्न मनाने का मंच तैयार करती है। यह घोषणा सुदृढ़ और जीवंत ग्रामीण समुदायों को आकार देने में पंचायतों की भूमिका पर भी जोर देती है। यह प्रतिष्ठा न केवल इन संस्थाओं द्वारा किए गए असाधारण कार्यों की मान्यता के रूप में कार्य करती है, बल्कि इसका उद्देश्य अन्य पंचायतों को अपने क्षेत्रों में इन सर्वोत्तम प्रथाओं को दोहराने के लिए प्रेरित करना भी है।

छत्तीसगढ के हरदीभाटा गांव को सामाजिक रुप से न्यायसंगत एवं सामाजिक रुप से संरक्षित पंचायत पुरस्कार घोषित

इस श्रेणी में छत्तीसगढ के धमतरी जिला के नागरी ब्लाक के हरदीभाटा गांव को दिन दयाल उपाध्याय पंचायत सतत विकास के अंतर्गत सामाजिक रुपसे न्यायसंगत एवं सामाजिक रुप से संरक्षित पंचायत के तौर पर पुरस्कार घोषित हुआ है।

हरित कुंभ में एक थाली एक थैला अभियान

रायपुर। पर्यावरण संरक्षण गतिविधि राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के द्वारा आगामी 13 जनवरी 2025 से प्रयागराज में आयोजित होने वाले महाकुंभ में प्लास्टिक और डिस्पोजल के प्रयोग को पूर्ण रूप से बंद कर हरित कुंभ के प्रतीक के रूप में मनाये जाने के संकल्प के साथ कुंभ के आयोजन स्थल पर भेजने के लिए प्रत्येक घर से एक थाली एक थैला संकलन का अभियान देश भर में किया गया है। इस तारतम्य में मित्र राजेश अग्रवाल के नेतृत्व में श्रद्धालु जनो से प्राप्त 1000थाली और 1000 थैला भेंट करने के लिए राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रतिनिधियों को आमंत्रित किया गया जिसमें पं. धीरेन्द्र मिश्रा एवं श्रीमती प्राची मिश्रा उपस्थित हुए।

उन्हें वृन्दावन हाल में सभी सामग्री भेंट की गई । गणेश जी वंदना और पूजा अर्चना के बाद पं. धीरेन्द्र मिश्र ने आयोजन की विस्तृत जानकारी दी।

मेरी बात

✍ गिरीश पंकज

साहित्य में लोक विमर्श ज़रूरी

कल 'इंटेलेक्चुअल फोरम ऑफ़ छत्तीसगढ' नामक संस्था के शहर के कुछ राष्ट्रवादी बुद्धिजीवियों के बीच साहित्य में लोक विमर्श विषय पर मुझे बोलना था. मैंने विस्तार के साथ अपनी बात रखी और चिंता व्यक्ति की कि साहित्य में अब धीरे-धीरे खत्म होता जा रहा है. साहित्य का पूरा ध्यान अब नागर विमर्श तक सिमट गया है. लोगों का गांव से मोह भंग होता जा रहा है. गाय की जगह लोग कुत्ता पालने में रुचि रखते हैं. गाय की जगह 'गे' (समलैंगिता) पर बात करना आधुनिकता हो गई है. गांव में पहले हर दूसरे बच्चे के नाम के आगे पीछे राम शब्द जुड़ा रहता था लेकिन अब वह दौर भी धीरे-धीरे खत्म हो रहा है. हमारा भारतीय समाज लोकानुरागी रहा है. लोक उसकी आत्मा का हिस्सा रहा. लोक के आलोक में ही सदियों से उसका जीवन दीप्त होता था. लेकिन धीरे-धीरे शहरीकरण ने लोक को हाशिये पर धकेल कर उसे केवल लोग बना कर रख दिया. इसका दुष्परिणाम समाज भोग रहा है. हम सब जानते हैं कि लोक का भोजन अमृततुल्य रहा है, क्योंकि उसमें शुद्धता की गारंटी हुआ करती थी. और आज भी बहुत हद तक वहाँ शुद्धता बची हुई है. लेकिन इसके ठीक विपरीत अनुभव यही बताता है कि शहरी भोजन अब जहर बनता जा रहा. सांसों में घुलता विषैला धुआँ और खानपान में मिलावट शहरी जीवन का साइड इफेक्ट हो गया है. लोक में रहने वाला समाज सहज रूप से शुद्ध प्रकृति के साथ रहता है. चतुर्दिक पसरी हरियाली और नदी-तालाब की समृद्धि तन-मन दोनों को स्वस्थ बनाए रखती है.जबकि कभी प्रकृति के संग रहने वाला नागर समाज अब धीरे-धीरे प्रकृति मां का दुश्मन होता जा रहा है. सभी जीव-जन्तु प्रकृति के साथ मज़े से रहते हैं. तथाकथित विकास के नाम पर मनुष्य पेड़ काट रहा है. वह एक तरह से 'कालिदास' बना हुआ है. जिस डाल पर बैठा है, उसे ही काटे जा रहा. लोग नदी को प्रणाम तो करते हैं और तुरत प्रदूषित करने लगते हैं. कुछ तो इतने चेतना-शून्य हो जाते हैं कि उनके कारखाने का दूषित जल सीधे जीवनदायिनी नदी में समाता रहता है. सिस्टम भी इसकी अनदेखी करता है. मनुष्य सुंदर विशाल पहाड़ों को खोद रहा है.उसके दुष्परिणाम भी भोग रहा है. फिर भी वह सबक ग्रहण नहीं करता. पहले कहावत थी कि जब गीदड़ की मौत आती है तो वह शहर की ओर भागता है. अब गीदड़ की जगह मनुष्य शब्द का प्रयोग करना चाहिए. धीरे-धीरे अपने ही गांव से मनुष्य का मोह भंग हो रहा है. कोगों को गांव की खेती-बाड़ी छोड़कर शहर में आकर चौकीदारी करना मंजूर है, लेकिन गांव में रहना गवारा नहीं. गांव में गाय पालने वाला व्यक्ति शहर आकर कुत्ते पालने लगता है. यह अजीब-सा बदलाव है. जैसे गांव से गंवईपन गायब होता जा रहा है, उसी तरह साहित्य से भी लोक-विमर्श धीरे-धीरे गायब होता जा रहा है. उसकी जगह महानगरीय जीवन और उसके नाना संक्रमण केंद्र में आते जा रहे हैं. कहानी, कविताओं में, उपन्यासों में गांव की सोंधी खुशबू गायब है. हमारा सांस्कृतिक बोध भी खत्म होता जा रहा है. संस्कृति अब उपेक्षित- बहिष्कृत शब्द हो गया है. संस्कृति कोई कठिन शब्द नहीं है. जो श्रेष्ठ है, वही संस्कृति है. जिसमें परिष्कार की भावना है. जो उदात्त है. जो सकारात्मक है. जो हमें बेहतर मनुष्य बनाए रखती है, वह संस्कृति है. जो हमें संस्करवान बनाए, वह संस्कृति है. साहित्य में इस तरह के सांस्कृतिक मूल्य आने चाहिए. लेकिन दुर्भाग्य की बात यह है कि अब जो नया साहित्य रचा जा रहा है, उसमें अप-संस्कृति की बहुलता है. लिव-इन रिलेशनशिप है, समलैंगिकता है,नग्नता की खुली वकालत है. बार-बार यह भी बताया और एक हद तक समझाया भी जा रहा है कि औरत की देह उसकी अपनी है. उसे आजादी है कि वह उसका चाहे जैसा इस्तेमाल करे. नैतिकता अब आउटडेटेड हो गई है. अब जो जितना अधिक अनैतिक है, वह उतना ज़ियादा आधुनिक है. यह अजीब किस्म की उलटबासी है. अपनी सनातनी परंपरा का बोध ही खत्म हो गया है.

जैसे-जैसे हम लोक विमर्श या लोक जीवन से दूर होते जा रहे हैं, लोक ही क्या अपने अतीत से ही हमारा विश्वास उठता जा रहा है. समाज में आत्महीनता या पतन आ रहा है, और यह साहित्य में भी स्वाभाविक रूप से आ रहा है. हम प्रेमचंद की कहानियाँ पढ़ते हैं,तो उसमें लोक-विमर्श दिखाई देता है. परंपरा के प्रति लगाव भी नजर आता है. उनकी 'पूर्व संस्कार' जैसी कहानी की कहीं चर्चा नहीं होती. वेद व्यास जी का लोकप्रिय कथन है, 'प्रत्यक्षदर्शी लोकानाम सर्वदर्शी भवेन्नर:' लोक जीवन को प्रत्यक्ष रूप से देखे बगैर हम मानव जीवन को ठीक से नहीं समझ सकते. इसलिए हमारे विमर्श के केंद्र में लोक-दर्शन होना चाहिए. लेकिन भारतीय समाज धीरे-धीरे इतना आधुनिक होता जा रहा है कि उसे लोक की बात करना पिछड़ापन लगने लगा है. लोक-संस्कृति, लोक-कला, लोक-वाद्य, लोक की वेशभूषा, लोक-पर्व, लोक के उत्पाद = इन सबसे जैसे मोह भंग होता गया है. धोती-कुर्ते वाला व्यक्ति हमें दूसरे लोक से आया हुआ प्राणी लगता है. साड़ी में लिपटी हुई स्त्री हमें पिछड़ी हुई प्रतीत होती है. गाय को उपेक्षित करने वाला व्यक्ति जब विदेशी नस्ल का कोई कुत्ता पालता है, तो उसे लोग 'एनिमल लवर' कहने लगते हैं. गोया गाय एनिमल ही नहीं है. यह तथाकथित परिवर्तन उत्थान है या सामाजिक पराभव, इस पर अब बात करना बेमानी है. लोग अपनी सुंदर परंपराओं से, संस्कृतियों से और कुछ बेहतर शाश्वत मूल्यों से दूर होते चले जा रहे हैं. लगता है, यह लोक विमुखता अब बढ़ती ही जाएगी.

मुख्यमंत्री ने मुख्यमंत्री अन्न कोष योजना का किया शुभारंभ

विशेष पिछड़ी जनजाति पहाड़ी कोरवा समुदाय की गर्भवती एवं शिशुवती माताओं को मिलेगा अतिरिक्त पोषण आहार

रायपुर। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने अंबिकापुर के पीजी कॉलेज ग्राउंड में आयोजित कार्यक्रम में 536 करोड़ 14 लाख की लागत वाले 1614 विकास एवं निर्माण कार्यों का लोकार्पण और भूमिपूजन किया और कहा कि इससे सरगुजा जिले के विकास में तेजी आएगी। मुख्यमंत्री ने इस मौके पर अंबिकापुर नगर निगम क्षेत्र अधोसंरचना विकास के लिए 23.90 करोड़ रूपए दिए जाने की घोषणा की।

मुख्यमंत्री साय इस अवसर पर सरगुजा जिले में विशेष पिछड़ी जनजाति पहाड़ी कोरवा समुदाय की गर्भवती एवं शिशुवती माताओं को अतिरिक्त पोषण आहार उपलब्ध कराने के उद्देश्य से मुख्यमंत्री अन्न कोष योजना का शुभारंभ किया। जिला प्रशासन सरगुजा द्वारा यह योजना पायलट प्रोजेक्ट की शुरू की गई है। इससे पहाड़ी कोरवा समुदाय में मातृ मृत्यु दर और शिशु मृत्यु दर को कम करने में मदद मिलेगी। मुख्यमंत्री श्री साय ने जिला प्रशासन द्वारा तैयार की गई कैरियर निर्देशिका का भी विमोचन किया। मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय ने इस अवसर पर मां महामाया को नमन करते हुए जिलेवासियों को विकास कार्यों की बधाई देते हुए कहा कि अंबिकापुर छत्तीसगढ़ ही नहीं देश के सबसे सुंदर और साफ सुथरे शहरों में शामिल है। यह सब नगर निगम के अधिकारी-कर्मचारियों, हमारे सफाई मित्रों और स्वच्छता दीदियों के योगदान से हो पाया है। अंबिकापुर के नागरिकों को भी इसका श्रेय देना चाहूंगा, जिनके सहयोग से अंबिकापुर स्वच्छ और सुंदर बना हुआ है। मुख्यमंत्री ने आगे कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की गारंटी पर जनता ने विश्वास किया है। 13 दिसंबर को छत्तीसगढ़ सरकार का एक साल पूरा हो रहा है। इस एक साल के अल्पकाल में ही सरकार ने मोदी की गारंटी के बड़े बड़े कामों को पूरा करने का प्रयास किया है।

मुख्यमंत्री के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ में ई- गवर्नेंस को मिल रहा बढ़ावा

स्वागतम पोर्टल: बिना लंबी प्रक्रिया के आगंतुकों को सुगम प्रवेश

रायपुर। मंत्रालय आने वाले आगंतुकों के लिए प्रक्रिया को सरल और सुविधाजनक बनाने स्वागतम पोर्टल का शुभारंभ किया गया है। रायपुर के श्री नितिन वाले अपने निजी कार्य से सचिव से मिलने महानदी भवन मंत्रालय आए थे ।श्री वाले ने अपने अनुभव साझा करते हुए बताया कि स्वागतम पोर्टल के माध्यम से पंजीकरण, यात्रा का उद्देश्य, व्यक्तिगत जानकारी और मिलने का समय दर्ज करने पर उन्हें तुरंत पुष्टिकरण संदेश और प्रवेश पत्र प्राप्त हो गया। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने आमजनता के मंत्रालय प्रवेश के लिए स्वागतम पोर्टल का शुभारंभ कर सुविधा प्रदान किए है। स्वागतम पोर्टल के माध्यम से आमजनता का मंत्रालय के अधिकारियों से मिलना आसान हो गया है। श्री नितिन ने बताया कि प्रवेश द्वार पर उनकी पहचान सत्यापित होने के बाद उन्हें सुगमता से मंत्रालय में प्रवेश मिल गया। उन्होंने इस पोर्टल की सराहना करते हुए मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय के प्रति आभार व्यक्त किया।

श्री वाले ने कहा कि स्वागतम पोर्टल न केवल समय की बचत करता है, बल्कि आगंतुकों से संबंधित विवरणों के संधारण से सुरक्षा तंत्र को भी मजबूत बनाता है। पोर्टल पर आगंतुकों के विवरण पहले से दर्ज होने के कारण प्रशासन का काम भी सरल हुआ है और आम नागरिकों के लिए सरकार से जुड़ने का रास्ता सुगम हुआ है। स्वागतम पोर्टल शासन की पारदर्शिता और तकनीकी सुगमता का प्रतीक बनकर शासन और जनता के बीच दूरी को कम करने में सहायक सिद्ध हो रहा है। गौरतलब है कि मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने छत्तीसगढ़ में ई-गवर्नेंस को बढ़ावा देने और शासकीय काम-काज में पारदर्शिता लाने के लिए तीन पोर्टलों ई-ऑफिस प्रणाली, मुख्यमंत्री कार्यालय ऑनलाइन पोर्टल और स्वागतम पोर्टल का शुभारंभ किया है।

लोहारीडीह मामले में 23 लोगों को कोर्ट से मिली राहत से भाजपा सरकार की दुर्भावना उजागर

रायपुर। प्रदेश कांग्रेस कमेटी के वरिष्ठ प्रवक्ता सुरेंद्र वर्मा ने कहा है कि लोहारीडीह मामले में है 23 लोगों को कोर्ट से मिली राहत से सरकार के द्वारा की गई दुर्भावना पूर्वक कार्रवाई उजागर हुई है। कबीरधाम जिला कोर्ट ने अग्निकांड और हत्या के मामले में 23 आरोपियों को चार प्रकारों से मुक्त किया है। पीड़ितों के परिजनों का शुरू से ही यह दावा था कि लोहारीडीह मामले में अनेकों निर्दोष लोगों को जबरिया आरोपी बनाया गया हैं। लेकिन यह सरकार डरा धमका कर परिजनों की आवाज को दबाने में लगी रही, अब कोर्ट से मिली राहत से प्रमाणित है कि प्रशासन की कार्यवाही विद्वेषपूर्ण थी। निर्दोष लोगों पर अत्याचार किया गया। प्रदेश कांग्रेस कमेटी के वरिष्ठ प्रवक्ता सुरेंद्र वर्मा ने कहा है कि भारतीय जनता पार्टी की सरकार में आम जनता के संवैधानिक अधिकार कुचले जा रहे हैं। भाजपा सरकार में पीड़ितों को ही प्रताड़ित करने का प्रचलन चल पड़ा है।

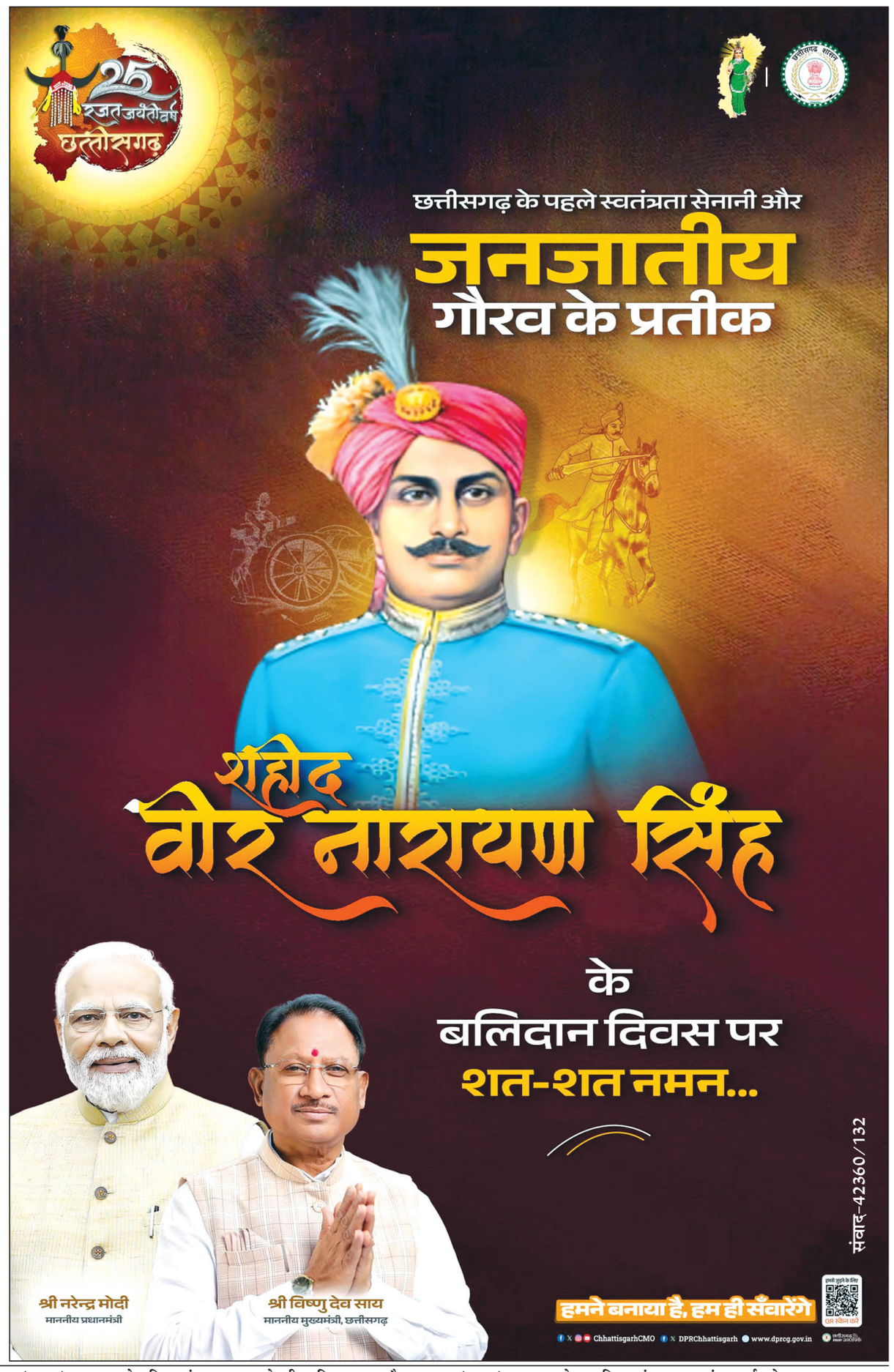

आर.एन.आई.रजि. क्र. CHHHIN/2021/80529, स्वत्वाधिकारी, मुद्रक एवं प्रकाशक- शशांक शर्मा द्वारा मिशन मीडिया प्रा. लि., प्रेस कॉम्प्लेक्स, रजबंधा मैदान, रायपुर (छ.ग.) 492001 से मुद्रित एवं 29/1110, सेवती स्मृति, आजाद चौक, रायपुर (छ.ग.) 492001 से प्रकाशित। संपादक-शशांक शर्मा, मो. 94255-20531.